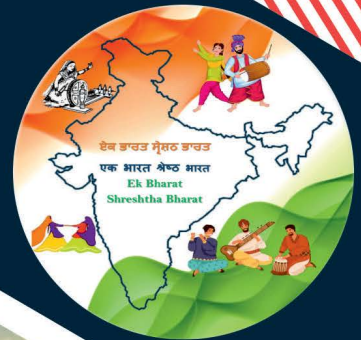


ਜਵਾਂ ਤਰੰਗ | Jawan Tarang
Volume - IX, Issue 2022-23



Jawan Tarang

DEPARTMENT OF YOUTH WELFARE
PANJAB UNIVERSITY, CHANDIGARH

Editorial Board



Prof. (Dr.) Renu Vig
Chief Patron



Dr. Rohit Kumar Sharma
Chief Editor



Dr. Navjot Kaur
Editor (Pictorial/Design)



Dr. Neena Seth Pajni
Editor (English)



Dr. Karamjeet Kaur
Editor (Punjabi)



Dr. Rohtash
Editor (Hindi)



Dr. Manbir Kaur Dhaliwal
Staff Editor (Pictorial/Design)



Ms. Gurbinder Kaur
Staff Editor (Pictorial/Design)



Dr. Saravjeet Kaur
Staff Editor (Hindi)



Ms. Mandeep Kaur
Staff Editor (Hindi)



Dr. Ravinder Kaur
Staff Editor (Punjabi)



Dr. Hirdepal Singh
Staff Editor (Punjabi)



Dr. Mini Sharma
Staff Editor (English)



Dr. Vijaya Singh
Staff Editor (English)

Panjab University Anthem

*Tamso ma jyotirgamaya
Tamso ma jyotirgamaya
Tamso ma jyotirgamaya
Tamso ma jyotirgamaya
Panjab vishaw vidyalaya
Teri Shaan-o-shaiqat sada rahe
Mann mein tera aadar maan
Aur mohabbat sada rahe
Panjab vishaw vidyalaya
Teri Shaan-o-shaiqat sada rahe
Tu hai apna bhavishya vidhata
Pankh bina parwaaz sikhata
Jeevan pustak roz padha kar
Sahi galat ki samajh badhata
Jeevan pustak roz padha kar
Sahi galat ki samajh badhata
Teri jai ka shankh bajayein
Roshan tare ban jaayein
Vakhari teri shohrat
Teri shohrat sada sada rahe
Panjab vishaw vidyalaya
Teri Shaan-o-shaiqat sada rahe
Panjab vishaw vidyalaya
Teri Shaan-o-shaiqat sada rahe
Tamso ma jyotirgamaya
Tamso ma jyotirgamaya*

तमसो मा ज्योतिर्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
पंजाब विश्वविद्यालय
तेरी शान-ओ-शौकत सदा रहे
मन में तेरा आदर मान
और मोहब्बत सदा रहे
पंजाब विश्वविद्यालय
तेरी शान-ओ-शौकत सदा रहे
तू है अपना भविष्य विधाता
पंख बिना परवाज़ सिखाता
जीवन पुस्तक रोज़ पढ़ा कर
सही गलत की समझ बढ़ाता
जीवन पुस्तक रोज़ पढ़ा कर
सही गलत की समझ बढ़ाता
तेरी जय का शंख बजायें
रौशन तारे बन जायें
वखरी तेरी शोहरत
तेरी शोहरत सदा सदा रहे
पंजाब विश्वविद्यालय
तेरी शान-ओ-शौकत सदा रहे
पंजाब विश्वविद्यालय
तेरी शान-ओ-शौकत सदा रहे
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः



PROF. (DR.) RENU VIG
VICE CHANCELLOR
Panjab University, Chandigarh



The emblem of Panjab University shows a rising sun with the motto “Tamsō Mā Jyotīrgmay”- from darkness into light ! True to this spirit, the ninth issue of “Jawan Tarang” brings to light the hidden writing talent of our young writers.

The objective of the Department of Youth Welfare is to provide the right direction to the unfathomable zeal and bubbling enthusiasm of the youth and their power of body and mind. Every year thousands of students join youth welfare activities and achieve recognition by developing their personality. The Department of Youth Welfare is working proactively to hone the creative, literary, social, emotional and cultural aspects of the personality of students while preserving a regard for heritage and tradition. Events such as Youth and Heritage Festivals, Youth Clubs and Leadership Training Camps are part of the University Calendar to keep their spirits high while enabling them to recognize their potential.

I congratulate the Department of Youth Welfare on the successful conduct of Youth & Heritage Festivals and Youth Training Camps. I congratulate the department for maintaining the record of activities in its colourful annual magazine. The efforts of the Department of Youth Welfare are to be lauded for winning the All-Over Championship Trophy for the session 2022-23 in Panjab State Inter-University Youth Festival organized by Directorate of Youth Services, Punjab Govt. at Punjabi University, Patiala from December 10 to 12, 2022.

This annual magazine of Youth Welfare Department is one such creative endeavour that showcases the literary brilliance of budding writers. My best wishes to all the members of the Editorial Board and good luck for all future ventures of the Youth Welfare Department.

(Renu Vig)



DR. ROHIT KUMAR SHARMA
DIRECTOR YOUTH WELFARE
Panjab University, Chandigarh

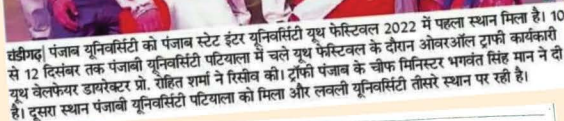
It is indeed both a matter of pleasure as well as pride that Department of Youth Welfare, Panjab University is ready with publishing the 9th edition of its annual magazine “Jawan Tarang” for the session 2022-23. The contents of this magazine have been mainly contributed by students of affiliated colleges, constituent colleges and departments of the University as part of their participation in literary items of various events organized under the patronage of the department.

This magazine is the best platform for the students to express their thoughts, ideas, emotions and feelings. It is surely going to unravel the most precious moments of the session 2022-23. In the originality of its conception, excellence of its writing, visual presentation and commitment to accuracy and editorial balance, the magazine reflects the values and quality of the department itself. I am sure this will help in achieving the target of churning out the latent writing talent of the students, which bears immense potentiality of sharpening their communication skills as a part of their overall personality development.

The publication of this magazine will not only help to strengthen the identity of the student community but will also ensure adequate exposure in creative writing by moulding their attitude. It will help them to achieve success in every sphere of life. It gives me immense pleasure to ensure that this magazine has successfully accomplished the objectives of the Department of Youth Welfare of playing a pivotal role in channelizing the creativity of the youth in the right directions.

I extend my heartiest congratulations to all the students who have been part of various activities of Department of Youth Welfare in the year 2022-23 with the uniting motto ‘Ek Bharat Shreshtha Bharat’. My sincere gratitude and thanks to all the editors, staff editors, contributing authors and staff of the department for their painstaking efforts in bringing out this edition of “Jawan Tarang”.


(Rohit Kumar Sharma)



The overall winner trophy to

• पीयू के नाम रही पंजाब स्टेट इंटर यूनिवर्सिटी यूथ फेस्टिवल की ट्रॉफी...



Department of Youth Welfare organised its annual prize distribution function at Mahatma Hansraj Hall. Prof Renu Vig, Vice-Chancellor, was the chief guest. Students who brought laurels to the university by winning prizes in various youth festivals were facilitated. The staff editors of the annual magazine, "Jawan Tarang", were also felicitated by Professor Vig.

मुकेरियां 10 नवंबर (रामगढ़िया): स्व. प्रेमनंद महाविद्यालय मुकेरिया में आज से पंज. विश्वविद्यालय के इं. जॉनल यूथ फैस्टिवल 2020-23 का रंगारंग कार्यक्रम आरंभ हुआ। इसकी आज से 13 नवंबर तक चार दिवसीय कार्यक्रमों के रूप में मनाया जाएगा।



एस.पी.एन. कालेज में यूथ फैस्टिवल की शुरुआत करवाते हुए उप-कुलपति प्रो. राज कुमार, बा. समीर शर्मा, प्रो. राज कुमार व कालेज प्रबंधक कमेट्री के सदस्य। व (दाएँ) यूथ फैस्टीवल की शुरुवात मौके लोक नाच पेश करते हुए विद्यार्थी।

से आर हुए गामान्य सदस्य का स्थान को ओर से पुष्पगुप्त के साथ कल्लवत किया। कल्लेज प्रबंधन समिति के प्रधान राजन माकड़, वरिष्ठ उप प्रधान अजीत नारंग, उप प्रधान सतीश अग्रवाल, जनरल सेक्रेटरी विनोद कुमार, सेक्रेटरी संजीव आनंद एवं अन्य प्रबंधन समिति के सदस्य जंगी लाल महाजन, महेंद्र रमेश दास, सत्यदत्त सुजॉति सिंह, वरविंदर अग्रवाल और अन्य कुमार अग्रवाल सपर्याय और भव्य इंटर जेनल यूथ फैसटिवल के उद्घाटन सत्र में मौजूद थे। कल्लेज प्रबंधन समिति के सेक्रेटरी संजीव

आनंद ने इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्कल्लुप्ति प्रो. राजकुमार का स्वागत किया और कॉलेज के स्टाफिंग इतिहास को विस्तृत जानकारी दी और कॉलेज को इस भव्य समारोह के आयोजक का दायित्व सौंपने के लिए भी उत्कल्लुप्ति का आभार व्यक्त किया।

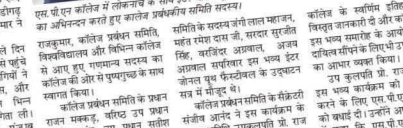
आ. कुलपति प्रो. राजकुमार ने इस भव्य कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए एस.पी.एन कॉलेज को बधाई दी और प्रशंसा की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि एसपीएन कॉलेज लेसियनरगुरु के कोने में स्थित होता है और भी विश्वविद्यालय का विकास अंग है।

जिसने पंजाब विश्वविद्यालय को कई विभिन्न उपलब्धियाँ दिलवाई हैं। कॉलेज प्रबंधन समिति के प्रधान राजन मक्कड़ ने 190 कॉलेज के प्रतिभागी प्रिंसिपल्स, अध्यक्षकाम, प्रतिभागी और दार्कों का इन इति जोनल यूथ के निव्वल में आने के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया। ओ में यूथ वेलफेयर डेवल्पमेंट के डायरेक्टर डॉ. रोहित शर्मा एवं पूर्व डायरेक्टर डॉ. निर्मल जोड़ा के साथ साथ विगत इति जोनल यूथ फेस्टिवल करना चुके ए.एस कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. आर.एस झाँसी की भी सम्मानित किया।

FRI, 11 NOVEMBER 2022
EDITION: HOSHIARPUR KESARI, PAGE NO. 4

प्र.पी.एन. कॉलेज में लोकनाच के साथ हुआ इंटर जैनल यूथ फेस्टिवल का जना-
 EDITION: HOSHANG
 होशियारपुर के एक छोटे से विमानक्षेत्र पर
 हुआ हुआ भी विश्वविद्यालय
 होशियारपुर में होशियारपुर
 होशियारपुर में होशियारपुर
 होशियारपुर में होशियारपुर

■ पंजाब शिक्षा विभाग के उपकुलपति प्रो. राज कुमार ने मुख्य अतिथि के तौर पर की शिरकत



होशियारपुर के एक छात्र से मिल रहा होता हुआ भी विश्वविद्यालय वृक्षों के विशेष अंग ही है जिसमें वृक्षों विश्वविद्यालय को कई विश्वविद्यालयों में फैलाया है।

उन्होंने कहा कि आप इसे प्रेरणा से छात्रों को वृक्ष फैलाने के प्रतिभागी होने के लिए प्रेरित ताकि उनके मनोबल में वृद्धि कोशिल विकास हो। इसके साथ अपने अपने कॉलेज में कोर्स के साथ-साथ ज्यादा से कोशिल विकास के पाठ्यक्रम आर्थिक ताकि छात्र जल्दी गान कर सकें।

काँलेज प्रबंधन समिति के राजन मन्कोड ने 190 काँलेज हुए प्रिंसोपल, अध्यापक प्रतीभाणी आदि दर्शकों का जोनल यूथ फेस्टीवल में लिए धन्यवाद किया। इस वेलफेयर डेवेलपमेंट के डॉ. रोहित शर्मा एवं पूर्व डॉ. निरमल जोशी, विगम यूथ फेस्टीवल करके काँलेज के प्रिमियल डॉ. प्रो. डी.पी. सम्मानित

यूथ वेलफेयर डिपार्टमेंट
ने कंपीटिशन के
विजेता किए सम्मानित

वंशीप्रसाद) पंजाब यूनिवर्सिटी के
 डिपार्टमेंट ऑफ यूथ
 वेलफेयर की ओर से एनुअल
 प्राइज डिस्टीब्यूशन फंक्शन
 महामा हंसराज हॉल में
 कराया गया, जिसमें वाइस
 चांसलर प्रो. रेनु विग ने इंटर
 फेसिटिवल, नेशनल यूथ
 फेसिटिवल, ऑल इंडिया
 ओपन नेशनल यूथ
 फेसिटिवल, नॉर्थ जोन इंटर
 यूनिवर्सिटी यूथ फेसिटिवल,
 पंजाब स्टेट इंटर यूनिवर्सिटी
 यूथ फेसिटिवल आदि के
 विजेताओं को सम्मानित
 किया। इसके साथ ही एनुअल
 मैगजीन जवां तरंग भी रिलीज
 की गई।

गोयू बनी स्टेट इंटर यूनिवर्सिटी यूथ फेस्टिवल की ओवरऑल चैंपियन

पंजाबी यूनिवर्सिटी में आयोजित **यूथ फेस्टिवल** में सीएम भगवंत मान ने किया सम्मानित



कटक में आयोजित विजय मर्चेट ट्राफी में जीत दर्ज करने वाली चंडीगढ़ की टीम • स्थल:

हटाव नुसारिणीय वय फेरिअवय न ओवरआउट फेरिअवय नै जावय नुसारिणीय ती ठीक केल्ले मुसुमने भासत वयने हेर उद्देशी ह्या फेरिअवय केंद्राकडे।

आचार्य सहायदास, सोनीपट्ट: पंजाब विधानसभेच्या रिप्रेजेंट हटाव नुसारिणीय वय फेरिअवय-2022 की धियेन वय नै ह्या ठीक नै। पणू की ती केंद्र फेरिअवय नुसारिणीय नें आयोजित वय फेरिअवय नें ओवरआउट फेरिअवय के मुसुमने सवाय जावय नै। पंजाब के ट्रायबलने भासत वयने, शिशू मंत्री जाय हेर, पंजाब नुसारिणीय के कुलपति शिशू वयने गम्पान-तला थो ह्या फेरिअवय पर उरिअवय थो। हाकचे नुसारिणीय ह्या वय पर 10 से

चंडीगढ़ ने मणिपुर को पारी और 130 रन से हराया

जगमग सावरलदा, चंडीगढ़ : एकदम में खेली जाने वाली रिजिल मैट्ट ट्राई (एड 16) के एक खेल में चंडीगढ़ ने मणिपुर पर एक पारी और 130 रन की शानदार जीत दर्ज की। इस खेल के सारा विवरण देखनी में एह हार, फ्लय ऑन सवाल आनी पारी जलित करी 111 रन। मणिपुर के 90 रन के जगमग में चंडीगढ़ ने नैकत में मुकाम पर 334 रन बनाकर 224 रन की बहाल जाई की।

फोरे जलकट्ट 21 रन की बेहतरीन पारी खेली जलकट्ट रिजिल मैट्ट 7 रन और नाबाद फलकट्ट रिजिल मैट्ट 54 रन खेली। जगमग में, गमनीरिजिल (3/15) और यरददा नकत (3/19) की फलकट्ट मणिपुर के सगम मणिपुर में आनी बल्लरी पारी में जलकट्ट फोरे और 114 रन की बहाल में रन (24/2) रन के रिजिल मणिपुर रन मणिपुर। चंडीगढ़ का अगला मुकामल 16 रिजिलर से डेल के खेल करी।

<p>प्रवेकृत रेप्रेकटर शर्मा लेने । डा. विमल</p>	<p>इहेत सत्तरव्या नं 159 गदी पर 21 संव १७८०</p>
---	---

में पंजाब की 13 यूनिवर्सिटी के
1200 से अधिक विद्यार्थियों ने
विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा
लिखा। पंजाब यूनिवर्सिटी ने 39

प्रतियोगिताओं में हिस्सा
जिसमें म्यूजिक, हेरिटेज
डांस सहित विभिन्न प्रतियो-
गिता शामिल थी।

[illegible]

लिया, और गिताएं

जगत को बुझाइ आगज
टाइम्स
RATTU BROTHERS
News Agency
Mukerian
86998 97070
88473 57029

लोकनाच के साथ हुआ
फेस्टिवल का आगाज़

नपति प्रो. राज कुमार रहे मुख्य अतिथि

ANNUAL REPORT

Department of Youth Welfare, Panjab University, Chandigarh

The Department of Youth Welfare, being an important part of the University and working for the overall development of the students, was set up in 1958 under the Directorship of Dr. K. C. Anand as its Founder Director and at present Dr. Rohit Kumar Sharma is heading the department as Director with an objective of nurturing the young minds for the overall development of their personality. The core aims and objectives of the department are:

- To channelize creative energy and enthusiasm of the young students.
- To provide students with an atmosphere of creativity and group participations that their latent potentialities and talent find an outlet in joyous and fruitful ways.
- To inculcate feelings of patriotism and nationalism among participating students and to acquaint them with their rich cultural heritage and human values.
- To create a sense of belonging and commitment to the country and providing youth with a meaningful direction for the realization of national goals.
- To inculcate a spirit of adventure and positive thinking and respect for higher values, human goodness and noble behavior.
- To provide opportunities to youth for self-development and character building and also for imbibing quality of leadership, mutual tolerance and fellow feeling.
- To preserve and promote rich folklore and traditional culture through display of diverse art and craft forms, thereby enriching culture and social life of the region.

Keeping in view its objectives, the department organizes chain of activities throughout the year such as Youth Leadership Training, Hiking Trekking & Rock-climbing Camps, Panjab University Zonal Youth & Heritage

Festivals, Panjab University Inter-Zonal Youth & Heritage Festivals. The Department also makes the efforts for the participation of the University students in Inter-University Youth Festivals at State, North and National level. The Department is successfully running Student Holiday Homes (Youth Hostels) at Chandigarh and Dalhousie. As the department encourages the young students to come forward and prove themselves by participating in various creative activities in the same way the active participation of the students in these activities encourage the department to provide them with more and more opportunities for their overall development.

The year 2022-23 has been an extremely fruitful for the department as it has made great strides with significant achievements at various levels. Following are some of the glimpses of the glorious achievements of the department for the year 2022-23:

ALL INDIA INTER-UNIVERSITY NATIONAL YOUTH FESTIVAL 2022-23

The Panjab University contingent participated in All India National Inter-University Youth Festival at Jain University, Bangalore from February 24 to 28, 2023. About 116 universities from all over India participated in this Festival which was organized by the Association of Indian Universities, New Delhi. **Panjab University bagged 2 first prizes, 2 second prizes and 1 third prize out of total 7 events of this festival. The details of the positions secured in this event are given below:**

First Position

Mimicry: Ms. Muskan Karwal: Arya College, Ludhiana

Cartooning: Mr. Harmanjot Singh Gill: Govt. College of Art, Sector- 10, Chandigarh

Second Position

On the Spot Painting: Mr. Ankur: Govt. College of Art, Sector- 10, Chandigarh

Rangoli: Ms. Neelam Kumari: Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana

Third Position

Classical Instrumental (Non-Percussion): Mr. Gurdeep Singh: Panjab University Campus, Chandigarh

ALL INDIA OPEN NATIONAL YOUTH FESTIVAL- 2022-23

Approximately one hundred (100) Students/ Team Managers from Panjab University Campus and affiliated colleges represented Punjab State and Chandigarh UT in dance events and as volunteer during 26th All India Open National Youth Festival which was organized by the Government of India, Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of Karnataka, Department of Youth Empowerment & Sports, Nehru Yuva Kendra Sangathan and National Service Scheme at Hubballi, Dharwad (Karnataka) from January 12 to 16, 2023.

18TH INTERNATIONAL YOUTH FESTIVAL (GHUMAR)- 2022-23

During the 18th International Youth Festival (Ghumar) organized by University of Rajasthan, Jaipur from 05-04-2023 to 06-04-2023, **Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib secured Overall Championship Trophy 1st Runners up.**

NORTH ZONE INTER-UNIVERSITY YOUTH FESTIVAL 2022-23

During the 36th North Zone Inter-University Youth Festival organized by Association of Indian Universities, New Delhi at University of Jammu, Jammu from 31-01-2023 to 04-02-2023, **Panjab University won Overall Championship Trophy 2nd Runners Up, Championship Trophy 1st Runners Up in Literary Events**

and Championship Trophy 2nd Runners Up in Dance Events. Panjab University bagged 1 first prize, 2 second prizes, 7 third prizes, 1 fourth prize and 4 fifth prizes out of total 26 events of this festival. The details of the positions secured in this event are given below:

First Position

Quiz: Mr. Eklavya A Grover, Mr. Dheeraj Sharma, Ms. Kashish Arora: Sri Aurobindo College of Commerce & Management, Ludhiana

Second Position

Classical Instrumental (Non-Percussion): Mr. Gurdeep Singh: Panjab University Campus, Chandigarh

Mimicry: Ms. Muskan Karwal: Arya College, Ludhiana

Third Position

Cultural Procession: The entire contingent of Panjab University, Chandigarh

Group Song (Indian): Ms. Taranjeet Kaur Lamba, Ms. Jaspreet Kaur, Ms. Preeti Sidhu, Ms. Radhika Malhotra, Ms. Sharanpreet Kaur, Ms. Jasleen Kaur: Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana

Folk/Tribal Dance: Ms. Siwani, Ms. Shveta, Ms. Sangeeta, Ms. Komal, Ms. Himani, Ms. Aarti, Ms. Nitya Sharma, Ms. Hiteshna Samal, Ms. Drishti Azad, Ms. Saloni: P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh

Rangoli: Ms. Neelam Kumari: Ramgarhia Girls College, Ludhiana

On the Spot Painting: Mr. Ankur: Govt. College of Art, Sec. 10, Chandigarh

Cartooning: Mr. Harmanjot Singh Gill: Govt. College of Art, Sec. 10, Chandigarh

Debate: Mr. Nilesh Seth: Panjab University Campus, Chandigarh

Ms. Sejal Sakia: B. A. M. Khalsa College, Garhshankar

Forth Positions

Poster Making: Mr. Abhishek Chandoria: Govt. College of Art, Sec. 10, Chandigarh

Fifth Positions

Light Vocal (Gazal): Mr. Neeraj Sanyal: S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur

Classical Vocal (Solo): Ms. Jasleen Kaur: M. T. S. Memorial College for Women, Ludhiana

One Act Play: Mr. Shubham Paswan, Ms. Jaspreet Kaur, Mr. Rajkaran Singh, Mr. Pawan Sharma, Ms. Sanjana Upreti, Mr. Utsav Katoch, Ms. Priti Kumari, Mr. Chirag Jindal, Ms. Muskan Dhiman: P. G. Govt. College, Sec. 11, Chandigarh

Skit: Mr. Shubham Paswan, Ms. Jaspreet Kaur, Mr. Rajkaran Singh, Mr. Pawan Sharma, Ms. Sanjana Upreti, Mr. Utsav Katoch: P. G. Govt. College, Sec. 11, Chandigarh

PUNJAB STATE INTER-UNIVERSITY YOUTH FESTIVAL 2022-23

Panjab University won first position in the Overall Championship Trophy of the Punjab State Inter-University Youth Festival organized by Directorate of Youth Services, Punjab Govt. at Punjabi University, Patiala from December 10 to 12, 2022. Panjab University won 12 First Prizes, 7 Second Prizes and 7 third prizes out of total 39 events. It is pertinent to note here that this is first time that Panjab University has bagged Overall Championship Trophy in the history of this event. The details of the positions secured in this event are given below:

First Prize

Folk Song: Mr. Paras Kamboj: G. G. D. S. D. College, Sector 32, Chandigarh

Vaar Singing: Mr. Mehtab Singh, Mr. Rachhpal Singh, Mr. Sukhwinder Singh: Baba Kundan Singh College, Muhar

Ladies Traditional Songs: Ms. Jashanpreet Kaur, Ms. Navjot Kaur, Ms. Simran, Ms. Ramanpreet Kaur: Govt. College for Girls, Sec. 42, Chandigarh

Bhand: Mr. Iqbal Singh, Mr. Sahil Sharma: S. G. S. Khalsa College, Mahilpur

Crochet Work: Ms. Kalyani Verma: M. T. S. Memorial College for Women, Ludhiana

Pakhi Designing: Ms. Priyanka Rajput: Arya College, Ludhiana

GuddianPatole Making: Ms. Roshni: Dashmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib

Pranda Making: Ms. Seema Rani: Dashmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib

Chhikku Making: Ms. Kirandeep: D. A. V. College of Education, Hoshiarpur

On the Spot Painting: Mr. Ankur: Govt. College of Art, Sec. 10, Chandigarh

Cartooning: Mr. Harmanjot Singh Gill: Govt. College of Art, Sec. 10, Chandigarh

Still Life Drawing: Mr. Gurpreet Singh: Govt. College of Art, Sec. 10, Chandigarh

Second Prize

Kavishari: Mr. Mehtab Singh, Mr. Rachhpal Singh, Mr. Sukhwinder Singh: Baba Kundan Singh College, Muhar

Kali Singing: Mr. Jaspal Das, Mr. Sahil Khan, Mr. Gurpreet Singh: A. S. College, Khanna

Eennu Making: Ms. Ramanjot Kaur: A. S. College, Khanna

Tokri Making: Mr. Sikander Singh: Govt. College, Sri Mukatsar Sahib

Collage Making: Ms. Asmita Chhibbar: M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh

Ravayti Pehraava Prdarshani: Ms. Anushka Bajaj: G. G. D. S. D. College, Sec. 32, Chandigarh

Gidha: Ms. Jaismeen Kaur, Ms. Simrandeep Kaur, Ms. Gagandeep Kaur, Ms. Mitansha Lohran, Ms. Manjot Kaur, Ms. Kanchan, Ms. Jasleen Kaur, Ms. Parneet Kaur, Ms. Tamanna Dadwal, Ms. Rubaldeep Kaur, Ms. Simranjeet Kaur: P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh

Third Prize

Classical Instrumental (Percussion):

Mr. Jujhar Singh: Khalsa College, Garhdiwala

Classical Instrumental (Non-Percussion):

Mr. Gurdeep Singh: Panjab University Campus, Chandigarh

Folk Orchestra: Mr. Ritish Kaila, Mr. Paras Kamboj, Ms. Jiya Sharma, Ms. Mallika Mehta, Mr. Karanpal Singh, Ms. Mehakpreet Kaur, Mr. Rajan Kumar, Ms. Khushpreet Kaur, Mr. Anmolpreet Singh, Ms. Anureet Pal Kaur, Mr. Darshan Singh, Mr. Karandeep Singh: G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh

RassaVattna: Mr. Jatin Sharma: Shree Atam Vallabh Jain College, Ludhiana

Mehndi Designing: Ms. Manisha Rani: S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur

Debate: Ms. Sejal Sakia: B. A. M. Khalsa College, Gurusar Sadhar

Mr. Nilesh Seth: Panjab University Campus, Chandigarh

63RD PANJAB UNIVERSITY INTER-ZONAL YOUTH AND HERITAGE FESTIVAL 2022-23

The 63rd Panjab University Inter-Zonal Youth and Heritage Festival was held at Swami Premanand Mahavidyalaya, Mukerian from November 10 to 13, 2023. Principal Dr. Sameer Sharma was the Convener of the festival and Dr. Pushpinder Kumari was the Organizing Secretary. Nearly 2000 winners from the Panjab University Zonal Youth and Heritage Festivals participated in this festival. **Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana won the Panjab University Vice Chancellor's Over All Trophy. The 1st and the 2nd Runner up for Panjab University Vice Chancellor's Trophy were Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib and P. G. Govt. College for Girls, Sector- 11, Chandigarh respectively for the session 2022-23.**

Plantation Drive

The Department of Youth Welfare in collaboration with Research & Development Cell (RDC), Panjab University, Chandigarh and Dean Students Welfare, Panjab University, Chandigarh conducted a Plantation Drive. During this event, different types of saplings were planted around the building of Department of Youth Welfare by Dr. Rohit Kumar Sharma (Director) and Dr. Tejinder Singh (Assistant Director), Dr. Sucha Singh and Dr. Richa Sharma, Cultural Coordinators along with the staff members and students of the Department on September 23, 2022. Mr. Chander Shekhar, IAS, Haryana Cadre who is also an alumnus of Panjab University was Guest of Honour on the occasion. The horticulture department of Panjab University also participated in this plantation drive.

Swachh Bharat Abhiyan

The Department of Youth Welfare in collaboration with Research & Development Cell and Department of Indian Theatre organized a cleanliness drive under Swachh Bharat Abhiyan. The cleanliness drive was conducted around the building of Department of Youth Welfare by the staff members of the department and Indian Theatre students/staff on September 17, 2022.

Cultural Programmes

The Department of Youth Welfare in collaboration with Department of Indian Theatre and Department of Alumni Relations organized following cultural programmes during the session 2022-23:

- An online musical event named "Punjab Da Dhadi Lok Sangeet" was organized on August 27, 2022 in which Lok Dhadi. Mr. Navjot Singh enthralled the audience with his melodious performance.
- On August 28, 2022 another musical event on "Folk Singing of Punjab" was organized thorough online mode in which Mr. Bhupinder

Babbal, Eminent Folk Singer of Punjab kept the audience spellbound through his folk singing. The aim of the event was to spread awareness regarding the various genres of Folk songs of Punjab. Mr. Bhupinder Babbal in his interaction with the participants made them aware of the various aspects, styles and techniques of folk singing.

Residential Summer School Camp

Panjab University, Chandigarh in collaboration with Faculty of Law, University of Delhi and Maharashtra National Law University, Nagpur organized the First edition of Full time Residential Summer School Camp from July 15-21, 2022. The Department of Youth welfare, Panjab University, Chandigarh served as venue for the same. The objectives of the programme were to inculcate the habit of analytical understanding of working of values and ethics in society and to examine the relationship between society and individual, to cite a few. The summer school programme was conducted in the form of different modules on personality and professional Growth, Research Methods and Skills, Public Speaking and Communication skills, Art and Adventure of Leadership, Strengthening Stakeholder (Youth) Engagement in Achieving SDGs, Cyber- Crime and Cyber-Security, Productivity and Time Management, Academic Writing and Building Personal Resilience through Stress and Anxiety Management.

G20 Youth International Seminar

The Department of Youth Welfare, Panjab University, Chandigarh in collaboration with Ministry of Youth Affairs and Sports as well as other departments of Panjab University organized G20 Youth International Seminar on the topics "Future of Work: Industry 4.0, Innovations & 21st century skills and Shared Future: Youth in democracy and Governance on March 03-04, 2023. Other events titled "G20 Youth Fortnight" and "Y20" was organized as the runner up activities for the G20 Programme.

The programme witnessed plethora of cultural activities including Gidha, Bhangra, Skit, Nukkad Natak, Naati (Folk Dance of Himachal) and Classical Instrumental (Non-Percussion) performed by student artists of different colleges from Chandigarh and Punjab under the patronage of Department of Youth Welfare, Panjab University, Chandigarh.

Annual magazine "Jawan Tarang"

Yet another creative aspect of department is in the form of its Annual Magazine "Jawan Tarang" which was first published and released in the year 2013 with a focus on Youth Activities.

The 9th edition of the "Jawan Tarang" is in your hands with the efforts of its Editors Dr. Navjot Kaur, Principal, Sri Guru Gobind Singh College, Sector- 26, Chandigarh (Pictorial/Design), Dr. Neena Seth Pajni, Principal, Gobindgarh Public College, Alour, Khanna (English), Dr. Karamjeet Kaur, Principal, Dashmesh Girls College, Chak Alla Baksh, Mukerian, Hoshiarpur (Punjabi), Dr. Rohtash, Principal, S. B. H. S. Memorial Khalsa College of Education, Mahilpur (Hindi) and its Staff Editors Dr. Manbir Kaur Dhaliwal & Ms. Gurbinder Kaur (Pictorial/Design), Dr. Saravjeet Kaur, & Ms. Mandeep Kaur (Hindi), Dr. Ravinder Kaur & Dr. Hirdepal Singh (Punjabi), Dr. Mini Sharma & Dr. Vijaya Singh (English).

This magazine is a wonderful platform for providing ample opportunities to young minds to express their emotions, opinion, dreams and aspirations in a creative way. The contributions for the magazine are in the form of creative writings from the students of departments, affiliated and constituent colleges of the Panjab University along with the record of the various youth activities of the department during the session.

Dr. Tejinder Gill
Assistant Director
Department of Youth Welfare
Panjab University, Chandigarh

Editorial



The phrase “*Jawan Tarang*” aptly portrays the brimful energy that youth carries with itself. It immediately directs our attention towards a space in nature that all of us have come across at one point of time in our life or the other, a space full of energy, life, light and positivity, a moment when nature is seen at its best and bountiful mood. India’s leadership and ideology in G20 has brought to the forefront the channelization of Youth through Y20. Our nation wants young people to lead, as they are more aware and exposed to the latest problems and resolutions about different fields that concern this generation.

Jawan Tarang, the annual magazine of the Department of Youth Welfare stands witness to and records all the efforts executed in this direction by Panjab University; many a times, even going beyond the usual affairs of the University Calendar – Youth and Heritage Festivals, Youth Training Camps, Youth Awareness Programmes, Youth Leadership Camps, etc. It realises the need not only to stretch the awareness of young minds to the level of national and global concerns but also to stimulate the creative passion that often lies dormant in the hearts of the youth. The channelization of young energy and recording their achievements have, over the years, inspired more and more young minds. Considering the themes covered in this issue, ranging from Environment Sustainability, Culture and Heritage Preservation, Women Empowerment, Wildlife Preservation, Water Conservation etc., this magazine crosses over its own mandate of just documenting these texts and sets out to prepare the youth for a futuristic journey.

I congratulate the Department of Youth Welfare for bringing out the present issue of this influential magazine. This initiative successfully amalgamates the efforts to create heritage and cultural rootedness among the youth and promote progressive thinking at the same time, thus paving the way for the National Education Policy.

Dr. Navjot Kaur

Editor (Pictorial/Design)

Principal, SGGS College, Sector- 26, Chandigarh

Staff Editors (Pictorial/Design Section) : Dr. Manbir Kaur Dhaliwal & Ms. Gurbinder Kaur

63RD PANJAB UNIVERSITY INTER-ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Swami Premanand Mahavidyalaya, Mukerian

November 10-13, 2022

VICE CHANCELLOR'S TROPHY

Ramgarhia Girls College,

Miller Ganj, Ludhiana



Principal/Convener
Dr. Sameer Sharma



Organizing Secretary
Dr. Pushpinder Kumari



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Chandigarh- A

D. A. V. College, Sector- 10, Chandigarh

November 01-04, 2022

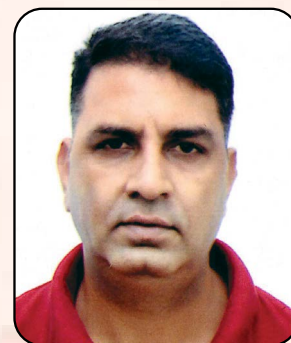
ZONAL TROPHY

G.G.D.S.D. College

Sector- 32, Chandigarh



*Principal/Convener
Dr. Pawan Kumar*



*Organizing Secretary
Dr. Amanendra Mann*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Chandigarh- B

G.G.S. College for Women, Sector- 26, Chandigarh

October 17 & 19-21, 2022

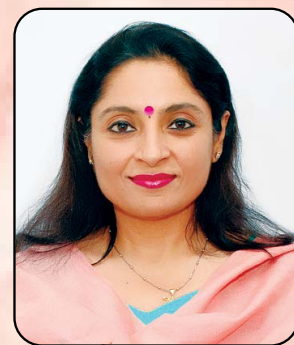
ZONAL TROPHY

P.G.Govt. College for Girls

Sector- 11, Chandigarh



*Principal/Convener
Dr. Jatinder Kaur*



*Organizing Secretary
Ms. Reena Parti*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Ludhiana- A

*Mata Ganga Khalsa College, Manji Sahib,
Kottan, Ludhiana*

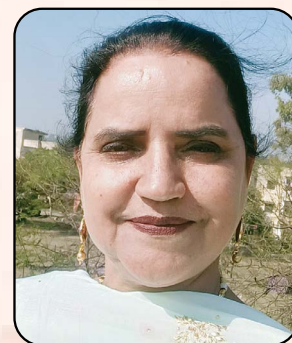
September 30 to October 03, 2022

ZONAL TROPHY

A.S. College, Khanna



Principal/Convener
Dr. Kuldeep Kaur Dhaliwal



Organizing Secretary
Mrs. Baljit Kaur



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Ludhiana-B

Ramgarhia Girls College, Millar Ganj, Ludhiana



*Principal/Convener
Dr. Rajeshwarpal Kaur*

October 15 to 19, 2022

ZONAL TROPHY

**Ramgarhia Girls College,
Millar Ganj, Ludhiana**



*Organizing Secretary
Dr. Tajinder Kaur*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Hoshiarpur- A

Baba Balraj Constituent College, Balachaur

October 14-17, 2022

ZONAL TROPHY

**S. G. G. S. Khalsa College,
Mahilpur**



*Principal/Convener
Dr. Sunil Khosla*



*Organizing Secretary
Ms. Ruby*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Hoshiarpur- B

*Dasmesh Girls College, Chak Alla Baksh,
Mukerian*

October 16 -19, 2022

ZONAL TROPHY

Dasmesh Girls College

Chak Alla Baksh, Mukerian



*Principal/Convener
Dr. Karamjeet Kaur*



*Organizing Secretary
Dr. Sarita Rana*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Moga Ferozepur- A

Baba Kundan Singh College, Muhar

October 07 - 10, 2022

ZONAL TROPHY

**Baba Kundan Singh College,
Muhar**



*Principal/Convener
Dr. Surjit Singh*



*Organizing Secretary
Mr. Maninder Pal Sidhu*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Moga Ferozepur- B

Dev Samaj College for Women, Ferozepur City

October 18-20, 2022

ZONAL TROPHY

**Dev Samaj College for Women
Ferozepur City**



*Principal/Convener
Dr. Sangeeta*



*Organizing Secretary
Ms. Palwinder Kaur*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

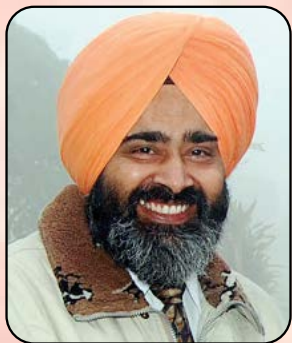
Zone: Sri Muktsar Sahib

Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib

October 19-22, 2022

ZONAL TROPHY

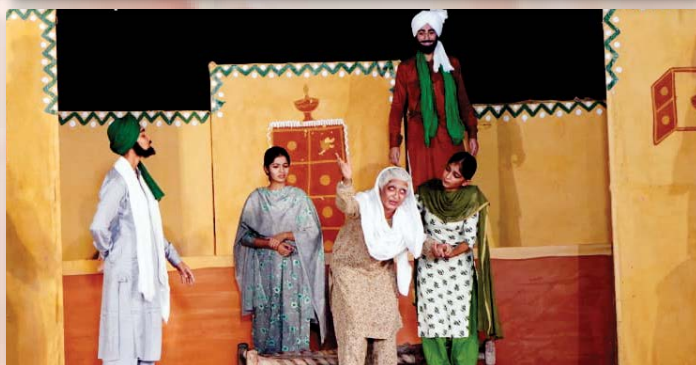
**Dasmesh Girls College,
Baddal, Sri Muktsar Sahib**



*Principal/Convener
Dr. S. S. Sangha*



*Organizing Secretary
Mrs. Indu Pahuja*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Education- A

S.B.H.S. Memorial College of Education, Mahilpur

October 28-31, 2022

ZONAL TROPHY

**G.T.B. Khalsa College of Education
Dasuya**



*Principal/Convener
Dr. Rohtash*



*Organizing Secretary
Ms. Harpreet Kaur*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Education- B

S.D.S. College of Education for Women, Lopon

October 31 to November 03, 2022

ZONAL TROPHY

**G.H.G. Khalsa College of Education,
Gurusar Sadhar**



*Principal/Convener
Dr. Tripta Parmar*



*Organizing Secretary
Dr. H. K. Dolly*



PANJAB UNIVERSITY ZONAL YOUTH & HERITAGE FESTIVAL 2022-23

Zone: Education-C

Guru Ram Das B.ED College, Jalalabad

October 29 to November 01, 2022

ZONAL TROPHY

**D. A. V. College of Education,
Abohar**



*Principal/Convener
Dr. Sarabjit Kaur*



*Organizing Secretary
Mrs. Richu Josan*



Editorial



We are proud and exuberant to acclaim that we are ready to bring out the 'Jawan Tarang- 2022-23' edition based on the 'Ek Bharat Shrestha Bharat' theme. The theme was an endeavor to juxtapose the rural and the urban, ethnic and modern cultural connect amongst the youth. Based on the same theme all Zonal and Inter-Zonal Youth Festivals have promoted a sustained and structural cultural connection of Punjabi traditions, music and languages to keep the cultural legacy intact.

The focus of all the events of the youth festival is to make the young minds laced with immense talent to be self-reliant and better human beings, fully sensitive to the needs of the nation. The articles included in the English sections of vibrant 'Jawan Tarang' have come from the rigors of the Youth Festival competitions at zonal and inter-zonal levels, which is sufficient testimony of the best of youth's mind reflected in the magazine.

Finally, I sincerely thank Vice Chancellor Panjab University for entrusting me with the responsibility of being part of the editorial board. I am equally indebted to the Director of Youth Welfare and co-editors for their constant support.

Bon Browsing....

A handwritten signature in black ink, appearing to read 'Neena', with a stylized flourish at the end.

Dr. Neena Seth Pajni

Editor (English Section)

Principal, Gobindgarh Public College, Alour, Khanna

Staff Editors (English Section) : Dr. Mini Sharma & Dr. Vijaya Singh

CONTENTS

(ENGLISH SECTION)

Sr. No.	Title	Student's Name	Page No.
POETRY			
1	<i>Labour</i>	<i>Samridhi & Anamika</i>	26
2	<i>Our Heritage, Our Pride</i>	<i>Chahat Narang</i>	27
3	<i>Love</i>	<i>Mandeep Kaur</i>	27
4	<i>The Hope</i>	<i>Palak Sidhu</i>	28
5	<i>Life</i>	<i>Samridhi</i>	28
ESSAY			
6	<i>Drugs and Youth</i>	<i>Mehal Monga</i>	29
7	<i>Youth and Drugs</i>	<i>Nishtha</i>	30
8	<i>Migration</i>	<i>Ritagya Shardha</i>	32
9	<i>Importance of Youth Festivals</i>	<i>Harmanpreet Kaur</i>	33
10	<i>Youth & Drugs</i>	<i>Agamdeep Kaur</i>	35
11	<i>Brain Drain</i>	<i>Amanpreet Kaur</i>	36
12	<i>Life is a Struggle</i>	<i>Tanvi</i>	38
13	<i>Women Empowerment</i>	<i>Ritika Sharma</i>	39
14	<i>The Lure of Foreign Shores for Youth</i>	<i>Riya Jindal</i>	40
STORY			
15	<i>Home</i>	<i>Armanpreet Kaur</i>	41
16	<i>In Search of My Mother</i>	<i>Ibaadat</i>	43
17	<i>Humanity</i>	<i>Aditi</i>	44
18	<i>The Hope</i>	<i>Armanpreet Kaur</i>	45
19	<i>Falling in Love with Waiting</i>	<i>C. S. Lakshaini Priya</i>	47



Labour

I have lost the day in the expectations of the night

and night in the fear of dawn,

*I have let my vicious thoughts drown me
into the oceans of my fears.*

*Man is what but a strange creature,
Pain is his vessel and desire is his compass.*

*As I struggle to walk pass the seas,
the winds conspire a tempest against me with
the darkness that engulfs the sky.*

*The truth of my labours meet me at the
grey where black and white cause the whirls,
it was not as much as the rough seas
as much as the unsteady sailor.*

*The light met me where the end begins
and touched me with the truth that words
couldn't say:*

*Magic is perhaps an illusion performed with
labour*

*The struggles of my life are the tapestry I
suffocate myself in, that the next day people
didn't find my body but a new silhouette
woven from its thread.*

Samridhi

*Partap College of Education, Ludhiana
Zone - Education - 'B'*

Puppets of clay we are,

*Experiences learnt from mistakes are the stairs
that take us far.*

*In us lies love and passion,
along with the evils of ego and aggression.*

We fall and rise,

Aspire to fly high in the skies.

*We are always hungry for more,
Even though we have so much in store.*

*Dreams and wishes are what we fight for,
faith lies deep in our care.*

*There is always a struggle between our mind
and heart that is filled with emotions,*

*Still, we keep going on our path unaware of the
destination.*

*We live in a world filled with people so troubled
and cold,*

*So fight through we have to with the weapon of
knowledge we behold.*

*We cannot choose to give up even if an option it
were*

For life is a journey filled with pain and labour.

Anamika

*G. T. B. Khala College for Women, Dasuya
Zone - Hoshiarpur - 'B'*

Our Heritage, Our Pride

*Heritage! Culture! Traditions! and Norms,
all are destroyed by western storms.
But we as the children of our nation,
will stop all the evils and discrimination.*

*Our heritage is truly our pride,
Protect it! Value it!, as our ancestors tried.
We have the prestigious monuments and the
holy book,
We should preserve them and try to
maintain its dignity by hook or by crook.*

*Many heavenly souls like Nanak, Kabir taught
us,
How to stay rooted in our culture they showed
us.
We are Indians and away from every root of
penury,
Hoist the national tricolour, Let us once
again pledges and make our nation flowery.*

*Read the ancient scriptures written by great
sages,
these depict real culture and heritage
and don't consider them mere pages.
Many freedom fighters like Gandhi and Nehru
came,
Be inspired and always believe in justice so that
nobody could tame.*

*Khadi weaving, wheat ploughing and sowing,
A salute to farmers, for making our nation
growing.
We are the originators of many movements
and hold a strong democracy,
Our honorable national leaders are crucial
part of our heritage who fought hypocrisy.
We are the proud Indians of our nation,
truth, simplicity and dignity are its formation.*

*We should preserve and respect our culture
and heritage.*

*"Ancient is magnificent", should be given
weightage.*

Chahat Narang

Gopi Chand Arya Mahila College, Abohar
Zone - Sri Muktsar Sahib

Love

*Wooden-straight back and spindly-gilded
Mother took seat on a throne-like chair
Her cheeks kissed by the pleasant sunshine
She listened to birds and humming of bees.*

*Quest of love-books, first page titled 'Mother'
Words of blind-love, echoing, "Extra-nine
months"
I bookmarked the page to my favourite one
And never flipped over, to the next one.*

*Stains of red and crippled with pain
Though some power unseen, forbidded her to
weep
Along with swollen breasts and feet
Gravidness in the womb, she bearded.*

*In the dark womb, she lightened my sun
I took breath with her, like fishes in pond
She made my shadow, she made me whole
I mingled with her like peacock in rain.*

*I am bounded with her nostalgic reveries
While my 'mum' to her 'chair'
Her hands feeling me, she talked in air
The tears kissed her cheeks, I cried silently in
peace.*

Mandeep Kaur

Dev Samaj College for Women, Ferozepur City
Zone - Moga-Ferozepur-'B'

The Hope

*When we think, we have lost all battles,
Even our confidence to the last piece shatters
Still, there is a shadow lingering in our heart
"I'm hope, please allow me to play my part."*

*I am the reason you believe in God,
If God is the cradle, then I it's abode.
You pray because you hope you'll get a reply,
And see I am always there for you to rely.*

*You can trust me like a warrior does
When he is off at war
That no matter what the situation is
My hope to come back is stronger than a wall.*

*I balance the world on my shoulders
Within me is the power to assure,
I will never betray you
With me on your side, you're secure.*

*But, you don't always get what you hope
It doesn't mean-there is no slope
Sometimes I might want to teach you,
Even without certain things you can cope.*

*It pulls us out of the darkness
Ignites the fire in us for survival
Took me out of depression
And gave me back, my old passion.*

*Hold it hard, clutch it tight
It is the only way through which
Against your destiny you can fight
Against your destiny you can fight!*

Palak Sidhu

PGGCG, Sector-11, Chandigarh
Zone - Chandigarh - 'B'

Life

*I have lost the day on the expectation of night
and night in the fear of dawn*

*I have tried to wreak shackles of my fears
but got submerged in the drowning waters*

*We totter in the vicinity of cynical monsters
and craft our fancies of revenge and pain.*

*Lifting the veils of the morning mist the dawn
knocks on my door,*

*It was not so much rough seas but the unsteady
sailor*

*The follies of my life are a tapestry I suffocate
myself in, that the next day no one found my
body but a new silhouette woven*

The truth of life enveloped me:

*Sometimes our weakness serves us better than
our strengths*

*We hang on the charms of paradox that we
forget to believe in the streams of serendipity*

*As I walked out in the grey light, a voice called
to retract me:*

*Life's an enchanting seductress calling you to
caress her.*

Samridhi

Partap College of Education, Ludhiana
Zone - Education - 'B'

Drugs and Youth

Introduction

Drugs, one of the major problem our country is facing in 21st century. Drugs are destroying the fabric of our society. Drugs are not only deteriorating humans but our culture, society and economy too. Punjab is one of the top states that is facing the worst problem of drug abuse. In today's time everyone is indulging themselves in the practice of drugs. By injecting drugs in their body, they are injecting death too. Drugs have tangled an individual in its web. Youth of our country are the primary target of drug abuse. Youth, who are the future of our nation are completing submerged under the crisis of drug abuse.

Meaning

Drugs are the substances that are knowingly injected or taken in human body without any medical reason. Drugs are taken by an individual without any medical prescription by the doctor to create psychological changes in human mind. Drugs are available in many forms it could be a pill, injection, syrup, powder and many other forms. The youth of Punjab is the primary target of drug abuse.

Stages of Drug Abuse

1. Taking drug for fun
2. Dependency
3. Addiction

Causes of Drug Abuse

1. **Unemployment:** It is one of the reasons because of which the youth of our country is indulging in the dark practice of drugs. Population, unemployment and poverty is a cyclic process. The population of our country is increasing day by day, and employment opportunities are not available so people spend their miserable life in poverty.

To divert their mind from their life, people indulge in the practice of taking and selling drugs.

2. **Easy Availability:** Drugs are now easily available mainly in Punjab. Lack of strict administration has paved the way to the easy availability. Drugs are now openly sold in the market. This easy availability has worsened the problem of drug abuse.
3. **Lack of Education:** There is an urgent need to educate the youth of our nation about the ill and deteriorating effects of drugs. The gross enrollment ratio of students in schools and colleges is not 100% so the youth of our nation is not educated.
4. **Status Symbol:** In some particular section of the youths, taking drugs is considered as a status symbol. They think that by taking drugs they are a part of upper strata of society.
5. **Lack of Strict Administration:** The administration in our state is not working to their full capacities.

Effect of Drugs

The effect of drugs is very serious. They destroy the core of human being, society, nation, culture and economy. Below given are just a few of the effects of drugs.

1. **Psychological:** Drugs create an effect in the minds of the individual. They disturb the normal functioning of the nervous system and release a certain type of chemical. At first stage an individual will feel happy but its prolonged use will destroy the vital organs and functions of a human body.
2. **Physical:** Drugs are made in such a way that their constant use will burn a human body into skeleton.

3. *Increase Violence: When a dependency on drug increases, a consumer or addict of drug will go at any length to get drugs. They days we read and watch various news on violence, a killing because of drugs.*
4. *Social Effects: Drugs are destroying the*

very fabric of our social environment. The future of our nation is destroying the rich and vibrant culture of our state.

Mehal Monga

*Dev Samaj College of Education, Ferozpur
Inter Zonal*

Youth and Drugs

"A sound mind lives in a sound body."

In ancient times, the minor use of drugs or the medicines was to reduce the stress of humans. But as seen on observed in the recent trends, the usage of drugs has ben increased at a vast face. About 65% population of earth is youth i.e.- the young generation, who are t6he nation builders. And from that, about 50% or we can say more than 50% is under the bad influence of drugs and nicotine. Taking a look at the present scenario, the usage of drugs in Punjab have rapidly increased. Back family have such a youth one child who is using drugs one on in another form. Whether it is cocaine, cigarretes, tobacco on alcohol. Punjab has been an a veuge of destruction.

Drugs, or what we call it in Punjabi- 'NASHA' is a habit formation influence. A young male opportunately 18y under the influence of any drug is an enample of broken family, uneducated child, illiterate and socially awkwand. We are familiar with a very well known enample of a Punjabi rapper or singer- Honey Singh called 'Yo Yo Honey Singh' was badly taking drugs. Sometimes a very successful person can not handle his success and start taking drugs which had badly affected his carrier and set a bad enauple for other youth of India.

The major root or the underlying cause of such a activity is uneducation, poverty, illiteracy and also a latest probloem- uneducated unemployment in which even the graduates on the post graduates are not getting jobs. Such

people have started the intake of drugs. Looking at a bigger scenario of different states of India- It has been found that Punjab, Haryana, Delhi and some other month. Indian states are more under drug influence, whereas the states like Kerala, Tamil Nadu where the literacy rates are higher have less such problems.

We are familiar with a case of suicide attempt of Sushant Singh Rajput- a bollywood actor and the drug scandal which came fonth with that. It is a great enample of have badly the drugs are incorporated into the youth of India.

About 30% deaths of youth in India is due to encessive drug intake. A drug addict trends their families badly, is under the bad influence of friends. Sometimes, the peer pressure also makes an indivudal more towards such bad or wrong decisions.

Drugs are either used to reduce stress or it is just taken for fun. But nowadays, it has become a part of fun and parties. Youth is doing drugs like they are eating food, considering them a necessary need of life. The use of drugs relaxes the mind and body and help reduce the stress. But the after effects are injurious. Not only the drugs are affecting us physically, but also impacting us socially, emotionally.

Psychologically and culturally. Punjab is the state where the usage of drugs is maximum. This is not only affecting Punjab's reflection on India, but also questioning the government of state as well as center at a global level.

Damage of liver, kidneys, heart, eye is quite prominent. But the emotional damage of such individuals to themselves and their families is what an important factor is. The parents having such children are mentally stressed and in vain. They have nothing left but to disown their child to keep their life socially and culturally active.

The inefficient government is itself responsible for such actions on deaths happening due to excessive drug intake. Banning alcohol and drugs is not a solution, we also know that. But it could be reduced. Regional Drug Addiction Reduction Centres on 'Nasha Mukti Kendras' are there in India. But they are of what use if government itself is not helping India to become a drug-free nation. Government has to find the root causes from where and how drugs are supplied. It should reduce the manufacturing of alcohol and tobacco. Selling of opium should also be in equilibrium.

There are many conditions by which we can reduce the drug intake among youth. If the unemployment is tackled, most of the youth could reduce taking drugs. It is the duty of states as well as central government that our curriculum should be constructed in such a way that it refreshes the harmful effects of drugs and aware children about their rights, their fundamental rights and their duties. Small children learning the bad influences of drugs will somehow directly or indirectly make a bigger step towards drug reduction among youths.

According to the Article 21-A, if we incorporate a new subject in our free and compulsory education for children of 6-14 years, a new subject which could educate them about drugs and their effects. They could make a bigger change in the society. Educating parents and people, the youth, in villages and small cities about drugs will impact towards this issue. More will be the education, more there will be the skilled labour and more will be the employment, which will automatically reduce drugs.

'Nasha Mukti Kendras' in each region of India are a good initiative setups where the drug addicts are treated by doctors who are well-qualified and are appointed to help such individuals. Yoga, physical exercises, allopathic medicines and many other activities are prevalent in such centres. It is not only the steps of government that matters, but the efforts of public are also necessary. Only then, we can together help the drug addicts. We should all practice yoga as well as meditation that could reduce our stress, which will ultimately make us stay away from such fatal addictions. An emotionally and physically stable individual is the one who can live the life to the fullest. Reduction of drugs is one of the dreams that our forefathers had seen. It is a vision of "Ekatam Bharatam Shreshtha Bharatam".

Nishtha

D. A. V. College of Education, Abohar
Zone - Education - 'C'

“

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will."

- Mahatma Gandhi

”

Migration

'Home is where the heart is' - The one English saying that probably echoes in the minds of all those who choose to leave behind their home towns and settle in far-off, distant lands. Every year, over and over again, we witness migration on a scale larger than before. What exactly is migration and why would anyone want to leave their home?

Migration, individual or collective, is the voluntary or forced movement of people from one place to another. Migration can be intra border i.e. leaning for a place within the territory of the home counting or cross / inter border i.e. movement to a foreign land. While voluntary migration is usually a fruitful and fulfilling experience since it enables people to spread their wings, forced or involuntary migration is a devastating and traumatizing experience.

Voluntarily, people usually migrate in search of better opportunities, resources or living standards and conditions. The mass influx of people to cities and other urban – settlements from rural areas is an example of that. In India and across the world, rural population shows a tendency to shift to urban areas in search of jobs and in the hope of a better future. For example, the migration of unskilled people from states like Bihar, Uttar Pradesh to cities like Delhi and Noida to be employed as daily wage labourers and even students going to study in far-off places is a form of temporary migration, that is mostly voluntary. Forced migration, however, does not happen due to reasons so simple.

The Jews in Nazi – Germany were forced out of their homes, their country much against their will. Faced with discrimination, threats of racial extermination and violence, their mass – migration out of Germany and its allies is a stark reminder of how ugly things can get. Forced Migration may occur as a result of natural

disasters, too. For example, the recent floods in our neighbouring country Pakistan, have forced millions out of their homes. The same has happened in the past too, like during the deadly Bhuj earthquake, the droughts in Rajasthan or the Kedarnath floods spread of diseases or plagues is also a major contributor resulting in migration. Whether it be the rat-plague in Medieval England or the recent COVID-19 crisis, the movement of people is a common feature.

Similarly, terrorism, rioting and communalism also contribute to migration. We are aware of the miserable fate of the Kashmiri Pandits who had to undergo mass exodus to escape religious fanaticism. The otherwise vibrant and cheerful state of the Punjab has also witnessed two such incidents in the recent past. One, the partition of India and Pakistan and two, the Khalistan movement and the period of insurgency.

The non-Muslim population under Mughal Rule and especially under rulers like Aurangzeb had to go through the same fate. Though, one must remember that forced migrations are unfortunately not just a thing of the past History is replete with forceful movement of people leaving behind their homes and establishments. The indigenous people of South America who even had established society and culture had to flee due to colonial repression. The Aztecs, the Incas and the Maya all had to do the same. Today, we hardly find any existence-proofs of theirs. Colonialism have meted out this treatment across the world and the tribal-struggle in India testifies to that. The Munda and Santhal tribes (etc) suffered greatly under British Rule as did the Australian Aborigines. The migration of lakhs of people across the Indo-Pak border, the exodus of Kashmiri Pandits and the fleeing of Punjabis to escape terrorism explains the scenario of the recent past.

The horrors faced by Jews under Hitler's fascism are well-documented. The Diary of a Young Girl, an autobiography by a teenage girl Anne Frank, who ultimately lost her life, details the miserable condition in Nazi- Germany and allied nations.

Millions lost their homes and even more were displaced due to the coronavirus pandemic. The economic crisis and breakdown of state economy in Sri Lanka has also forced lakhs of people to fly abroad. The ongoing Russia-Ukraine war has and still continues to force Ukrainians to escape the war by seeking refuge in neighbouring countries. Here, we are also reminded of how the Malaysian onslaught and the subsequent Bangladeshi oppression forced lakhs of Rohingyas to illegally migrate into India.

Migration is an elaborate and multi-dimensional phenomenon. We must remember that it is not something limited to the human population. It is an intrinsic feature of nature and birds and animals also partake in this process. The annual arrival of White Sea cranes into India to escape the chilling winters of the Arctic is one

such example. The pollution and dirt present in the beaches of Mumbai and Goa had made many turtles abandon their egg-laying sites. With the efforts of environmentalists, they are slowly returning. The Dolphin population in the Ganga also faces a similar threat.

While sometimes migration is spontaneous and inevitable, other conditions are man-made. As active and aware global citizens, we must ensure that peace and harmony prevails all over the world. Maintaining brotherhood and conducive living conditions is the need of the hour. Migration leads to what is called 'brain drain' and has other far-reaching social, economic and political implications. We must also strive to develop rural areas so that the population has access to city like opportunities. Choosing to move out is a great endeavour but nobody should feel forced to do so. Home, indeed, is where the heart is! 'Vasudev Kutumbhakam'.

Ritagya Shardha

Panjab University Campus, Chandigarh
Zone - Chandigarh - 'A'

Importance of Youth Festivals

Youth is the backbone of every nation. Youngsters play a vital role in the society as well as in the future of the nation. Youth festivals are the organised events held in the colleges to let youngsters showcase their talents. It lets the youngsters perform and compete in their respective fields of arts, music, academics etc. Youth festivals are organized by a host college while the other colleges visit that college. It provides a grand number of people to showcase their talents too.

The main purpose of youth festival is to vanish the fear from the minds of students. It gives us the opportunity to let world know our capabilities and strengths. Everybody has a hidden talent but when one does not try to explore and refine

that talent, it is of no use.

Youth festivals are platform where one loses one's fears and gains confidence. Youth festivals includes various competitions to cite a few like folk dances, percussion, singing, creative writing, cultural theme based arts, painting, art and craft, theatre performances, mime, skits etc.

It would not be wrong to say that 'youth festivals are future of a nation. A country's betterment is decided by its youth. If youth of the nation is not worthy, then its future will not be worthy as well. Youth is the pride of every nation. Youth festivals put youth at the front which means youth festivals are refining future

politicians, teachers, artists and above all its citizens. Youth festivals open you up in front of the world. The majority of India's population is the youth, which is a positive sign for the future's betterment.

Youth festivals play a vital role in pouring out moral values in the youngsters. It teaches us the 'discipline'. It teaches you how to be a generous person in your life. It makes you learn the way a sensible person is expected to behave and to treat others. It teaches you the 'confidence'. It teaches you the importance of participation. It is mandatory for you to contribute in this society. It is important to let the world know about your presence, volunteer ship and contributions.

Personally, it teaches you about the real value and power of your own voice. It is important to let your soul get out of the shell of fears and insecurities. Youth fests teach us to stand out in the crowd. You cannot stay numb and silent in the real world because it makes crowd neglect you. Youth festivals teach us to overcome our insecurities and to showcase our talent. Our voice makes an important role in building our self-esteem. You cannot survive in this society without raising your point of views in front of the crowd. Youth festivals teaches us to stand out in the dense crowd.

Youth festivals teach us the meaning of 'unity'. When a group of ten girls prepare for any stage

performance, they learn the importance of coordination, the patience, the brotherhood, the unity and the discipline. It teaches you the 'teamwork'. And when one person from the team makes a mistake, it is upto the rest of members to correct it in any way possible, and this is called unity. It teaches you about a positive perception against the problems. You never blame a single member for any mistake, it is always about the team. It is the real meaning of teamwork and unity. Youth festival gives you the wide range of new social experiences of your life.

Honestly, this life is not about victories solely. Your victory or your defeat in any competition, is not that important. It is always about one who tried and did not give up after losing. Everybody cannot be winner. But everybody can try at least. Even after losing, you add on a new experience in your life that will remain with you always. Hence, participation must be mandatory within self. Whether you win or lose, is a secondary matter. At last, I can conclude that youth festivals are really an important part of the college life which have huge impact on the society and the nation.

Harmanpreet Kaur

Dev Samaj College for Women, Ferozepur City
Zone - Moga - Ferozepur - 'B'

**The highest education is that which
does not merely give us information
but makes our life in harmony with
all existence.**

- Rabindranath Tagore

Youth & Drugs

'We' represents Youth. 'We' are the young people. 'We' are the people on which coming generation would depend. The coming generation will walk on our footsteps. And there is no doubt, we know all these things. BUT, what "we" doing?

So, let's not talk about any other country, OK... not even our country India, Let's talk about the state Punjab, from where I am, where I live. Because, here, I think so, is the main root of this disease. We can't blame any other country when there is fault in our Country itself. Actually, the basic issue is why the youth is falling prey to this problem? Yeah, it's a disease..... Because, today, the youth is in his own private zone.... He didn't want anybody, he didn't want to talk to anybody, he doesn't even want to see anybody's face. He wants privacy where nobody interrupts him. And while being in his private zone, he doesn't even come to know what he is doing of himself, what he has made himself.. This leads to depression even.

When a man takes drugs, he takes it first time, then second time, third time.... then he is unstoppable. Only death could stop his desire of taking drugs. Because he gets so habitual that when even his close ones tries to stop him by doing so, the drug addict thinks that they are trying to harm him. See, how these drugs cause harm to the mental and emotional health of a person. At that period of time, he doesn't know what he is doing with his life.

You don't even believe, there are many educated people who are addict to drugs. They are having a good social status in the society, and they belong to extreme rich families. They are prey to so much tensions in their life which lead them to take this step. And they go to parties, take drugs there and ruin their life.

Truly, youth has made the drugs a 'business' today. These are sold like hot cakes. There are

many persons working in this business, which sell these at very expensive prices and people, too, buy them as they are provided to them free of cost.

These drug addicts and the sellers are sometimes arrested by the policemen and put in the jail. But for we, young people, it's not the solution to the problem. Earlier also, the youth was destroying his life, now also it is suffering. By doing so, they totally finishes their life.

Every young person is a student too in his or her own field. This is a crucial time for him to build his future, thinking of his being independent, to achieve his goal. By doing so, he gets totally distracted from his studies, and this will surely lead to a heavy loss in future.

'Say no to Drugs'

Now-a-days, there are various associations made related to drug abuse and steps were taken to prevent it from spreading. And as a youth, it's our responsibility, of each and every citizen, to say the motto and take part in every association to make our surroundings healthy, wealthy & wise.

Recently, our Chief Minister of Punjab 'Shri Bhagwant Mann' has announced of "NashaMukat Punjab" but he alone can't do anything. He is only a way through which our means could be achieved. Our support should always be needed.

Drug is not a bad thing when.... until and unless, and took it in the way, as a medicine. It cures many diseases. But to take it for self-satisfaction or self-pleasure and merriment can cause disasters.

Agamdeep Kaur

*Dev Samaj College for Women, Sec-45, Chd
Zone - Chandigarh-'B'*

Brain Drain

The modern epoch is all about proliferating, folks, nowadays don't want to take a pause in their lives. Everyone is running a rat race in just moving forward. Brain Drain is one of its crucial parts. Brain Drain is referred to "Shifting of manpower of one country to another country."

"Need is the mother of invention". This statement clearly justifies the invention or say the trend of Brain Drain. The brain drain started when the need arrived. The need of basic necessities, requisites, essentials and even the demand of luxurious lifestyle.

The cutting edge era includes masses who like to achieve all what they desire and this demand leads to elusive shift in their work and education. Everyone wants the best in their life. Eventually, it leads to the concept of brain drain.

There are countries which are underdeveloped or developing people of those countries get less chance of upgradation in their life. They do not want to miss the boat at any cost. Further it uplifts the masses to leave their native places and move to foreign countries. Somehow, people have to adjust their lives in abroad. It was cost down an arm and a leg yet; they are not left with any other option than moving out.

The developing countries irrefutably lack a lot of traits covering under a developed country, features miss out from them, to specify, many much national companies, great education system, properly provided employment and also it includes the appropriate divination of money. When a country somewhat neglects or is not able to provide the pivotal services to its citizens then it leads to the shifting of its manpower to other countries.

"The concept of brain drain will always be a debatable topic though there would be no conclusion."

Many will say that the brain drain is a prominent past but others will oppose it. The discussion on this topic will be never ending.

"Every coin has two sides", likewise, even the term brain drain has both its positive and negative side. If the positive side is considered the upsurge of lifestyle, thinking, development of individuals, plays a prominent role which makes way for the native country's development as well. If the other side of it is looked upon, it says that the country will lose all its manpower and country and will even come down from the point it is currently present at.

There are numerable reasons of it yet the term globalization will always be on the top of the list. Globalization has put expectations in the mind of people. As it is said,

"What we see becomes what we desire, what we have, what is not required".

Folks have global access these days. They can watch, listen, travel to any point of the globe. The technology has made everything so easy and quick that people have changed their mindset. The folks of unprivileged countries can have look upon all other developed countries. Without a question, the expectations will rise when someone sees other people at a total different level. To exemplify, people of countries like India have access to all the happenings of America, they get excited when they see people earning well, living well and also the harmony amongst them.

Amongst all other reasons education has also put its foot forward when it comes to development Pupils are provided with best education facilities with the effect of globalization and internet services. Educated people would never like to settle for less. They would like to touch the sky as they are educated and have privilege to move

abroad. With the help of education, they can lift up the poignant of poverty in their country by settling back. Once a person is educated he will be able to learn his bread and butter on good terms and with it the problem of poverty will not occur.

Along with it, an educated person would always wish to work in great companies or establish their own business, become entrepreneur so that he may earn the best and live the best. He would always try to not settle for less, and earn handsome money. The desire for abundance also comes with education either it is of gaining more knowledge of earning more wealth.

It is apparent that every second person is now moving abroad, be it for the purpose of education or for the better opportunities. There can be many reasons of brain drain, and still those would be just the tip of the iceberg. The reasons are that the developed countries provide the best of its services opportunities to all the people living there. Those countries become the specimen for other countries by providing the best education facilities, exposure, schemes, better living standard along with the best of its ambience. Not only this but also it makes everyone harmonious, it does not promote casteism, religionism, communalism etcetera. They leave no one to be unprivileged in any ways.

Moving further, when it comes to the discussion of brain drain, there will always be two sides. Many folks give preference to seek international exposure but there will be always a set of people who will not give their opinion in the favour of brain drain. According to them, the country will not be left with the skilled educated, intelligent people if the concept of brain drain continues. It is being said that if it continues for another decade, even the developing countries will become the under developed ones.

The positive side of the brain drains puts an idea that if the people of developing countries will shift themselves for a while to the developed

countries, it will provide them with the best and will lead to the further development of country. This opinion is considered to be on its best side, as the people once will earn lumpsum amount along with international exposure, they will try to make their native country grow. Those people would help their country to come out with the best and be like the developed countries providing all the features which are required.

"Every cock has a key and every cloud has a silver lining".

Likewise, the downside can be overlapped with few measures. Each country should try to make its manpower stay in their own country. Authority should take suggestions and initiatives to be on the way of more development. Once the speed is geared up, the measures have been taken and trend of migration from one place to another will take a break. This will help in the growth of our native countries and even our folks would be satisfied. The government should provide all the essential, key features to their citizens.

All in all, the concept of brain drain is not either fully right or fully wrong or has partial ways. It needs to have a grip equally on the migration. Folks and authorities should go hand in hand if they want individual growth or country's harmonious growth. These might be many reasons, problems, solutions but all what required is to have a correct prospective in any way.

It is said that, "Rome was not built in a day."

This statement implies correctly on the concept of brain drain. The development of countries will not speed up in months or few years but surely will upsurge with time, if right steps are taken.

Amanpreet Kaur

SBHS Memorial Khalsa College of Education,
Mahilpur
Zone - Education – 'A'

Life is a Struggle

"The struggle that we face today is developing strength in us for tomorrow."

Introduction: - Existence of life is one of the most beautiful things that we come across. But on the opposite side we have faced a lot of hardships and struggles to overcome the challenges of life. Life is not just a bed of beautiful roses but instead a lot of thorns are also one of the important parts of life. Without facing any difficulties or hardships life is incomplete and meaningless. One who considers life to be a smooth road can never succeed in their lives as life is a zig-zag road full of ups and downs. Happiness-sorrow, Beautiful- ugly, Day-night all are part of life.

To become successful in life one has to do a lot of hard work and face a lot of struggles and hardships. One who wants to become successful without facing any difficulties in life can never succeed in their life. Even millionaires, kings and emperors have to face defeats, ups and downs in their lives in order to become successful. Life is a continuous struggle be it rich or poor, healthy or ill everyone has to face the struggle. Hardships and difficulties cannot be avoided but we can choose such temperaments so that we can overcome them, with ease and a smile on our face. Some of the ways by which we can overcome them are.

Keeping a Positive Attitude:- Hardships are an integral part of life we can face or overcome by keeping a positive attitude. A negative attitude makes the struggle for life more difficult whereas a positive attitude will keep us motivated and calm during extreme conditions.

Seeing Beauty in Everything around: - A person who sees beauty in everything around him leads a healthier life. Keeping a positive mindset helps us to absorb more positive energy from the surroundings and therefore if encountered with any difficulty one can overcome it easily.

Being Happy:- Not crying over little things and

always be happy and keeping a smile on one's face helps lessen the miseries and sorrows of life and help overcome the difficult situations more enthusiastically and with more will power. As struggles are hard until we make them hard, if one decides to overcome them we can definitely do it.

Understanding the situation: - Understanding the situation with a calm and peaceful mind can help overcome it more easily rather than facing the situation in fear which will only worsen the situation rather than improving it. For example a child only knows a little about what to write in his exam, if he will handle the situation calmly and peacefully he can definitely overcome it but instead if he panics out of fear then he will also forget what he knows making the condition even more worse.

As it is rightly said, 'when life gives you lemons make lemonade out of it'. Means life is full of struggles and hardship but the one that makes the most of this instead of fearing out is the real king. Finding opportunities even in difficult times is the real test of a true man but only a few grab these opportunities and rest just make excuses. Someone burns midnight lamps and work hard day and night to achieve their dreams and does not complain about anything while on the other hand someone living in a place full of facilities but doesn't work hard to achieve the goals complains about everything around them. So out of them, successful is only who grabs most out of the opportunities provided to them. The one who keeps complaining about everything never grabs the opportunities and ends up failing and regretting in their lives.

To sum up we can say that though life is very beautiful and we should admire every aspect of it, it also brings with it a lot of struggles and difficulties. Each and every individual at some point of their life faces these difficulties but the

one who overcomes it with strength and power becomes the real hero. Just as time doesn't stop similarly life also doesn't stop and it keeps on going continuously. It is the individual that has to make the most out of his life so that he can lead a more joyous and peaceful life. It is the willpower of an individual that plays a dominant role. A person with strong willpower can overcome anything. So it should be understood that hardships and struggles

are part of life, the more a person experiences them, the stronger he becomes. Hardships and difficulties are temporary but life is permanent. So, we should grab all the opportunities in life and face them happily.

Tanvi

SDS College of Education for Women, Lopon
Zone - Education - 'B'

Women Empowerment

"Empowered women raise their voice not for themselves but for the whole community whose voices are not heard."

Hailing from a country where girls are regarded as Devi Lakshmi, one can imagine how powerful this identity is. Moving across the timeline from ancient past to medieval to modern history, there are numerous instances of empowered women. From ornamenting flowers in hands to holding the swords; they can gracefully do both.

But then the question arises that if women were so strong and powerful then why we need to empower them?

Keeping my best view forward. I believe, Women- the epitome of love, care and sacrifice; they were unaware of their own capabilities. Looking few decades back when men take women for granted. But, honestly I think this is the best thing because all excellent things need grinding and pressure, diamonds are compressed at high pressure, olives are grinded for the best virgin oil similarly, in the past women were under pressure, and today eventually they know their worth, they are educated and capable.

There is a saying that goes "If a MAN gets educated, a man got educated in the family but if a WOMAN gets educated the generations of the family get educated."

Taking into consideration the present situation let's have some look over instances- from a housewife to becoming India's, first millionaire businesswoman Falguni the owner of Nykaa to Vineetha Singh owner of Sugar Cosmetics they proved women can not only manage household but multinational companies as well.

From Alia Bhatt (movies) to PV Sindhu (Badminton), Sakshi Malik (wrestling), Harmanpreet Kaur (cricket) and many more they proved that today's women are soaring heights in the different fields. Last but not the least, currently, 'Annie Renaux' won the Nobel Prize in literature.

Apparently, there are countless examples today to mention which depicts the position of women. From a Miss Universe Pageant to a teacher in Local schools, they all are self-dependent. From space- rocketing to sea-diving, today's women stand tall among men.

To sum up my words, being a girl, representing my community, I would say we women never wanted equity. We need what we deserve.

In fact to learn new things, first we need to unlearn what our patriarchy has been teaching for ages.

Interestingly, sometimes I think that we all say that women needs to be empowered, yes we

do but who are educating men to have these empowered women as partners. We need to improvise not only network to 5G but needs to improvise our thinking for women.

I am extremely overwhelmed and proud while mentioning that a little girl of today may become a talented professor, sports persons or a leader in future.

A woman must be seen as be an inspiration who

could balance work and home life. I think women empowerment begins from one's home.

"Give the Girl the wings. She will show how caterpillars turn into butterflies."

Ritika Sharma

*Khalsa College, Garhdiwala
Zone - Hoshiarpur - 'B'*

The Lure of Foreign Shores for Youth

"The youth of a country are the flag bearers of its future."

With the youth of India cascading, accelerating into the laps of foreign nations, the future cannot help but look bleak. Hundreds of families say goodbye to their children, who in turn say goodbye to their motherland, at the international airports around the country every day. But Delhi Airport takes the cake. Punjabi's going to Canada, Australia, US, UK or any other country that isn't their own, lead the way as the future of India boards international flights and touches down foreign lands. It would not be a wrong observation that Punjab would be growing old rapidly after a couple of decades now.

This 'Brain Drain' is the result of two things— a repulsion from their own nation, and the allure of foreign shores. With a speedily rising population and the UN's prediction that India will surpass China as the most populated country by 2023, poverty and unemployment are issues that follow close behind. Skilled and educated youth of the nation wanders idly because there are not enough jobs that would do justice to their potential. Students struggle to find education and remain stuck in a conventional education system. The promises of the New Education Policy (NEP) seem to be bearing no fruit. A report in The Hindu recently read that colleges

in Karnataka are seeing enrollment of 3 students where the capacity is around 1000.

Financial insecurity among the younger generation is a big contributing factor. With inflation dominating the economic landscape & rising rate of interests, the fears are bound to rise. The increasing ROI Hinders people's ability to invest in small businesses and startups. As the Indian economy still reels from the blows of the pandemic and World Bank (WB) and International Monetary Fund (IMF) predict declining growth rate for our nation—the butterflies are eager to go where the nectar is.

Students seem eager to escape the bedlam and start anew at a place that offers them a sense of worth and financial independence. The frustrating socio-political environment and India's low ranking in the Happiness Index are also contributing factors in this regard.

In the present times, there are several examples of people of Indian origin operating some of the biggest and most powerful corporations in the world with his recent appointment. Parag Aggarwal- the new Twitter CEO joined Sundar Pichai- the CEO of Google and Satya Nadela- the CEO of Microsoft in the elite club of Chief, Executive Officers.

This is a clear statement to the fact that India's technological manpower flows out to foreign

nations rapidly as top students prefer studying in foreign universities. If given an opportunity, most would prefer to work there as well.

India is a developing country. Even though the economic conditions are delicate right now, India is in general a good place for startups and unicorns to emerge. There is an urgent need for the government to make the economic sphere favorable for the youth. Not only this focus on education and health infrastructure is need of the hour so that opportunities can be made within the country. The youth must be given

the hope that our country has the potential to become a dream workplace and an appropriate country for living in.

The young generation is an indispensable part of India's hope for a bright future. Therefore, it is necessary that they are able to feel at home in their own country and can avoid the struggles of being outsiders on foreign shores.

Riya Jindal

Govt. College for Girls, Ludhiana
Zone - Ludhiana - 'B'

Home

"Rihaan!..... Come down stairs, the dinner is ready." a voice came from downstairs.

"Okay Maa I am coming." said Rihaan.

He closed his diary and placed it on his table. Leaving his room, he came downstairs. He straight forward went to the kitchen where he found his mom. "What's for dinner Maa?" Rihaan asked his mom.

"It's on the table..... don't disturb me it's an important call Rihaan." she said getting a little annoyed.

"Okay Maa....." said Rihaan. He was a little sad but it wasn't new for him. He was used to it. Both his parents had a job. They were always busy with their work.

"It's okay Rihaan.... it's not the first time." Rihaan mumbled to himself.

He sat in a chair waiting for his parents to come and join him for dinner. After some time, both of his parents came and sat on the chairs. His mom served dinner. They started to eat but both of his parents were busy on their phones. It was an everyday thing for Rihaan but he hated it. He was always envious of the kids whose parents

had time for them. They picked their children from school. But Rihaan never got to experience something like that since both of his parents were always busy with their work.

"So how was your day Dad?" said Rihaan trying to start a conversation so that dinner could be less awkward.

"Good....." his dad answered while looking at his phone.

Rihaan sighed heavily as his effort went into vain. He looked down at the food on his plate and started to play with it since he lost appetite.

"Stop playing with your food Rihaan. It's not for playing." his mom yelled at Rihaan. He looked at her with teary eyes.

"Don't be a crybaby Rihaan..... finish your food and then go back to your room." she said looking at Rihaan. Then again she shifted her eyes to her phone. There was silence until Rihaan decided to break it and ask his dad.

"Are we going for a road trip tomorrow dad?" He looked at his dad waiting for him to answer. His dad was hesitating a little bit but finally he said, "I am sorry Rihaan. I have a really important

meeting tomorrow. We will go some other day I promise."

"But you said the same thing last time too," Rihaan said with a disappointing and sad tone.

"I am sorry Rihaan. We will go next time. I promise. We will go for sure." his dad said assuring him

Rihaan looked down and nodded. He was trying hard to hold back his tears. Somehow he managed and started to eat. Soon he finished his food. He got up from the chair and said, "I am going to my room Maa....." looking at her

"Hmm....." she hummed in answer.

Rihaan rolled his eyes and sighed heavily. He ran upstairs and went towards his room. After closing the door he lay down in his bed looking at the ceiling. But then he stood up and went towards his table. He sat on his chair and opened his diary. It was his hobby to write a diary everyday. Since childhood he used to write everything in his diary as his parents never had

time to listen to him. He started to write:

"Dear Diary,

Here I am again to tell you all my problems. I am sure, if you were a person, you would've got annoyed with me. Anyways..... so today wasn't different from any other day. I went school then came back home. Home..... technically this house is my home since I live here. But I never felt the warmth of a home in this house. Home is place where family lives together, grow together. But this house doesn't feel like a home to me. They say home is a place where you create so many memories with your family, your parents. But the only memories that I have is my parents always busy with their work wherever I come back from school. Never have I ever felt a connection with this house. I live like stranger with my parents. We rarely talk to each other. They are always busy working and all the memories that I have with them are refusing to spend time with me due to their work, having dinner with them as if we are stranger not a family. When grandma was with us, this house actually felt like a home, a place where you wanna return after tiring day. I really miss her. I wish my parents could understand that I need them. I wish they could understand that not money but families make home. I wish they could understand that money can buy a house but the people living in it makes it a home. I hope one day they will understand this.

Well..... that is it for today. Now I will say bye. We will meet again tomorrow, my dear diary."

Rihaan closed his diary and stood up from his chair. He went towards his bed and went to sleep hoping that one day this house will feel like a home to him.

Armanpreet Kaur

GTB Khalsa College for Women, Dasuya
Inter-Zonal



In Search of My Mother

This story is of a seventeen year old orphan girl, who was left outside the orphanage after her birth in the middle of a cold winter in December. Vaani, who studies in Government school in Chandigarh Sector-16; questions her friends, her teachers and God about her mother. Vaani begs and pleaded with the Almighty to answer her prayers. She told everyone that when she sleeps at night, she can feel her mother's touch.

One day Vaani went to school and she got to know that a new fine arts teacher has joined the school. Vaani, since day one was very curious and active in her arts class. Vaani was good at painting and singing so she enjoyed the company of her fine arts teacher. Vaani and her teacher Poonam Kapoor bonded well and her friends thought she had forgotten her mother and was moving on in her life. Her teacher used to take her out for lunch. The teacher and Vaani enjoyed their lunch and while eating, Poonam asked Vaani about her family, a tear rolled down Vaani's eyes and she said I have no family because I am an orphan. Poonam said sorry and told her she can call Poonam her family from now onwards.

Six months passed by and it was no less than a magic in Vaani's life as she grew out of all the pain and sorrow she had since her childhood.

A few days later, Poonam asked Vaani if she could adopt her and without even thinking about it Vaani jumped with happiness and said yes.

Poonam filled the mandatory documents for adoption of Vanni. Vaani was on cloud nine she could not imagine her life changing completely in few minutes.

Before signing the final document Poonam asked for an apology from Vaani. Vaani had no clue about it, that why is she asking apology and for what?

Poonam joined her hands in front of Vaani saying:- "I am sorry Vaani, I am your biological mother who left you here after you were born. After that incident my life changed completely and I never became a mother after you due to some medical reasons."

Vaani was shattered by listening to what Poonam said; thereafter she cried and yelled and locked herself in a room thinking she had been cheated. Poonam left without signing the papers.

A few days passed Vaani did not go to school and Poonam Kapoor revisited her.

Poonam and Vaani sat on a bench and had a conversation saying-"Are you not happy that I am your mother?" To which Vaani replied "I am happy but I was not expecting to meet you like this, I have been searching for the lost love of my childhood and now it is too overwhelming for me to believe you and all this.

Both mother and daughter hugged each other and cried saying-"Maybe it was in our fate to fall apart and again meet like this."

Poonam finally after years of pain and ups and downs adopted Vaani, who was now Vaani Kapoor.

Vaani Kapoor is now a successful Business Woman who runs an outlet in Sector-8, Chandigarh of a mother-child brand named as Mom & Me. She decided to devote her life in celebrating mother and child's beautiful and divine relationship.

Moral:- Never lose hope and doubt your fate God has His own plans for you.

Ibaadat

MCMDAV College for Women, Sec- 36, Chd
Zone - Chandigarh - 'B'

Humanity

A fresh tear rolled down from Mary's eyes as she was sitting on the floor of one of the house which she cleaned to earn money. She worked hard day and night to earn a living for her family. The memories of her husband were flashing in her mind. She had not been granted enough time to deal with the grief of her husband's death as her shoulders were occupied with the responsibilities of her children. She was going to enter into a cruel world with a hope that there was still some humanity left.

Mary had moved to another country after the death of her husband Lucas. She took her children with her and decided to educate them on her own. Coming from a different country and background, it was challenge for them to establish themselves in a new country.

"I don't want to go to school. All the children made fun of me, bully me and spoke filthy language about our family." Vicky fell into the lap of his mother with eyes full of tears.

His mother caressed his head and hugged him. She knew this happens with Rosie as well but she chose to stay silent as no one could do anything about it. Vicky was a child and couldn't help sharing his grief.

"Don't worry. I'll talk to your teachers to scold those children. Are you hungry? I've made your favorite food today." Mary tried to cheer Vicky up as she couldn't let him lose hope.

In the evening, when they went to market, Vicky wanted to buy apples. Those apples were expensive and Mary did not have enough money. She tried to distract Vicky but he wasn't budging at all. She requested the shopkeeper for a single apple and tried to coax him into borrowing it and paying for it later.

When she was talking to the shopkeeper Vicky picked up an apple and was going to bite it when

it fell down because the shopkeeper slapped Vicky. He began crying and kicked all of them out of his shop.

"Nonsense! Why do they enter into the shop when you can't afford anything?" Shopkeeper kept blabbering to himself.

Vicky's sobs were not coming to a halt. He was crying bitterly. Rosie distracted him towards an ice-cream shop when his sobs began to slowdown. Mary bought them one ice-cream and asked them to share. Mary didn't buy anything for her at all as she thought instead of buying something for herself, she could use that money for paying their fees.

At night, she was thinking how cruel this world was. She couldn't ask her children to be kind to others when they weren't getting humanity. People treated them so harshly that it filled their eyes with tears. Parenting and teaching core values to her children had become an unanswerable question in front of her. How could she ask her children to respect others when people had insulted their mother several times in front of them? People hadn't even shown a single ounce of pity when Lucas was on the brink of death, lying on the road after he was injured by a drunk car driver. The driver didn't even think of taking him to the hospital. Other people who were crossing the road didn't even bother calling an ambulance.

Next day, when she went to work, the owner of the house told her that one widower had shifted in their colony. Mary should ask him to work at his home and earn some more. Mary asked the man and he agreed. His wife had died due to cancer and he had no children.

A month passed by and one day, he was on leave from work and Mary was cleaning his living room area. Mary's honesty was very well known to him as he placed expensive things to check if

she stole them or not. They were at their usual places always. He asked her about her family.

"My husband had died in a car accident. His brother had kicked us out of the house. I worked day and night to earn for my children. We've no one from whom we could ask for help." She explained trying her best to not to break into tears.

"You can move in my apartment as it will save your rent. I live alone here. Your children will add some fun in this empty house." the man suggested.

"I really want to help you. I don't want anything in return." he tried to make his point clear.

After his request Mary reluctantly agreed. She was hesitant before moving in. But when she observed her children had mixed up with him some of her stress was relieved. She learnt that

his name was Nathan. He used to help her, care for her and had even begun assisting her financially.

One day, Rosie and Vicky called him "Dad". Both Nathan and Mary were shocked.

"You're our new dad. You've helped us in our tough times and loved us like our dad. So can we call you our Dad?" Rosie asked and Vicky was nodding with her.

Nathan agreed. After a year, he proposed to Mary and she said yes.

On the day of their wedding, Mary had tears of happiness in her eyes as she was thinking Nathan had proved that humanity is still alive.

Aditi

DM College, Moga

Zone - Moga - Ferozepur - 'A'

The Hope

"Maa!Ma! see how beautiful the stars are looking." said an 8-year-old pointing at the sky.

"Yes, as beautiful as my little angel." said Smriti smiling at her daughter who was busy admiring the stars in the sky with her big doe eyes which were sparkling like two little stars.

"One day I will go there and touch those beautiful stars." said Diya looking at her mom with a big smile. Her mom giggled seeing her daughter looking so happy.

"Maa... when I will go there, I will bring one star for you." said Diya giggling. Her mom picked her up and said.

"Mommy hopes that one day Diya's dream will come true so that Diya can bring a star from the sky for her mom." said Smriti laughing softly making Diya laugh.

"It's cold outside. Let's go inside or else little Diya will get sick. If she would catch cold then how she will bring the star for Mommy." said Smriti.

Diya frowned and placed her tiny hand on her mouth. Then she looked at her mother and said. "Let's go, Mommy... I don't want to catch cold." Smriti laughed at the Diya's reaction. Her reaction was full of innocence.

"Don't laugh Mumma.... Hurry up! or else I will catch cold." said Diya insisting her mom.

"Okay.... Okay we are going inside." said Smriti and they both went inside.

Time passed away and Diya was 21 now. So many things changed but Diya's eyes still hold the same dreams as when she was 8. Today was the day when Diya was going to step closer to her dreams. It was the day of her college's entrance exam, the college that she always wanted to join.

"You can do it Diya...." said Diya to herself looking in the mirror of her room.

"Yes! You can do it." a familiar voice came from behind. Diya's lips formed into a beautiful smile because she knew who's voice it was. She looked back and said "Maa....!" She ran to her mother and hugged her tightly.

"Do your best Diya." said Smriti looking at Diya.

"I will Maa...." Diya answered.

Diya broke the hug and left for her exam. "Take care Diya.... and all the best" Smriti shouted from behind looking at Diya. Diya waved back and left.

It was evening time. Smriti was waiting for Diya. Then she saw Diya coming from the front door. She rushed to Diya and hugged her. She asked her, "How was the exam Diya?" Diya's face dropped as soon as she heard that. Her eyes got filled with tears. She looked at her mom and said, "I wasn't great Mom.... I messed up everything." and tears started to roll out from her eyes.

"It's okay Diya.... we can always try again." said Smriti hugging Diya and patting her head.

"Don't lose hope Diya.... you have only lost a battle, not a war." Smriti said trying to calm down Diya.

"Let's do better next time and hope for the best." Smriti said with an assuring smile that everything will be okay.



Remember, hope is a good thing, maybe the best of things, and no good thing ever dies.

STEPHEN KING

Diya hugged her mom tightly and said, "Yes Mom..... you're right. I shouldn't lose hope like this. I will definitely improve and will clear the exam next time. I have to make my dreams come true. I can't lose my hope like this."

"That's my girl...." said Smriti.

"Thank you Maa...." said Diya while hugging her mother.

After that day Diya did everything that she could to improve herself. She studied hard and a year later she cracked the exam.

It's been 4 years now, Diya completed her studies and topped the college. Smriti was sitting on a chair in front of the stage waiting for Diya to come on stage. Her eyes were looking for Diya and just then, Diya's name got announced and she came on stage. Smriti was so happy and proud to see Diya.

"This trophy doesn't belong to me". Diya told. Then she looked at her mom and said with a big smile. "The actual owner of this trophy is my mom, Mrs. Smriti Shah. I wouldn't be here if it wasn't for her. When I lost my hope for everything, she was the one giving me my hope back. Thank you Maa! Thank you so much for always being there for me. Thank you so much for believing in me. And yes Maa.... One day your Diya will bring a star from the sky and gift it to you." with that Diya completed her speech. Everybody started clapping. Smriti's eyes were filled with the tears of joy.

Then Diya ran to her mother and handed her the trophy.

"This belongs to you Maa.... take it." Diya hugged her mother, and said "Thank you Maa.... Thank you so much."

Smriti hugged Diya back and said, "I'm really proud of you Diya."

Armanpreet Kaur

GTB Khalsa College for Women, Dasuya
Zone - Hoshiarpur- 'B'

Falling in Love with Waiting

People evacuating the cities to cross the border, gun shots and rain of bullets, kids separated from their mothers, lovers lost in the wilderness of the chaos, years of friendship shattering in seconds. It was the time of partition. It was the last train to Pakistan and almost all the members of my family were leaving India, our one and only home. It was dark and the wind blew swiftly. The piece of cloth that I had wrapped around my neck blew off with the first stroke of the midnight breeze. As I tried to catch it, my leg twisted a bit and I eventually touched the ground just in the middle of the crowd. People walked past me, not a single person stopped to help me, as everyone was struggling to get out of the country as soon as possible. Suddenly, a warmth, a feeling of relief, a sense of being pulled back and what I saw just won my eyes and heart, a handsome young man trying to pick me up from the ground. I've never met him neither he had met me, but the moment we shared was enough to brighten our eyes and make our heart pound louder than the sounds of trains moving from one track to another.

He held my hand tightly enough to not lose me in the chaotic crowd and started to run in search of an empty compartment. His eyes found a space, a small space, a single seat, a way for both of us to get into the train and leave the place. As it was too dangerous to even think of staying back, as people were being murdered brutally. But this young man's determination wasn't decreasing regardless of the circumstances that were building up just in front of our eyes. We both were still searching to enter the train. I could hear children crying, mothers searching for their lost babies, father's trying to protect their families, young lovers having eyes not willing to part from their beloved. Soon a ray of hope, a bright way was seen, a way to escape this chaos. We both tried to climb up the stairs and move inside the compartment, everything was going just fine until there was this moment where our hands slipped and I lost his touch. It was at this moment when I realized that I made it successfully into the compartment and he was left behind. My eyes started to search for him. Even though it was just a brief moment that we shared, I could recognize him simply by his touch, by his tired fragrance, that spark he had on ten edges of his eyelids, I could recognize even in death. My heart started beating so loud that I was able to hear it in this chaos. As the train started moving, I saw him, my eyes found him. My lips tried to call out his name. My heart was beating in his direction, longing to hold his hands again but I knew it wasn't possible as he was far from me and for I had never once asked his name. A loss, a regret, anger dwelling in my eyes and heart. And I was about to turn around with the heavy heart that my chest was hold it in, he saw me, he found me, he was running towards me, but maybe it was never in our fate, maybe we were destined to meet only to lose each other in front of our eyes, maybe this is what God had plan for both of us. Ever since then I never met him, I never knew if he was back there, in India, or stayed back in Pakistan, and no one ever knew that there was this young hero in my life who was the whole reason that I made it to India.

'Today it is you, my lovely grandson, who now knows that there was a young man in your grandmother's life who saved her, but your grandmother never made an effort to see him and bring him back. I closed my eyes to rest as it was a lovely evening that made me feel drowsy. As I closed my eyes, I imagined him with his grandchildren playing in his backyard and leading a happy life.

As it was my grandmother's tea time I went to her room to bring her downstairs. I called her name three times, there was no response, then I touched her soft and wrinkled face. It had gone dead cold. Soon I realize that my grandmother has finally been released from the pain of waiting. Waiting for the chaos to stop, waiting for the breeze to flee smoothly, waiting for the sun to set, waiting for the young man who saved her life that day to reach out his hands and take her to a new journey. Her waiting was over now. She reached Paradise and in the end she taught me that people can fall in love with waiting and waiting is just as beautiful as meeting.

C.S. Lakshaini Priya

G G N Khalsa College for Women, Ludhiana
Zone - Ludhiana - 'B'



ਸੰਪਾਦਕ ਦੀ ਕਲਮ ਤੋਂ

ਸਾਹਿਤ ਪਾਠ ਬੁਨਿਆਦੀ ਤੌਰ ਤੇ ਭਾਸ਼ਾ ਦੁਆਰਾ ਸਿਰਜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਰਸਤੂ ਕਾਲ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਅਜੋਕੇ ਯੁੱਗ ਤੱਕ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਤੀ ਅਤੇ ਬੁਨਿਆਦ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਦੇ ਯਤਨ ਜਾਰੀ ਹਨ। ਜੇਕਰ ਥੋੜੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ ਸਪੱਸ਼ਟ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਸਾਹਿਤ ਮਨੁੱਖੀ ਵਰਤਾਰਿਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਵਚਨ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਕੋਈ ਵੀ ਪਾਠ ਸਿਰਜਣ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸਮਾਜ ਦੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਇਸ ਕਰਕੇ ਪਾਠ (ਟੈਕਸਟ) ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਸੰਪੂਰਨ ਅਤੇ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਸਰੰਚਨਾ ਹੈ ਭਾਸ਼ਾ ਸਾਹਿਤ ਦਾ ਮਾਧਿਅਮ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਪ੍ਰਤਖਣ ਤੋਂ ਪਰਾਹਨ ਦਾ ਸਫ਼ਰ ਤੈਅ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਇਸ ਕਰਕੇ ਸਾਹਿਤ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਮਾਨ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਭਾਸ਼ਾ ਦੁਆਰਾ ਸਿਰਜਿਆ ਅਜਨਬੀਕ੍ਰਿਤ ਰੂਪ ਹੈ। ਸਾਹਿਤਕ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਗਿਆਨ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਾਂਗ ਪਾਰਦਰਸ਼ੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਇੱਕ ਆਪਣੀ ਸਰੰਚਨਾ ਅਤੇ ਸਿਸਟਮ ਹੈ ਇਸ ਕਰਕੇ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਾਹਿਤਕ ਕਿਰਤ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਉਸ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾਈ ਸਰੰਚਨਾ ਅਤੇ ਭਾਸ਼ਾਈ ਸਿਸਟਮ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਹੋਣਾ ਅਤਿ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਅਰਥ ਵਿਵਸਥਾ ਨੇ ਜਿੱਥੇ ਵਸਤੂ ਸੰਸਾਰ ਤੇ ਕਬਜ਼ਾ ਕਰ ਲਿਆ ਹੈ ਉੱਥੇ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਉਪਰ ਵੀ ਆਪਣਾ ਦਬਦਬਾ ਵਧਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਤਕਨਾਲੋਜੀ ਨੇ ਜਿੱਥੇ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਸੁਖਾਲਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਉੱਥੇ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਿਰਤ ਨੂੰ ਮੰਡੀ ਦੀ ਵਸਤੂ ਵਿੱਚ ਤਬਦੀਲ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਦੇ ਮੱਦੇਨਜ਼ਰ ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਆਰਥਿਕ ਪਾੜਾ ਵਧਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਮਨੁੱਖੀ ਚਕਾਚੌਂਧ ਵਾਲੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਮੱਕੜ ਜਾਲ ਵਿੱਚ ਫਸਾ ਕੇ ਉਸਨੂੰ ਬਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਵਿਕਣ ਵਾਲੀ ਵਸਤੂ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਖੇਤਰ ਸਹੀ ਦਿਸ਼ਾ ਅਤੇ ਦਸ਼ਾ ਪਰਦਾਨ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਹੈ ਖੇਤਰੀ ਮਾਂ-ਬੋਲੀ ਵਿੱਚ ਰਚਿਆ ਨਿੱਗਰ ਸਾਹਿਤ, ਜਿਸਦਾ ਪ੍ਰਯੋਜਨ ਉੱਚੇ ਮਾਨਵੀਂ ਮੁੱਲਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇ, ਸਾਨੂੰ ਅੱਜ ਅਨੇਕਾਂ ਹੀ ਦੁਸ਼ਵਾਰੀਆਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ ਪਰ ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਅਗਲੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ਸਾਰਥਕ ਅਤੇ ਉਸਾਰੂ ਸੇਧ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਰਸੀਏ ਬਣਾਉਣਾ ਪਵੇਗਾ ਤੇ ਆਪਣੇ ਅਮੀਰ ਵਿਰਸੇ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਕਰਵਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਉਸ ਨਾਲ ਨੇੜਤਾ ਬਣਾਈ ਰੱਖਣ ਦੇ ਉਪਰਾਲੇ ਕਰਦੇ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਜਿਹੀ ਸਾਰਥਕ, ਆਸ਼ਾਵਾਦੀ ਅਤੇ ਭਵਿੱਖਮੁਖੀ ਸੋਚ ਦਾ ਪੱਲਾ ਫੜ ਕੇ ਅੱਗੇ ਵਧਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਇਖਲਾਕੀ ਜ਼ਿੰਮੇਦਾਰੀ ਨੂੰ ਨਿਭਾਉਂਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਸਾਹਿਤ ਲੋਕ ਸਾਹਿਤ, ਸੱਭਿਆਚਾਰ, ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਵਿਰਸੇ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲ ਕੇ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਨਸਲਾਂ ਦੇ ਸਪੁਰਦ ਕਰ ਸਕੀਏ।

Karamjit Kaur

ਡਾ. ਕਰਮਜੀਤ ਕੌਰ
ਸੰਪਾਦਕ (ਪੰਜਾਬੀ)

ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ, ਦਸਮੇਸ਼ ਗਰਲਜ਼ ਕਾਲਜ, ਮੁਕੇਰੀਆਂ

ਸਟਾਫ਼ ਸੰਪਾਦਕ (ਪੰਜਾਬੀ ਸੈਕਸ਼ਨ): ਡਾ. ਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਅਤੇ ਡਾ. ਹਿਰਦੇਪਾਲ ਸਿੰਘ

ਤਤਕਰਾ

(ਪੰਜਾਬੀ ਸੈਕਸ਼ਨ)

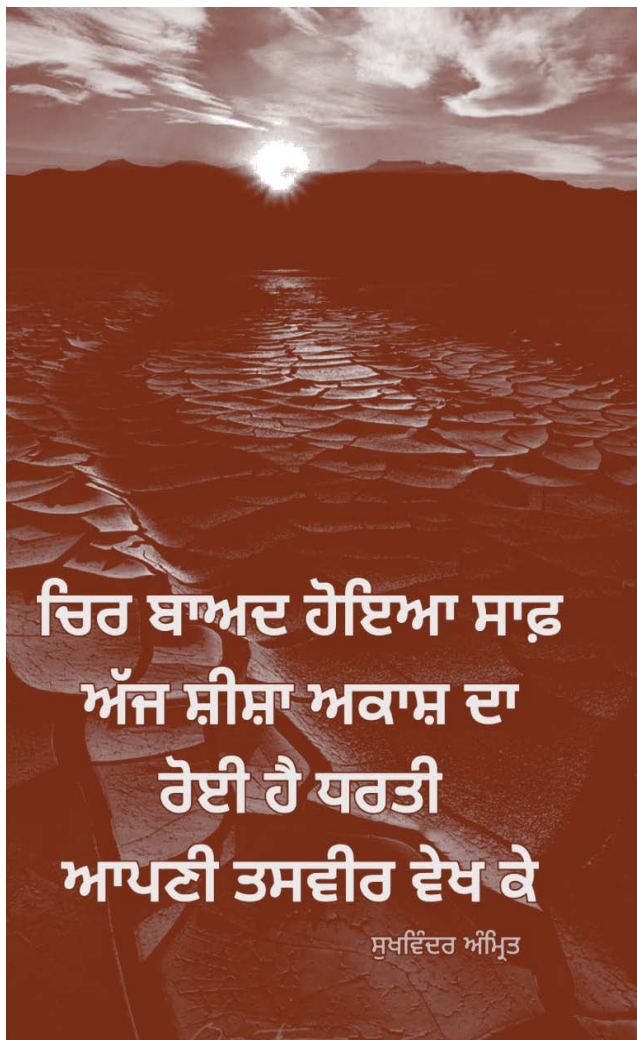
ਲੜੀ ਨੰ. ਸਿਰਲੇਖ	ਰਚਨਾਕਾਰ	ਪੰਨਾ ਨੰ.
ਕਵਿਤਾ		
1 ਸਾਡਾ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਮਾਣ	ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ	50
2 ਆਸ ਜਾਂ ਉਮੀਦ	ਸਿਮਰਨਜੀਤ ਕੌਰ	51
3 ਇੱਕ ਸੁਫਨਾ	ਜਸਕਰਨ ਸਿੰਘ ਅਨੇਜਾ	51
4 ਡਰ	ਗੁਰਤੇਜ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਜਸਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ	52
5 ਕਿਰਤ	ਨੇਹਾ ਸ਼ਰਮਾ	53
6 ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ	ਨੇਹਾ ਸ਼ਰਮਾ	54
7 ਦੋਸਤੀ	ਨਵਜੋਤ ਸਿੰਘ ਰਾਜੂ	55
8 ਉਡੀਕ	ਅੰਸ਼ ਭਾਟੀਆ	55
9 ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ	ਰਮਨਦੀਪ ਕੌਰ	56
ਲੇਖ		
10 ਮਹਿਲਾ ਸਸ਼ਕਤੀਕਰਨ	ਸ਼ਬਨਮਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ	56
11 ਯੁਵਕ ਕਿਉਂ ਬਣਦੇ ਹਨ ਗੈਂਗਸਟਰ ?	ਜਗਰਾਜ ਸਿੰਘ	57
12 ਜੀਵਨ ਇੱਕ ਸੰਘਰਸ਼ ਹੈ	ਮਨਜਿੰਦਰ ਕੌਰ	59
13 ਨੌਜਵਾਨ ਅਤੇ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ	ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ	60
ਕਹਾਣੀ		
14 ਘਰ	ਸ਼ੁਰਭੀ	62
15 ਤਲਾਸ਼	ਆਯੁਸ਼ੀ	63
16 ਆਸ	ਪ੍ਰਿਯਾ	65
17 ਘਰ ਵਾਪਸੀ	ਜਪਨਜੋਤ ਸਿੰਘ	66
18 ਉਮੀਦ	ਪ੍ਰਭਜੋਤ ਕੌਰ	68
19 ਮਨੁੱਖਤਾ	ਸੰਜਨਾ	70



ਸਾਡਾ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਮਾਣ

ਸਨ ਸੱਥਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਬੋਹੜ ਖੜ੍ਹੇ
ਬੈਠੇ ਬੋਹੜ ਹੇਠ ਸਿਆਣੇ ਦੀ
ਕੋਈ ਬਾਪੂ ਗੱਲ ਸੁਣਾ ਦੇ ਤੂੰ
ਓਸ ਲੰਘੇ ਵਕਤ ਪੁਰਾਣੇ ਦੀ

ਨਹੁੰ ਮਾਸ ਜਿਹੇ ਸੀ ਸਾਕ ਹੁੰਦੇ
ਨਾਲ ਨਫਰਤ ਦੇ ਨਾ ਖਾਕ ਹੁੰਦੇ
ਕੱਚੇ ਵਿਹੜੇ ਸਨ ਮਕਾਨਾਂ ਦੇ
ਪੱਕੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਸਨ ਜੁਬਾਨਾਂ ਦੇ
ਮੰਦੇ ਬੋਲ ਕਦੇ ਨਾ ਕਹਿੰਦਾ ਸੀ



ਓਸ ਬੰਦੇ ਬਹੁਤ ਸਿਆਣੇ ਦੀ
ਕੋਈ ਬਾਪੂ ਗੱਲ ਸੁਣਾ ਦੇ ਤੂੰ
ਓਸ ਲੰਘੇ ਵਕਤ ਪੁਰਾਣੇ ਦੀ

ਕੋਰਟ ਕਚਹਿਰੀ ਕਦੇ ਨਾ ਪਹੁੰਚੇ ਰੌਲੇ ਵੱਟਾਂ ਦੇ
ਸਾਰੇ ਮਸਲੇ ਹੱਲ ਹੁੰਦੇ ਸੀ ਵਿੱਚ ਬਹਿ ਕੇ ਸੱਥਾਂ ਦੇ
ਕਿੰਝ ਪੈਂਦੀਆਂ ਸੀ ਤਰੀਕਾਂ ਤੇ ਕੋਈ ਬਾਤ ਥਾਣੇ ਦੀ
ਕੋਈ ਬਾਪੂ ਗੱਲ ਸੁਣਾ ਦੇ ਤੂੰ
ਓਸ ਲੰਘੇ ਵਕਤ ਪੁਰਾਣੇ ਦੀ

ਅਰਬੀ ਘੋੜੇ ਸਾਂਭ ਰੱਖਣ ਕੰਮ ਟੇਢੇ ਜੱਟਾਂ ਦੇ
ਵੜਨ ਅਖਾੜੇ ਚੋਬਰ ਥਾਪੀ ਮਾਰ ਕੇ ਪੱਟਾਂ ਤੇ
ਬੂਰੀਆਂ ਚੁੰਘ ਚੁੰਘ ਪਲੀਆਂ ਦੇਹਾਂ ਤੇ ਖਾਧੇ ਮਖਾਣੇ ਦੀ
ਕੋਈ ਬਾਪੂ ਗੱਲ ਸੁਣਾ ਦੇ ਤੂੰ
ਓਸ ਲੰਘੇ ਵਕਤ ਪੁਰਾਣੇ ਦੀ

ਘੋੜੇ ਬਲਦ ਹਾਣੀ ਤੁਹਾਡੇ ਮੂੰਹ ਨਾ ਵੇਖੇ ਗੱਡੀਆਂ ਦੇ
ਕੋਹਾਂ ਮੀਲ ਪੈਦਲ ਤੁਰਨਾ ਫਾਟ ਖੁੱਲ੍ਹ ਜਾਣੇ ਅੱਡੀਆਂ ਦੇ
ਖੜ੍ਹ ਮੋੜਾਂ ਉੱਤੇ ਸੈਲਫ ਮਾਰਦੇ ਅੱਜ ਦੇ ਨਿਆਣੇ ਦੀ
ਕੋਈ ਬਾਪੂ ਗੱਲ ਸੁਣਾ ਦੇ ਤੂੰ
ਓਸ ਲੰਘੇ ਵਕਤ ਪੁਰਾਣੇ ਦੀ
ਚਲੋ ਚਲੀ ਦਾ ਮੇਲਾ ਜੱਗ ਹੈ ਸਭਨਾਂ ਤੁਰ ਜਾਣਾ
ਚੱਕ ਸਮੇਂ ਦਾ ਚਲਦਾ ਰਹਿਣਾ ਨਾ ਵੇਲਾ ਮੁੜ ਆਉਣਾ
ਝਲਕ ਵਿਰਸੇ ਦੀ ਦਿਸ ਪਵੇ ਝੋਲੀ ਭਰ ਦੇ ਨਿਆਣੇ ਦੀ
ਕੋਈ ਬਾਪੂ ਗੱਲ ਸੁਣਾ ਦੇ ਓਸ ਲੰਘੇ ਵਕਤ ਪੁਰਾਣੇ ਦੀ

ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ

ਸਰਕਾਰੀ ਕਾਲਜ, ਸ਼੍ਰੀ ਮੁਕਤਸਰ ਸਾਹਿਬ
ਜੇਨ- ਸ਼੍ਰੀ ਮੁਕਤਸਰ ਸਾਹਿਬ

ਆਸ ਜਾਂ ਉਮੀਦ

ਇੱਕ ਸੁਫਨਾ

ਵਾਹ ਖੁਦਾ ਤੂੰ ਸਾਜ ਕੇ ਦੁਨੀਆ
ਕਿੰਨਾ ਔਖਾ ਕੌਤਕ ਰਚਾਇਆ
ਹਰ ਇੱਕ ਸ਼ੈਅ ਖੂਬਸੂਰਤ ਜੱਗ ਦੀ
ਸਭ ਕੁਦਰਤ ਦਾ ਸਰਮਾਇਆ
ਇਹ ਨਹੀਂ ਮਿਲਿਆ, ਉਹ ਨਹੀਂ ਮਿਲਿਆ
ਕਿਉਂ ਆਖ ਕੇ ਉਸਨੂੰ ਭੰਡਦਾ ਏਂ
ਤੂੰ ਰੱਖ ਆਸ ਓਸ ਦਾਤੇ 'ਤੇ
ਜਿਹੜਾ ਬੇਰੰਗਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਰੰਗਦਾ ਏ

ਹੈ ਪੈਰਾਂ ਹੇਠ ਜ਼ਮੀਨ ਮੇਰੇ ਤੇ ਸਿਰ ਉੱਤੇ ਆਕਾਸ਼ ਹੈ
ਹਰ ਇਮਤਿਹਾਨ ਉਹਦਾ ਪਾਸ ਕਰੂੰ ਨਿੱਕੀ ਜਿਹੀ ਮੇਰੀ
ਆਸ ਹੈ
ਕਿਰਦਾਰ ਉਹਦਾ ਵੀ ਮਹਿਕਣ ਲੱਗਦਾ, ਜਿਹੜਾ ਰੂਹ
ਲਈ ਤਾਜ਼ਗੀ ਮੰਗਦਾ ਏ
ਤੂੰ ਰੱਖ ਆਸ ਓਸ ਦਾਤੇ 'ਤੇ
ਜਿਹੜਾ ਬੇਰੰਗਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਰੰਗਦਾ ਏ

ਕਿਉਂ ਉਦਾਸ ਜਿਹਾ ਹੋ ਕੇ ਬਹਿੰਦਾ ਏ, ਕਰ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਹੁਣ
ਤੂੰ ਰੁੱਝਣ ਦੀ
ਮੇਰੀ ਸੋਚ ਦੀ ਵੀ ਆਉ ਵਾਰੀ, ਨਵੀਆਂ ਸੋਚਾਂ ਸੁੱਝਣ ਦੀ
ਹੈ ਰੇਤ ਵੀ ਮਹਿਕਣ ਲੱਗ ਜਾਂਦੀ ਜਦ ਪਾਣੀ ਛੋਹ ਕੇ
ਲੰਘਦਾ ਏ
ਤੂੰ ਰੱਖ ਆਸ ਓਸ ਦਾਤੇ 'ਤੇ
ਜਿਹੜਾ ਬੇਰੰਗਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਰੰਗਦਾ ਏ

ਜਦ ਜਿੱਤ ਮਿਲੂ ਫਿਰ ਇੰਝ ਲੱਗਣਾ ਜਿਉਂ ਮਿਲਿਆ
ਗੱਫਾ ਪ੍ਰਸ਼ਾਦ ਦਾ
ਮਹਿਕ ਆਸ ਦੀ ਕੁਝ ਐਸੀ ਹੈ ਜਿਉਂ ਛਿੜਦੈ ਸੁਰ ਰਬਾਬ
ਦਾ
ਤੋਹੀਨ ਕਰਿਆਂ ਸਭ ਖੁੱਸ ਜਾਂਦਾ ਕਿਉਂ ਦਾਤਾਂ ਉਹਦੀਆਂ
ਭੰਡਦਾ ਏਂ
ਤੂੰ ਰੱਖ ਆਸ ਓਸ ਦਾਤੇ 'ਤੇ
ਜਿਹੜਾ ਬੇਰੰਗਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਰੰਗਦਾ ਏ

ਸਿਮਰਨਜੀਤ ਕੌਰ

ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ ਫਾਰ ਵੂਮੈਨ, ਝਾੜ ਸਾਹਿਬ
ਜੇਨ - ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ - 'ਬੀ'

ਕੱਲ੍ਹ ਮੈਨੂੰ ਇੱਕ ਸੁਫਨਾ ਆਇਆ
ਸੁਫਨੇ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਦੇਸ਼ ਸਜਾਇਆ
ਧਰਮ ਸਾਰੇ ਹੀ ਇਕੱਠੇ ਕਰ ਤੇ
ਕਦੇ ਕਦਾਈਂ ਆਪਸ ਵਿੱਚ ਲੜਾ ਤੇ
ਫਿਰ ਵੀ ਰਹਿਣ ਇੱਕ ਜੁੱਟ ਸਾਰੇ
ਬੁੱਝੋ ਖਾਂ ਭਲਾ ਉਸ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਬਾਰੇ

ਵੀਹਾਂ ਤੋਂ ਵੱਧ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਮਿਲੀਆਂ
ਵੱਖੋ ਵੱਖਰੇ ਕਸਬੇ ਵਿੱਚ ਖਿਲੀਆਂ
ਪਰਬਤਾਂ ਨੂੰ ਫਿਰ ਤਾਜ ਬਣਾਇਆ
ਨਾਲ ਦਰਿਆ ਸੀ ਦਿਲ ਮਿਲਾਇਆ
ਇੱਕੋ ਥਾਵੇਂ ਚੰਨ ਸੂਰਜ ਤਾਰੇ
ਬੁੱਝੋ ਖਾਂ ਭਲਾ ਉਸ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਬਾਰੇ

ਪੜ੍ਹੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਤਾਂ ਹੋਇਆ ਗਿਆਨ
ਦੇਸ਼ ਮੇਰਾ ਹੈ ਬੜਾ ਮਹਾਨ
ਰਾਮ ਤੇ ਅਬਦੁੱਲ ਆਉਣ ਲੰਗਰ ਖਾਣ
ਦੀਵਾਲੀ ਵੇਲੇ ਮੈਂ ਬਣਾਂ ਮਹਿਮਾਨ
ਕਿਰਦਾਰ ਸਭਨਾਂ ਦੇ ਹੋਣ ਉਚਿਆਰੇ
ਬੁੱਝੋ ਖਾਂ ਭਲਾ ਉਸ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਬਾਰੇ

ਬਹੁਤੇ ਧਰਮ ਪਰ ਇੱਕਜੁਟ ਨੇ ਸਾਰੇ
ਪਤਾ ਕੀਤਾ ਜਦ ਉਸ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਬਾਰੇ
ਸਿਜਦਾ ਕਰਨ ਉਸਨੂੰ ਹਨ ਸਾਰੇ
ਭਾਰਤ ਭਾਰਤ ਬੋਲਣ ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ ਚਾਰੇ
ਮੇਰਾ ਭਾਰਤ ਮੇਰਾ ਮਾਣ
ਇਸ ਤੋਂ ਕਰਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਕੁਰਬਾਨ

ਜਸਕਰਨ ਸਿੰਘ ਅਨੇਜਾ

ਜੀ.ਜੀ.ਡੀ.ਐਸ.ਡੀ. ਕਾਲਜ, ਸੈਕਟਰ-32, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ
ਜੇਨ - ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ - 'ਏ'

ਡਰ

ਡਰ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੁੰਦੈ ਦਿਲ 'ਚ ਹਾਲਾਤ ਦਾ
ਡਰ ਹੀ ਕਰਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਹਨੇਰਾ ਚਾਨਣੀ ਰਾਤ ਦਾ
ਡਰ ਤੋਂ ਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਾਢ ਨਵੀਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ
ਡਰ ਪਰ ਮਾੜਾ ਹੋਵੇ ਧਰਮ ਤੇ ਜਾਤ ਦਾ

ਡਰ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੁੰਦੈ ਮਾਪਿਆਂ ਦੀ ਘੂਰੀ ਦਾ
ਗੁਰੂ ਕੋਲੋਂ ਡਰ ਵੀ ਹੈ ਗਿਆਨ ਦੀ ਦੂਰੀ ਦਾ
ਡਰ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ ਵੱਡਿਆਂ ਤੋਂ ਛੋਟਿਆਂ ਨੂੰ
ਡਰ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ ਪਰ ਮੰਜ਼ਿਲਾ ਤੋਂ ਦੂਰੀ ਦਾ

ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਲਹੂਆਂ ਨੂੰ ਪੀਣੇ ਵਿੱਚ
ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਘੁੱਟ ਘੁੱਟ ਜੀਣੇ ਵਿੱਚ
ਡਰ ਹੈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਅਪਰਾਧੀ ਨੂੰ ਕਾਨੂੰਨ ਦਾ
ਡਰ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ ਨਾਲ ਮਿਹਨਤਾਂ ਦੇ ਜੀਣੇ ਵਿੱਚ

ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਸੱਚ ਨੂੰ ਦਬਾਉਣ ਵਿੱਚ
ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਝੂਠ ਗਲ ਲਾਉਣ ਵਿੱਚ
ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅੰਨ੍ਹੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਤੋਂ
ਡਰ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ ਪਰ ਆਵਾਜ਼ ਉਠਾਉਣ ਵਿੱਚ

ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਦਿਲੀਂ ਬੇਈਮਾਨੀ ਦਾ
ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਮਾੜੀ ਹੋਈ ਕਿਰਸਾਨੀ ਦਾ
ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਬੁਰਿਆਂ ਨੂੰ ਚੰਗਿਆਂ ਤੋਂ
ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਹੱਥੋਂ ਕਿਰਦੀ ਜਵਾਨੀ ਦਾ

ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਬੁਰਿਆਂ ਵਿਚਾਰਾਂ ਤੋਂ
ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਧੋਖੇਬਾਜ਼ ਯਾਰਾਂ ਤੋਂ
ਡਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਮੂੰਹ ਦੇ ਮਿੱਠੇ ਪਿਆਰਿਆਂ ਤੋਂ
ਡਰ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦਾ ਸੱਚਿਆਂ ਪਿਆਰਿਆਂ ਤੋਂ

ਬਿਨ ਵਜੂਦ ਦੀ ਵਸਤੂ ਕੋਲੋਂ ਐਨਾ ਕਿਉਂ ਡਰਦਾ ਏਂ
ਆਪਣੇ ਹੱਥੀਂ ਘੜਿਆ ਜੋ ਉਸ ਹੱਥੋਂ ਨਿੱਤ ਮਰਦਾ ਏਂ

ਨਿਰਭਉ ਵਾਂਗੂੰ ਨਿਰਭੈ ਹੋ ਕੇ, ਭਰਮਾਂ ਨੂੰ ਵੱਢਦਾ ਜਾ
ਡਰ ਦੇ ਕੰਡੇ ਰਾਹੋਂ ਕੱਢ ਕੇ, ਅੱਗੇ ਵੱਧਦਾ ਜਾ

ਕਦੇ ਡਰਦਾ ਏਂ ਉਖੜਨ ਤੋਂ, ਕਦੇ ਅੜਨ ਤੋਂ ਡਰਦਾ ਏਂ
ਜਿਉਂਦਾ ਏਂ ਡਰ ਡਰ ਕੇ, ਉਂਝ ਮਰਨ ਤੋਂ ਡਰਦਾ ਏਂ

ਅੰਤਹੀਣ ਇਸ ਪਰਛਾਵੇਂ ਨੂੰ, ਪਿੱਛੇ ਧੱਕਦਾ ਜਾ
ਡਰ ਦੇ ਕੰਡੇ ਰਾਹੋਂ ਕੱਢ ਕੇ, ਅੱਗੇ ਵੱਧਦਾ ਜਾ

ਕਦੇ ਆਪੇ ਤੋਂ ਡਰਦਾ ਏਂ ਕਦੇ ਕੋਈ ਡਰਾਉਂਦਾ ਏ
ਜਿਸਨੂੰ ਸਿਰਜਿਆ ਆਪਣੇ ਹੱਥੀਂ ਸੋਈ ਡਰਾਉਂਦਾ ਏ

ਚੁੱਪ ਦਾ ਸ਼ੋਰ ਡਰਾਉਂਦਾ ਜੋ ਉਹਦੀ ਸੰਘੀ ਦੱਬਦਾ ਜਾ
ਡਰ ਦੇ ਕੰਡੇ ਰਾਹੋਂ ਕੱਢ ਕੇ, ਅੱਗੇ ਵੱਧਦਾ ਜਾ

ਡਰ ਜੇ ਭਾਰੂ ਹੋ ਗਿਆ, ਦਲੇਰੀ ਕਿਸ ਪਾਸਿਓਂ ਝਾਕੇਗੀ
ਡਰਪੋਕ, ਡਰਾਕਲ, ਬੁਜ਼ਦਿਲ, ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਆਖੇਗੀ

ਕਮਜ਼ੋਰ ਪੈ ਰਹੇ ਮਨ ਨੂੰ ਨਾਲ ਜ਼ੁਰਅੱਤ ਚੰਡਦਾ ਜਾ
ਡਰ ਦੇ ਕੰਡੇ ਰਾਹੋਂ ਕੱਢ ਕੇ, ਅੱਗੇ ਵੱਧਦਾ ਜਾ

ਗੁਰਤੇਜ ਸਿੰਘ

ਬਾਬਾ ਕੁੰਦਨ ਸਿੰਘ ਕਾਲਜ, ਮੁਹਾਰ
ਜੇਨ - ਮੋਗਾ - ਫਿਰੋਜ਼ਪੁਰ - 'ਏ'

ਜਸਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ

ਗੋਵਿੰਦ ਨੈਸ਼ਨਲ ਕਾਲਜ, ਨਾਰੰਗਵਾਲ
ਜੇਨ - ਮੋਗਾ - ਫਿਰੋਜ਼ਪੁਰ - 'ਏ'

ਕਿਰਤ

ਇਸ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਦੀ ਹਰ ਇੱਕ ਸ਼ੈਅ
ਤੇ ਹੱਥੀਂ ਕਿਰਤ ਵਿੱਚ ਹੈ ਇੱਕ ਲੈਅ
ਹੱਥੀਂ ਕਿਰਤ ਦਾ ਸਕੂਨ ਲੈ ਕੇ
ਰਾਹ ਆਪਣਾ ਰੁਸ਼ਨਾਉਂਦਾ ਰਹਿ
ਜੇਕਰ ਬਖਸ਼ਿਆ ਜ਼ਹਿਨ ਓਸ ਰੱਬ ਨੇ
ਤੂੰ ਰੱਬੀ ਕਿਰਤ ਕਮਾਉਂਦਾ ਰਹਿ

ਇਸ ਗਰਾਂ ਦੇ ਵੱਖਰੇ ਸਲੀਕੇ
ਹਰ ਕੋਈ ਉੱਚੜੀ ਥਾਂ ਉਡੀਕੇ
ਮਿਹਨਤ ਕਰਨ ਦਾ ਜਨੂੰਨ ਨ ਕਿਧਰੇ
ਹਰ ਕੋਈ ਬਾਦਸ਼ਾਹਤ ਉਡੀਕੇ
ਪਰ ਇੱਦਾਂ ਉੱਚੇ ਰਾਜ ਨਾ ਥੀਂਦੇ
ਇਲਾਹੀ ਕਾਜ ਨਾ ਐਵੇਂ ਢੀਂਦੇ
ਜੇ ਤੂੰ ਲੋਚੇ ਪਹੁੰਚ ਅਵੱਲੀ
ਜ਼ਹਿਨੀ ਕਿਰਤ ਵਿੱਚ ਡਟਿਆ ਰਹਿ
ਜੇਕਰ ਬਖਸ਼ਿਆ ਜ਼ਹਿਨ ਓਸ ਰੱਬ ਨੇ
ਤੂੰ ਰੱਬੀ ਕਿਰਤ ਕਮਾਉਂਦਾ ਰਹਿ

ਪਲਾਂ ਛਿਣਾਂ ਲਈ ਹੋਰ ਹੈ
ਇਹ ਸਾਹਾਂ ਵਾਲੀ ਪੌਣ
ਹਰ ਇੱਕ ਰੰਗ ਨੂੰ ਵੇਖੀਂ ਟੋਹ ਕੇ
ਕਿਸ ਵਿੱਚ ਛੁਪਿਆ ਹੈ ਕੌਣ
ਹਰ ਇੱਕ ਪੌਧ ਨੂੰ ਦੇਵੀਂ ਨੀਰ
ਭਾਵੇਂ ਦੇਵੀ ਹੱਥੀਂ ਢੋਹ
ਨਾ ਕਮਾਈਏ ਮੰਦੀ ਕਿਰਤ
ਨਾ ਮੰਦੜੀ ਲਈਏ ਕਨਸੋਅ
ਕਿਰਤ ਕਮਾਈਏ ਦਸਾਂ ਨਹੁੰਆਂ ਦੀ

ਤੇ ਦਸਾਂ ਨਾਲ ਰਿੰਨੀਏ ਅੰਨ੍ਹ
ਜਿਸ ਨੇ ਬਲ ਅਜ਼ਲਾਂ ਤੋਂ ਦਿੱਤਾ
ਬਸ ਓਸੇ ਨੂੰ ਹੀ ਪੀਰ ਮੰਨ
ਜਿਹੜੇ ਬਿਰਖ ਪਾਸ ਨੇ ਤੇਰੇ
ਸਭ ਉਸਦੀ ਗੁੰਦੀ ਸ਼ੈਅ
ਆਦਾਬ ਕਰੀਂ ਅਦਬ ਨਾਲ
ਸਭਨਾਂ ਅੰਦਰ ਉਹ ਹੈ
ਜੇ ਤੂੰ ਲੋਚੇ ਨੂਰ ਸਭਨਾਂ ਤੇ
ਕਿਰਤ ਹਲੀਮੀ ਸੰਗ ਟੁਰਦਾ ਰਹਿ
ਜੇਕਰ ਬਖਸ਼ਿਆ ਜ਼ਹਿਨ ਓਸ ਰੱਬ ਨੇ
ਤੂੰ ਰੱਬੀ ਕਿਰਤ ਕਮਾਉਂਦਾ ਰਹਿ

ਜੇ ਤੂੰ ਲੋਚੇ ਕਲਾ ਲਿਖਣ ਦੀ
ਗੰਧਲਾ ਬੋਲ ਨਾ ਲਿਖੀਂ ਕਦਾਈਂ
ਚੱਜ ਪਹਿਲ ਤੂੰ ਦੇਈਂ ਸ਼ਰ੍ਹਾ ਨੂੰ
ਕਿਸੇ ਦੀ ਕੁੱਲੀ ਦੀਪ ਜਗਾਈਂ
ਨਾ ਕੋਈ ਨੀਵਾਂ ਨਾ ਕੋਈ ਉੱਚਾ
ਸਭ ਨੂੰ ਇੱਕੋ ਹਰਫ਼ ਸੁਣਾਈਂ
ਔਖੀ ਘੜੀ ਨਾ ਵਿਸਾਰੀਂ ਪਲ ਵੀ
ਹੱਥੀਂ ਅੰਨ੍ਹ ਪਕਾ ਖੁਆਈਂ
ਵੱਡਿਆਂ ਦਿੱਤੀ ਜੋ ਲਿਆਕਤ
ਵਾਂਗ ਵੇਲ੍ਹ ਵਧਾਉਂਦਾ ਰਹਿ
ਜੇਕਰ ਬਖਸ਼ਿਆ ਜ਼ਹਿਨ ਓਸ ਰੱਬ ਨੇ
ਤੂੰ ਰੱਬੀ ਕਿਰਤ ਕਮਾਉਂਦਾ ਰਹਿ

ਨੇਹਾ ਸ਼ਰਮਾ
ਦੇਵ ਸਮਾਜ ਕਾਲਜ ਆਫ਼ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ, ਫਿਰੋਜ਼ਪੁਰ
ਅੰਤਰ-ਜ਼ੋਨਲ

ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ

ਮੈਂ ਵਾਰੀ ਜਾਵਾਂ,
ਨੀ ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ,
ਤੇਰੀ ਅਰਜ਼ੋਂ ਸੋਹਣੀ ਹੋਂਦ,
ਨੀ ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ।
ਤੇਰੀ ਰਗ ਰਗ ਵਿੱਚ ਰਚਿਆ,
ਪ੍ਰੇਮ ਹਕੀਕੀ ਮੇਰੀਏ ਮਾਏ,
ਤੇਰੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰ ਨੂੰ ਲੱਖ ਨਮਨ,
ਜਿਸ ਅਰਜ਼ੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਬਣਾਏ,
ਅੱਵਲ ਰਿਸ਼ਮ ਜਦ ਸੂਰਜ ਦੀ ਤੇਰੇ ਮੱਥੇ ਬਿੰਦੀ ਲਾਉਂਦੀ ਏ,
ਅਟੱਲ ਤੇਜ਼ ਤੇਰੇ ਮੁੱਖੜੇ ਨਾਲ,
ਧਰਤ ਸਾਰੀ ਜਗਮਗਾਉਂਦੀ ਏ,
ਤੇਰੇ ਪੈਰੀਂ ਸੀਸ ਨਿਵਾਉਂਦੇ,
ਪਾਕ ਨਦੀਆਂ ਵਾਲੇ ਪਾਣੀ,
ਸੋਹੰਦੀਆਂ ਮਿੱਠੀਆਂ 'ਵਾਵਾਂ ਨਾਲ ਪਰਬਤ ਨੇ ਹਾਣੀ,
ਸੋਹਣੇ ਸੋਹਣੇ ਬਾਗ ਇਉਂ ਜਾਪੇ,
ਧੁਰੋਂ ਹੀ ਰੱਬ ਬਣਾਏ,
ਮੈਂ ਰੂਹ ਨਿਮਾਣੀ ਪੜ੍ਹ ਨਾ ਸਕਾਂ,
ਜੋ ਅੱਖਰ ਵੇਗ ਚਲਾਏ,
ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਸੂਰਮੇ ਪਲਦੇ,
ਤੇਰੀ ਕੁੱਖ ਦੇ ਅੰਦਰ,
ਮੈਂ ਵਾਰੀ ਵਾਰੀ ਜਾਵਾਂ,
ਨੀ ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ।

ਤੇਰੀ ਰੂਹ ਦੇ ਪੰਨੇ ਪਰਤਾਂ ਤੇ ਤੱਕਾਂ ਨਵੇਂ ਨਜ਼ਾਰੇ,
ਹਰ ਕਵਿਤਾ ਦੀ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ, ਤੇਰੇ ਹੋਣ ਦੀਦਾਰੇ,
ਸੁਰਗੋਂ ਲਏ ਫੁੱਲ ਤੂੰ,
ਤੇਰੇ ਕੇਸਾਂ ਨੂੰ ਮਹਿਕਾਉਣ ਲਈ,
ਸੁਰਮਾ ਕਾਲੀ ਰਾਤ ਤੋਂ ਦਿਨ ਅੱਖੀਆਂ ਵਿੱਚ ਪਾਉਣ ਲਈ,
ਮੈਂ ਜਿੰਨਾ ਗਹੁ ਨਾਲ ਤੱਕਾਂ ਤੈਨੂੰ,

ਹੋਰ ਹੀ ਤੱਕਦਾ ਜਾਵਾਂ,
ਸੀਰਤ ਵਾਲੇ ਸਮੁੰਦਰ ਵਿੱਚ,
ਮੈਂ ਕਵਿਤਾ ਗੋਤੇ ਲਾਵਾਂ,
ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਦੇ ਲੱਖਾਂ ਹਾਣੀ,
ਜੋ ਤੈਨੂੰ ਟਟੋਲਦੇ ਫਿਰਦੇ ਨੇ,
ਤੇਰਾ ਰੂਪ ਸੁਹੱਪਣ ਲਿਖਣੇ ਨੂੰ,
ਜੋ ਅੱਖਰ ਫੋਲਦੇ ਫਿਰਦੇ ਨੇ,
ਮੈਂ ਛਣ ਭਰ ਉਮਰ ਦੇ ਪੰਧ ਅੰਦਰ,
ਜਿੰਨਾ ਵੀ ਤੈਨੂੰ ਤੱਕਿਆ ਏ,
ਦਿਲ ਦੇ ਵਰਕੇ, ਰੂਹ ਦੀ ਮਾਲਾ,
ਲਹੂ ਥਾਈਂ ਤੈਨੂੰ ਹੀ ਰੱਖਿਆ ਏ,
ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਅੰਸ਼ ਤੋਂ ਸਿਰਜੀ ਹਾਂ,
ਤੇਰੀ ਹੋਂਦ 'ਚ ਮੇਰੀ ਹੋਂਦ ਪਈ,
ਜਿਸਮ ਮਿੱਟੀ, ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਰਲਣਾ,
ਮੇਰੀ ਰੂਹ ਤਾਂ ਤੇਰੇ ਬਾਰ ਖੜ੍ਹੀ,
ਤੇਰੀ ਰੂਹ ਦੀ ਠੰਢੜੀ ਥਾਂ ਹੀ,
ਇਸ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਸਚਾਈ ਏ,
ਮੈਂ ਪੈਰੀਂ ਸੀਸ ਨਿਵਾਉਂਦਾ ਹਾਂ,
ਜਿਸ ਸੋਹਣੀ ਖੇਡ ਰਚਾਈ ਏ,
ਸਮਸਤ ਰੂਹਾਂ ਨੇ ਤੇਰੇ ਅੰਦਰ,
ਅਸੀਂ ਸਭ ਤੇਰੇ ਹੀ ਜਾਏ ਹਾਂ
ਤੇਰੀ ਸਭ ਤੋਂ ਸੋਹਣੀ ਰਚਨਾ,
ਨੀ ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ,
ਮੈਂ ਵਾਰੀ ਵਾਰੀ ਜਾਵਾਂ,
ਨੀ ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ।

ਨੇਹਾ ਸ਼ਰਮਾ

ਦੇਵ ਸਮਾਜ ਕਾਲਜ ਆਫ਼ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ, ਫਿਰੋਜ਼ਪੁਰ
ਜ਼ੋਨ - ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ - 'ਸੀ'

ਦੋਸਤੀ

ਦਿਲ ਮੇਰੇ ਦੀ ਕੁੱਲੀ ਦੇ ਵਸਨੀਕ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਨੇ
ਰੱਬ ਤੋਂ ਵੀ ਵਧੇਰੇ ਨਜ਼ਦੀਕ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਨੇ

ਅਕਸਰ ਹੀ ਧੋਖਾ ਖਾ ਜਾਂਦੇ ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਤੋਂ
ਸਿੱਧੇ ਸਾਢੇ, ਰੂਹਦਾਰ, ਬਹੁਤ ਠੀਕ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਨੇ

ਨਾਲ ਇਸ ਕੁਦਰਤ ਗੂੜ੍ਹੀ ਹੈ ਸਾਂਝ ਕੋਈ
ਪੱਥਰਾਂ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਪੌਣਾਂ ਤੀਕ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਨੇ

ਸ਼ਿਵ ਦਿਆਂ ਗੀਤਾਂ ਅਤੇ ਪਾਸ਼ ਦੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਤੱਕ
ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਵਾਂਗੂੰ ਬਣੇ ਮੀਤ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਨੇ
ਯੁੱਗ ਪਲਟਾਉਣ ਦਾ ਹੈ ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਜਜ਼ਬਾ
ਐਸੇ ਕੁਝ ਅੱਖਰ ਬਾਰੀਕ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਨੇ

'ਨਵ' ਨੂੰ ਤਾਂ ਬੱਸ ਰੁਲ ਜਾਣ ਦੀ ਹੀ ਆਸ ਸੀ
ਪਰ ਮੇਰਾ ਜਜ਼ਬਾ ਤੇ ਤੌਫੀਕ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਨੇ

ਨਵਜੋਤ ਸਿੰਘ ਰਾਜੂ

ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ, ਗੜ੍ਹਦੀਵਾਲਾ
ਜੇਨ - ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ - 'ਬੀ'

ਦ੍ਰਿਸ਼

ਹਰਮੀਤ ਵਿਦਿਆਰਥੀ

ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ
ਕਿ ਕਿਸੇ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ
ਤਮਾਸ਼ਾ ਬਣਦੇ.....
ਤੇਰੇ ਵਿਯੋਗ ਵਿੱਚ ਵਗਦੇ
ਆਪਣੇ ਹੰਝੂਆਂ ਨੂੰ
ਰੁਮਾਲ ਦੀ ਤਹਿ ਵਿੱਚ ਲੁਕਾ ਕੇ
ਜੇਬ ਵਿੱਚ ਸਾਂਭ ਲਿਆ.....

ਚੌਗਿਰਦੇ ਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਮੇਰਾ
ਆਕਾਸ਼ ਗੁੰਜਾਉਂਦਾ ਹਾਸਾ ਸੁਣਦਾ ਹੈ

ਉਡੀਕ

ਕੋਈ ਦੁਨੀਆ ਕੋਲੋਂ ਜਿੱਤ ਜਾਵੇ
ਕੋਈ ਆਪਣੇ ਆਪ ਤੋਂ ਹਰਦਾ ਏ

ਹਰ ਮਨੁੱਖ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਸਦਾ
ਉਡੀਕ ਤਾਂ ਕਿਸੇ ਦੀ ਕਰਦਾ ਏ

ਮੁਸਾਫ਼ਿਰ ਉਡੀਕੇ ਮੰਜ਼ਿਲ ਨੂੰ
ਜਿੱਥੇ ਉਸਨੇ ਜਾ ਕੇ ਰੁਕਣਾ ਹੈ

ਮਾਂ ਨੌਂ ਮਹੀਨੇ ਉਡੀਕੇ ਬਾਲ ਨੂੰ
ਕਿਸ ਵੇਲੇ ਹੱਥੀਂ ਚੁੱਕਣਾ ਹੈ

ਜੇ ਪੂਰੀ ਹੋਵੇ ਉਡੀਕ ਮੰਜ਼ਿਲ ਦੀ
ਫਿਰ ਰੂਹ ਰੰਗਾਂ ਵਿੱਚ ਰੰਗ ਜਾਵੇ

ਪਰ ਕਈਆਂ ਦੀ ਤਾਂ ਸਾਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ
ਵਿੱਚ ਉਡੀਕਾਂ ਹੈ ਲੰਘ ਜਾਵੇ

ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰੀ
ਉਹ ਸਾਹ ਰੁਕਣ ਤੋਂ ਡਰਦਾ ਹੈ

ਕੋਈ ਹਾਰਿਆ ਸ਼ਖ਼ਸ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਤੋਂ
ਉਡੀਕ ਮੌਤ ਆਪਣੀ ਦੀ ਕਰਦਾ ਹੈ

ਅੰਸ਼ ਭਾਟੀਆ

ਆਰੀਆ ਕਾਲਜ, ਲੁਧਿਆਣਾ
ਜੇਨ - ਲੁਧਿਆਣਾ - 'ਏ'

ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲਾ ਸੂਰਜ ਉੱਗਦੇ ਦੀ ਲਾਲੀ,
ਚਿੜੀਆਂ ਸੰਗ ਉੱਠਣ ਘਰ ਦੇ ਹਾਲੀ ਅਤੇ ਪਾਲੀ,
ਉੱਠ ਪਹਿਲੜੇ ਪਹਿਰ ਨੂੰ ਨਾਂ ਰੱਬ ਦਾ ਧਿਆਵਾਂ ਮੈਂ,
ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ ਤੋਂ ਜਾਵਾਂ ਮੈਂ ।

ਤ੍ਰੇਲ ਨਹਾਤੀਆਂ ਫਸਲਾਂ, ਹਰੀਆਂ ਪੱਤੀਆਂ ਘਾਹ ਦੀਆਂ,
ਅੱਖਾਂ ਖੁੱਲ੍ਹਣ, ਚੁਸਕੀਆਂ ਭਰਾਂ ਜਦ ਮਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਦੀ
ਚਾਹ ਦੀਆਂ,
ਸੂਰਜ ਦੀਆਂ ਕਿਰਨਾਂ ਸੰਗ ਵਿਹੜੇ ਪੈਰ ਟਿਕਾਵਾਂ ਮੈਂ,
ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ ਤੋਂ ਜਾਵਾਂ ਮੈਂ ।

ਓਟ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਅਤੇ ਆਇਤ ਕੁਰਾਨ ਦੀ,
ਬਾਣੀ ਲੇਖੇ ਲੱਗ ਕੇ ਉਸਤਤ ਕਰਾਂ ਭਗਵਾਨ ਦੀ,
ਨਾਨਕ ਦੇ ਮਰਦਾਨੇ ਸੰਗ ਵਿੱਚ ਵਜਦ ਰਬਾਬ ਵਜਾਵਾਂ ਮੈਂ,
ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ ਤੋਂ ਜਾਵਾਂ ਮੈਂ ।

ਝਾਂਜਰ ਦੀ ਛਣ ਛਣ, ਵੰਗਾਂ ਦੀ ਖਣ ਖਣ,
ਹੋਇਆ ਸੰਗੀਤਕ ਕਣ ਕਣ ਸੁਣ ਟੱਲੀਆਂ ਦੀ ਟਣ ਟਣ,
ਗਾਉਂਦੇ ਪੰਛੀਆਂ ਸੰਗ, ਆਪਣੀ ਆਵਾਜ਼ ਰਲਾਵਾਂ ਮੈਂ,
ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ ਤੋਂ ਜਾਵਾਂ ਮੈਂ ।

ਹੈ ਚਾਣਨ ਚੁਫੇਰੇ, ਸ਼ਾਂਤ ਫਿਜ਼ਾ ਰੋਣਕ ਖਲੇਰੇ,
ਚੰਬੇ, ਗੁਲਾਬਾਂ ਜਿਹੇ ਫੁੱਲ ਖਿੜਨ ਬਥੇਰੇ,
ਰਸ ਪੀਂਦੀਆਂ ਤਿਤਲੀਆਂ ਸੰਗ ਉੱਡ ਉੱਡ ਜਾਵਾਂ ਮੈਂ,
ਬਲਿਹਾਰੀ ਕੁਦਰਤ ਤੋਂ ਜਾਵਾਂ ਮੈਂ ।

ਰਮਨਦੀਪ ਕੌਰ

ਗੁਰੂ ਰਾਮ ਦਾਸ ਬੀ.ਐੱਡ ਕਾਲਜ, ਜਲਾਲਾਬਾਦ

ਜ਼ੋਨ - ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ : 'ਸੀ'

ਮਹਿਲਾ ਸਸ਼ਕਤੀਕਰਨ

ਮਹਿਲਾ ਅਤੇ ਪੁਰਸ਼ ਸਮਾਜ ਦੇ ਦੋ ਪਹਿਏ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਦੋਨਾਂ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਨਾਲ ਸਾਡਾ ਸਮਾਜ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਰਸਤੇ ਉੱਪਰ ਚੱਲਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦੋਨਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਜੇਕਰ ਇੱਕ ਪਹਿਏ ਵੀ ਖਰਾਬ ਹੋ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਸਮਾਜ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਰੁੱਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ ਨਾਲੋਂ ਕਾਫ਼ੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸੁਧਾਰ ਤੇ ਵਿਕਾਸ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਹੁਣ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀਆਂ ਤੇ ਮਰਦਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਭੇਦ-ਭਾਵ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਤਰਸਯੋਗ ਦੱਸੀ ਗਈ ਹੈ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਔਰਤ ਦੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖਦੇ ਹੋਏ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਗੁਰੂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ-

'ਸੋ ਕਿਉ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜੰਮਹਿ ਰਾਜਾਨ' ॥

ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਪਹਿਲੇ ਸਮਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਜਿੱਥੇ ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਸੁਧਾਰ ਆਇਆ ਹੈ ਉੱਥੇ ਔਰਤ ਉੱਪਰ ਅਤਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਸੋਸ਼ਣ ਅੱਜ ਵੀ ਜਾਰੀ ਹੈ। ਟੈਲੀਵਿਜ਼ਨ, ਅਖਬਾਰਾਂ ਅਤੇ ਹੋਰ ਸੰਚਾਰ ਦੇ ਸਾਧਨਾਂ ਰਾਹੀਂ ਅਜਿਹੀਆਂ ਖ਼ਬਰਾਂ ਅਕਸਰ ਸਾਨੂੰ ਦੇਖਣ ਤੇ ਸੁਣਨ ਨੂੰ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਖ਼ਬਰਾਂ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਭਾਵੇਂ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਲੜਕਿਆਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਖੜ੍ਹੀਆਂ ਹਨ ਪਰ ਫਿਰ ਵੀ ਉਹ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਅਜੇ ਤੱਕ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਨਹੀਂ ਹਨ।

ਅੱਜ ਵੀ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਜਿੱਥੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਜੱਗ-ਜਨਨੀ ਤੇ ਦੇਵੀ ਰੂਪ ਸਮਝ ਕੇ ਪੂਜਿਆ ਤੇ ਸਤਿਕਾਰਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਲੜਕੀ ਪੈਦਾ ਹੋਣ 'ਤੇ ਲੋਹੜੀ ਪਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉੱਥੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਲੜਕਿਆਂ ਦੀ ਚਾਹਤ ਵਿਚ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆਵਾਂ ਦੇ ਕੇਸ ਵੀ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ । ਇਸ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡਾ ਸਮਾਜ ਅਜੇ ਵੀ ਲੜਕੇ-ਲੜਕੀ ਦੇ ਅੰਤਰ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਗਰੂਕ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ ਹੈ ।

ਸਮਾਜ ਦੇ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਲੜਕੀਆਂ ਲੜਕਿਆਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ । ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਬਣਨ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਹੋਰ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿਚ ਉੱਚ-ਅਹੁਦਿਆਂ ਤੇ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹਨ । ਇਸ ਲਈ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਮਾਂ-ਬਾਪ ਨੂੰ ਹਰ ਹੀਲੇ ਆਪਣੀਆਂ ਲੜਕੀਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾ-ਲਿਖਾ ਕੇ ਪੈਰਾਂ 'ਤੇ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋਣ ਦੇ ਯੋਗ ਬਣਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ।

ਔਰਤ ਨੂੰ ਪਰਦਾ-ਪ੍ਰਥਾ ਅੰਦਰ ਰੱਖਣ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਉੱਪਰ ਨਾਜ਼ਾਇਜ਼ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਲਗਾਉਣ ਵਾਲੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਸੋਚ ਵਿੱਚ ਬਦਲਾਵ ਲਿਆਉਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਉਸ ਦੇ ਬਣਦੇ ਹੱਕ ਦੇਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ । ਸਮਾਜ ਅੰਦਰ ਬਦਲਾਵ ਆਉਣ ਕਾਰਨ ਹੁਣ ਇਸਤਰੀਆਂ ਆਪਣੀ ਸੁਰੱਖਿਆ ਲਈ ਆਪ ਨਿਯਮ ਲਾਗੂ ਕਰ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ । ਇਸ ਲਈ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਵੀ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸਾਥ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ । ਜੇਕਰ ਸਾਡਾ ਸਮਾਜ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸਾਰੇ ਸੁਪਨੇ ਬਿਖਰ ਜਾਣਗੇ । ਇਸ ਲਈ ਸਮਾਜ ਨੂੰ

ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰੇ ਤੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਹਰੇਕ ਨਾਗਰਿਕ ਨੂੰ ਇਸਤਰੀਆਂ ਪ੍ਰਤੀ ਸਤਿਕਾਰ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਰੱਖਣ ਲਈ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਸੰਮੇਲਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮਾਂ ਰਾਹੀਂ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ । ਸਕੂਲਾਂ, ਕਾਲਜਾਂ ਅਤੇ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਵਿੱਚ ਮਹਿਲਾ ਦਿਵਸ ਦੇ ਮੌਕੇ 'ਤੇ ਕਰਵਾਏ ਜਾਂਦੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਭਾਸ਼ਣ ਅਤੇ ਨਾਟਕ ਆਦਿ ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਸੁਧਾਰ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਉਂਦੇ ਹਨ ਇਸੇ ਕਾਰਨ ਔਰਤਾਂ ਵੀ ਹੁਣ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਜੀ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ । ਔਰਤ ਉੱਪਰ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਅਤਿਆਚਾਰਾਂ, ਜ਼ੁਲਮਾਂ ਅਤੇ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਨਾਲ ਨਜਿੱਠਣ ਲਈ ਕਈ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਕਾਨੂੰਨ, ਲੋਕ ਭਲਾਈ ਟੀਮਾਂ ਅਤੇ ਮਹਿਲਾ ਮੰਡਲ ਬਣੇ ਹੋਏ ਹਨ ਜੋ ਲਗਾਤਾਰ ਔਰਤ ਦੇ ਹੱਕਾਂ ਅਤੇ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ।

ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਅਸੀਂ ਇਹ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਮਹਿਲਾ ਅਤੇ ਪੁਰਸ਼ ਦੋਵੇਂ ਹੀ ਸਮਾਜ ਲਈ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹਨ । ਇਹਨਾਂ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸਮਾਜ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ । ਇਸ ਲਈ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪੁਰਸ਼ਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਸਨਮਾਨ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਵੀ ਰੱਬ ਵੱਲੋਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਇਸ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਆਜ਼ਾਦ ਰਹਿ ਕੇ ਮਾਣ ਸਕਣ ।

ਸ਼ਬਨਮਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ

ਸਰਕਾਰੀ ਕਾਲਜ, ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ
ਜ਼ੋਨ - ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ - 'ਬੀ'

ਯੁਵਕ ਕਿਉਂ ਬਣਦੇ ਹਨ ਗੈਂਗਸਟਰ ?

‘ਸਾਂਭ ਲਵੋ ਪੰਜਾਬੀਓ ਆਪਣੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ’

ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦੇ ਹਾਂ ਅਤੇ ਸਾਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਬਾਰੇ ਵੀ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਬਹਾਦਰ, ਮਿਲ-ਜੁਲ ਕੇ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਅਣਖੀਲੇ ਸੁਭਾਅ ਦੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ । ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਤੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ

ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਤੋਂ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਖ਼ਤਰਿਆਂ ਤੋਂ ਬਚਾਇਆ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੀ ਸ਼ਾਂਤੀ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰੱਖਿਆ ਹੈ ।

ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਅਸੀਂ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੇ ਹਲਾਤ ਦੇਖ ਰਹੇ ਹਾਂ ਕਿ ਅੱਜ ਦਾ ਨੌਜਵਾਨ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦਾ ਆਦੀ ਹੋ ਗਿਆ । ਨਸ਼ਿਆਂ ਕਾਰਨ ਉਹ ਅੰਦਰੋਂ ਖੋਖਲਾ ਹੋ ਗਿਆ

ਹੈ। ਦੂਜਾ ਕਾਰਨ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨ ਗੈਂਗਸਟਰ ਬਣਨ ਦੇ ਸ਼ੌਕੀਨ ਹੋ ਗਏ ਹਨ। ਦੇਖਣ ਵਿੱਚ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਅੱਜ ਦੇ ਛੋਟੇ-ਛੋਟੇ ਬੱਚੇ ਵੀ ਗੈਂਗਸਟਰ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਸਲਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਤਸਵੀਰਾਂ ਕਰਵਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਵਿੱਚ ਹੀ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਗੈਂਗਸਟਰ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਰਹਿਣਾ ਪਸੰਦ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਉਹ ਗੈਂਗਸਟਰਾਂ ਦੀਆਂ ਆਦਤਾਂ ਜਿਵੇਂ ਗੈਂਗਸਟਰਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬੋਲਣਾ, ਲੜਾਈਆਂ ਕਰਨੀਆਂ, ਉੱਠਣਾ-ਬੈਠਣਾ, ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਕਰਨੀ, ਆਪਣੇ ਦੋਸਤਾਂ ਨਾਲ ਟੋਲੀਆਂ ਬਣਾ ਕੇ ਫਿਰਨਾ, ਲੜਾਈਆਂ ਦੇ ਬਹਾਨੇ ਲੱਭਣੇ, ਗੋਲੀਆਂ ਚਲਾਉਣੀਆਂ ਅਤੇ ਕੁੱਟ-ਮਾਰ ਕਰਨੀ ਆਦਿ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਫਿਰ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਵੱਡੇ ਗੈਂਗਸਟਰ ਬਣ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਸਥਿਤੀਆਂ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਮਾਹੌਲ ਨੂੰ ਖਰਾਬ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ।

ਨੌਜਵਾਨ ਵਰਗ ਨੂੰ ਗੈਂਗਸਟਰ ਬਣਨ ਦੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਵੱਲ ਲੈ ਕੇ ਜਾਣ ਦਾ ਵੱਡਾ ਕਾਰਨ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਹੈ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੁਆਰਾ ਦਿਖਾਏ ਜਾਂਦੇ ਗੈਂਗਸਟਰਾਂ ਅਤੇ ਹਥਿਆਰਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਫਿਲਮਾਂ ਅਤੇ ਗੀਤ ਨੌਜਵਾਨ ਵਰਗ ਨੂੰ ਗੈਂਗਸਟਰ ਬਣਨ ਲਈ ਬੇਹੱਦ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਅਕਸਰ ਅਸੀਂ ਵੇਖਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਜੋ ਵਿਖਾਇਆ ਅਤੇ ਸਿਖਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਉਹ ਉਸਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਜਲਦੀ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਧਰਮਾਂ ਦੇ ਨਾਂ 'ਤੇ ਲੜਾਈਆਂ ਕਰਵਾਈਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸਦਾ ਇੱਕ ਹੋਰ ਕਾਰਨ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਬੇਰੁਜ਼ਗਾਰੀ, ਮਹਿੰਗਾਈ, ਰਿਸ਼ਵਤਖੋਰੀ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਅਤੇ ਅਨਿਆਂ ਵੀ ਹੈ। ਪੜ੍ਹੇ ਲਿਖੇ ਨੌਜਵਾਨ ਵਰਗ ਨੂੰ ਮਿਹਨਤ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਜਦੋਂ ਨੌਕਰੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ ਤਾਂ ਘਰ-ਨਿਰਬਾਹ ਦੀ ਖਾਤਰ ਕਈ ਨੌਜਵਾਨ ਰਸਤੇ ਤੋਂ ਭਟਕ ਕੇ ਲੁੱਟਾ ਖੋਹਾਂ ਤੇ ਨਸ਼ਿਆਂ ਦੇ ਆਦੀ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦਾ ਇੱਕ ਹੋਰ ਵੱਡਾ ਕਾਰਨ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਅਸਲੇ ਤੇ ਹਥਿਆਰਾਂ ਦੀ ਖਰੀਦ-ਵੇਚ ਅਤੇ ਵਰਤੋਂ ਉੱਪਰ ਕੋਈ ਰੋਕ ਜਾਂ ਪਾਬੰਦੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਇੱਕ ਨੌਜਵਾਨ ਦੇ ਗੈਂਗਸਟਰ ਬਣਨ ਕਾਰਨ ਕੇਵਲ ਗੈਂਗਸਟਰ ਬਣਿਆ ਨੌਜਵਾਨ ਹੀ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਇਸ ਤੋਂ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਪੂਰਾ ਸਮਾਜ ਹੀ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪੈਸਿਆਂ ਦੀ ਖਾਤਰ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਦੇ ਕਤਲ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਅਜਿਹੇ ਮਾਹੌਲ ਕਾਰਨ ਅਕਸਰ ਅਸੀਂ ਅਜਿਹੀਆਂ ਖ਼ਬਰਾਂ ਨਿੱਤ ਦਿਹਾੜੇ ਪੜ੍ਹਦੇ ਤੇ ਸੁਣਦੇ ਹਾਂ:-

- * ਪੈਸਿਆਂ ਦੀ ਖਾਤਰ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਦੇ ਕਤਲ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ।
- * 5 ਬੰਦਿਆਂ ਨੇ ਇੱਕ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਡਰਾ ਧਮਕਾ ਕੇ ਉਸਦੇ ਕੋਲੋਂ ਸਾਰੇ ਰੁਪਏ ਖੋ ਲਏ।
- * ਇੱਕ ਨੌਜਵਾਨ ਨੇ ਗੁੱਸੇ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਆਪਣੇ ਸਾਥੀ ਦਾ ਕਤਲ ਕੀਤਾ।
- * 5-7 ਮੁੰਡਿਆਂ ਨੇ ਕੀਤੀ ਆਪਣੇ ਕਾਲਜ ਅਧਿਆਪਕ ਨੂੰ ਧਮਕਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼।

ਪੰਜਾਬ ਅੰਦਰ ਵਾਪਰ ਰਹੀਆਂ ਡਰਾਉਣੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਕਾਰਨ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਅੰਦਰ ਸਹਿਮ (ਡਰ) ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਪੈਦਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਮਾਂ-ਪਿਉ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਘਰ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਜਾਂ ਫਿਰ ਉੱਚ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਦੂਰ ਭੇਜਣ ਤੋਂ ਵੀ ਡਰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਕਿਧਰੇ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਬੱਚਾ ਗਲਤ ਸੰਗਤ ਵਿੱਚ ਪੈ ਕੇ ਗੈਂਗਸਟਰ ਹੀ ਨਾ ਬਣ ਜਾਵੇ। ਦੇਸ਼ ਅੰਦਰ ਚਿੰਤਾਵਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣੀਆਂ ਇਹਨਾਂ ਗੱਲਾਂ ਉੱਪਰ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਦੇਣ ਦੀ ਸਖ਼ਤ ਲੋੜ ਹੈ।

ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਦੇ ਲਈ ਵੱਖੋ ਵੱਖ ਸਖ਼ਤ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਾਉਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿ ਕੋਈ ਵੀ ਵਿਅਕਤੀ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਤੋੜ ਨਾ ਸਕੇ। ਜੇ ਫਿਰ ਵੀ ਕੋਈ ਕਾਨੂੰਨ ਤੋੜਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਸਖ਼ਤ ਤੋਂ ਸਖ਼ਤ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਕਿ ਕੋਈ ਇਹਨਾਂ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਨੂੰ ਤੋੜਨ ਦੀ ਜ਼ੁਰਅਤ ਨਾ ਕਰ ਸਕੇ।

ਜੇ ਗੀਤ ਜਾਂ ਫਿਲਮਾਂ ਹਥਿਆਰਾਂ ਅਤੇ ਗੈਂਗਸਟਰਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਬਣਾਈਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਉੱਪਰ ਰੋਕ ਲਗਾਈ ਜਾਵੇ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਅਤੇ ਮੀਡੀਆ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰੱਖਿਆ ਜਾਵੇ। ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਸਫਲ ਹੋਣ ਅਤੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜੀਉਣ ਦਾ ਢੰਗ ਸਿਖਾਉਣ ਲਈ ਵੱਖੋ-ਵੱਖਰੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਅਤੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਕਰਵਾਉਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਗਲਤ ਰਸਤਿਆਂ ਵੱਲ ਜਾਣ ਦੀ ਬਜਾਏ ਆਪਣੀ ਸਖ਼ਸ਼ੀਅਤ ਨੂੰ ਨਿਖਾਰਨ ਵੱਲ ਜਾਵੇ।

ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਬੇਰੁਜ਼ਗਾਰ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਦੇਵੇ ਤਾਂ ਜੋ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਮੁੱਲ ਪੈ ਜਾਵੇ। ਇਸ

ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਉਹ ਹਥਿਆਰਾਂ ਨੂੰ ਤਿਆਗ ਕੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਸੁਧਾਰਨ ਅਤੇ ਵਿਕਾਸ ਵੱਲ ਲੈ ਕੇ ਜਾਣ ਲਈ ਕਦਮ ਤੇ ਕਲਮ ਚੁੱਕ ਸਕਣ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਨੂੰ ਸਹੀ ਰਸਤੇ ਵੱਲ ਲੈ ਕੇ ਜਾਣ ਲਈ ਮਾਂ-ਬਾਪ, ਅਧਿਆਪਕ, ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਖੁਦ ਵੀ ਆਪਣਾ ਬਣਦਾ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

‘ਬਰਬਾਦ ਨਾ ਕਰਿਓ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਨੂੰ’
ਸਾਂਭ ਲਵੋ ਪੰਜਾਬੀਓ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਮਾਣ ਨੂੰ।’

ਜਗਰਾਜ ਸਿੰਘ

ਐੱਸ. ਸਰਕਾਰੀ ਕਾਲਜ ਆਫ
ਸਾਇੰਸ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਐਂਡ ਰਿਸਰਚ, ਜਗਰਾਉਂ
ਜ਼ੋਨ - ਮੋਗਾ-ਫਿਰੋਜ਼ਪੁਰ - ‘ਏ’

ਜੀਵਨ ਇੱਕ ਸੰਘਰਸ਼ ਹੈ

ਜੀਵਨ ਸ਼ਬਦ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਹੀ ਡੂੰਘੇ ਅਰਥ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਇਸਨੂੰ ਤੋੜ ਕੇ ਦੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ‘ਜੀ+ਵਨ’ ਤੋਂ ਭਾਵ ਹੈ ਮਨ ਅਤੇ ਵਨ। ਜਿਸ ਤੋਂ ਭਾਵ ਹੈ ਰੂਹ (ਮਨ) ਦਾ ਬਗੀਚਾ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਇਸ ਸੁੰਦਰ ਬਗੀਚਾ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ ਹੈ ਭਾਵ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਜਿਊਣਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਸੰਘਰਸ਼ ਅਤੇ ਅਣਥੱਕ ਮਿਹਨਤ ਵੀ ਕਰਨੀ ਪਏਗੀ। ਉਸ ਦੇ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਮਨ ਨੂੰ ਇਕ ਥਾਂ ‘ਤੇ ਇਕਾਗਰ ਕਰਨਾ ਪਵੇਗਾ। ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਲਿਖਿਆ ਹੈ, ‘ਮਨ ਜੀਤੇ ਜਗ ਜੀਤ’। ਪਰ ਮਨ ਨੂੰ ਜਿੱਤਣ ਲਈ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਕਿਸੇ ਮਹਾਨ ਵਿਆਕਤੀ ਦੇ ਜੀਵਨ ਉੱਪਰ ਝਾਤ ਮਾਰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਉਸ ਦੀ ਮਹਾਨਤਾ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਸ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼ਮਈ ਜੀਵਨ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰ ਰਹੇ ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ। ਆਜ਼ਾਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਵਿੱਚ ਅਸੀਂ ਦੇਖਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਡੇ ਪੁਰਖਿਆਂ ਨੇ ਵੀ ਜਾਨਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਵਾਹ ਨਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੁਆਰਾ ਆਜ਼ਾਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀ। ਜੇਕਰ ਦੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਜੀਵਨ ਨਿਰਬਾਹ ਲਈ ਜਿੰਦਗੀ ਦੇ ਹਰ ਪੜਾਅ ‘ਤੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਲਈ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ‘ਜਿੰਦਗੀ ਕੋਈ ਫੁੱਲਾਂ ਦੀ ਸੇਜ ਨਹੀਂ’। ਪਰੰਤੂ ਇਸ ਨੂੰ ਅਣਥੱਕ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ ਫੁੱਲਾਂ ਦੀ ਸੇਜ ਬਣਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਇੱਕ ਹੀ ਸਿੱਕੇ ਦੇ ਦੋ ਪਹਿਲੂ ਹਨ ਕਿਉਂਕਿ ਜੀਵਨ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸੰਘਰਸ਼ ਚਲਦਾ ਹੈ ਤੇ

ਇਹੋ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਖ਼ਤਮ (ਮੌਤ) ਹੋਣ ‘ਤੇ ਹੀ ਖ਼ਤਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਦੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਮਨੁੱਖ ਦੀਆਂ ਇੱਛਾਵਾਂ, ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਅਤੇ ਮਜ਼ਬੂਰੀਆਂ ਮਨੁੱਖੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੀ ਰਫ਼ਤਾਰ ਨੂੰ ਵਧਾਉਣ ਲਈ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਸਫ਼ਲਤਾ ਦੀਆਂ ਬੁਲੰਦੀਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਛੂੰਹਦਾ ਹੈ। ਸਾਬਕਾ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਏ.ਪੀ.ਜੇ ਅਬਦੁੱਲ ਕਲਾਮ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸੰਘਰਸ਼ ਕੀਤਾ। ਉਹ ਅਖ਼ਬਾਰ ਵੇਚ ਕੇ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਮਿਹਨਤ, ਇੱਛਾ-ਸ਼ਕਤੀ ਅਤੇ ਲਗਨ ਆਦਿ ਦੇ ਸਦਕਾ ਉਹ ਨਾ ਕੇਵਲ ਸਾਇੰਸਦਾਨ ਹੀ ਬਣੇ ਬਲਕਿ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਵੀ ਬਣੇ।

ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਕੁਝ ਵੀ ਬਣਿਆ ਬਣਾਇਆ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ। ਕਿਸੇ ਚਾਜ਼ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਲਗਾਤਾਰ ਮਿਹਨਤ ਕਰਨੀ ਪੈਂਦੀ ਹੈ। ਇਤਿਹਾਸ ਗਵਾਹ ਹੈ ਕਿ ਮਿਹਨਤ ਅਤੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਹੀ ਇਤਿਹਾਸ ਰਚਿਆ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਭਗਤ ਸਿੰਘ, ਸੁਖਦੇਵ, ਰਾਜਗੁਰੂ, ਲਾਲਾ ਲਾਜਪਤ ਰਾਏ ਤੇ ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ ਆਦਿ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਪਿਆਰ ਦੀ ਖ਼ਾਤਰ ਨਿਰਸਵਾਰਥ ਸੰਘਰਸ਼ ਕੀਤਾ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇਸ਼ ਭਗਤਾਂ ਨੇ ਇੱਕ ਅਜਿਹੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀ ਸੀ ਜਿਸ ਨਾਲ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਪੀੜ੍ਹੀਆਂ ਨੂੰ ਬੁਰੇ ਹਲਾਤਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਨਾ ਗੁਜ਼ਰਨਾ ਪਏ। ਪਰ ਦੇਸ਼ ਚਲਾਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਅਜੋਕੀਆਂ ਸਰਕਾਰਾਂ ਨੇ ਅਜਿਹੇ ਹਲਾਤ ਪੈਦਾ ਕਰ ਦਿੱਤੇ ਹਨ ਕਿ

ਲੋਕ ਅੱਜ ਵੀ ਵੱਡੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨਾਲ ਜੂਝ ਰਹੇ ਹਨ।

ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਿ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਦੇ ਦੋ ਪਹਿਲੂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਹਾਂ-ਪੱਖੀ ਅਤੇ ਨਾਂਹ-ਪੱਖੀ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜੀਵਨ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਵੀ ਦੋ ਪੱਖ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਜੀਵਨ ਸੰਘਰਸ਼ ਦਾ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਪੱਖ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਵਿਅਕਤੀ ਕਦੇ ਵੀ ਆਲਸੀ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ, ਹਮੇਸ਼ਾ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਾਲਾ, ਗਿਆਨਵਾਨ, ਬੁੱਧੀਮਾਨ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਸੋਚ ਦਾ ਮਾਲਿਕ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਜੀਵਨ ਸੰਘਰਸ਼ ਸਮੇਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਨਵੇਂ ਅਨੁਭਵ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਉਸਦੇ ਜੀਵਨ ਸੰਘਰਸ਼ ਸਮੇਂ ਸਹਾਈ ਸਿੱਧ ਹੋ ਕੇ ਉਸ ਦੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਉਮੀਦ ਦੇ ਨਾਲ ਭਰ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਉਹ ਆਪਣੇ ਮਿੱਥੇ ਟੀਚੇ ਵੱਲ ਲਗਾਤਾਰ ਵਧਦਾ ਸਫਲਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਹੀ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਇਹ ਅਕਸਰ ਹੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸੰਘਰਸ਼ ਭਾਵ ਮਿਹਨਤ ਰੰਗ ਲੈ ਆਈ। ਜੀਵਨ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਪੱਖਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਇਸਦੇ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਪੱਖ ਵੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਕਈ ਵਾਰ ਅਸੀਂ ਦੇਖਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਜੀਵਨ ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਦਾ-ਕਰਦਾ ਮਨੁੱਖ ਥੱਕ-ਹਾਰ ਕੇ ਅਤੇ ਨਾ ਉਮੀਦ ਹੋ ਕੇ ਕਈ ਗਲਤ ਰਸਤੇ ਅਖਤਿਆਰ

ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਕਈ ਵਾਰ ਉਹ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜਿਉਣ ਦੀ ਉਮੀਦ ਗਵਾ ਕੇ ਆਤਮ ਹੱਤਿਆ ਕਰਨ ਤੱਕ ਦਾ ਰਸਤਾ ਅਪਣਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਅਜਿਹਾ ਕਰਨ ਦੀ ਬਜਾਏ ਹਿੰਮਤ ਅਤੇ ਹੌਸਲੇ ਤੋਂ ਕੰਮ ਲੈਂਦੇ ਹੋਏ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਮੈਂ ਇਹੀ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹਾਂਗੀ ਕਿ ਬੇਸ਼ੱਕ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਕ ਸੰਘਰਸ਼ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਸਬਰ, ਸੰਤੋਖ, ਮਿਹਨਤ, ਲਗਨ ਅਤੇ ਹੌਸਲੇ ਨਾਲ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦਿਆਂ, ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਅੱਗੇ ਵੱਧਦੇ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਹੌਸਲੇ ਤੇ ਹਿੰਮਤ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਮਿੱਥੇ ਹੋਏ ਟੀਚੇ ਉੱਤੇ ਕੰਮ ਕਰਦੇ-ਕਰਦੇ ਸਫਲਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਸਾਡੇ ਇਸ ਸੰਘਰਸ਼ ਅਤੇ ਮਿਹਨਤ ਨੂੰ ਸੁੱਖ ਦਾ ਫਲ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਲਈ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ : -"ਅੱਜ ਦੀ ਮਿਹਨਤ (ਸੰਘਰਸ਼) ਕੱਲ ਦਾ ਸੁੱਖ"

ਮਨਜਿੰਦਰ ਕੌਰ

ਜੀ.ਜੀ.ਐਸ. ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ ਆਫ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ,
ਕਮਾਲਪੁਰ, ਲੁਧਿਆਣਾ
ਜ਼ੋਨ - ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ - 'ਬੀ'

ਨੌਜਵਾਨ ਅਤੇ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ

**ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਨੇ ਬਦਲੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਢੰਗ,
ਕੀ ਬਦਲ ਰਹੇ ਹਨ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੇ ਵੀ ਰੰਗ ?**

ਜਿਵੇਂ ਜਿਵੇਂ ਮਨੁੱਖ ਤਰੱਕੀ ਦੇ ਰਾਹ 'ਤੇ ਅੱਗੇ ਵੱਧਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਵੀ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਨਵੀਆਂ ਕਾਢਾਂ ਅਤੇ ਤਕਨੀਕਾਂ ਸ਼ਾਮਲ ਹੁੰਦੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਵੀ ਹੈ। 22ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਇਸ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਜੇਕਰ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਨੂੰ ਬੇਦਖਲ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਦੁਨੀਆਂ ਅੱਧੀ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਵਿਗਿਆਨ ਦੀਆਂ ਬਾਕੀ ਕਾਢਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਵੀ

ਪੂਰੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਹਰ ਪਾਸੇ ਆਪਣੇ ਪੈਰ ਪਸਾਰ ਚੁੱਕਾ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਸਾਧਨਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਨੁੱਖ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਤੋਂ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਚਲਾਉਣ ਦਾ ਸਹਾਰਾ ਲੱਭਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਵੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਸਿੱਧੀ ਜਾਂ ਅਸਿੱਧੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਕਾਰਜਾਂ ਵਿਚ ਸਾਡੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆ ਖੜ੍ਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਇਹ ਕਹਿ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਕਿ ਅੱਜ ਦਾ ਮਨੁੱਖ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਅਧੂਰਾ ਹੈ ਤਾਂ ਕੋਈ ਅਤਿਕਥਨੀ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ।

ਜੇਕਰ ਗੱਲ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਉਮਰ ਵਰਗ ਦੀ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਅੱਜ ਦੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦਾ ਇਸ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਰੁਝਾਨ ਹੈ। ਅੱਜ ਦੀ ਸਦੀ ਦੇ

ਬੱਚੇ-ਬੱਚੇ ਕੋਲ ਮੋਬਾਇਲ ਦੀ ਸਹੂਲਤ ਹੈ, ਜੋ ਕਿ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨੂੰ ਵਧਾਉਣ ਲਈ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ ਹੈ। ਜਾਣੇ-ਅਣਜਾਣੇ ਹਰ ਸ਼ਖ਼ਸ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਦਲਦਲ ਵਿੱਚ ਫਸਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਰ ਇਸ ਵਿਸ਼ੇ ਉੱਪਰ ਕੋਈ ਵੀ ਸੋਚਣ, ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਜਾਂ ਗੱਲ ਕਰਨ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਵਿਸ਼ੇ ਉੱਪਰ ਗੱਲ ਕਰਨ ਅਤੇ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਬੋਲਣ ਲਈ ਵੀ ਇੱਕ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ। ਪਰ ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਅਜਿਹਾ ਵਿਅਕਤੀ ਲੱਭਣਾ ਸਮੁੰਦਰ ਵਿੱਚੋਂ ਮੋਤੀ ਲੱਭਣ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਾਰਨਾਂ ਕਰਕੇ ਅੱਜ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਘਰ-ਘਰ ਵਿੱਚ ਫੈਲ ਚੁੱਕੀਆਂ ਹਨ।

ਜਿਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਖਿੱਚਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਇਸ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਜੇਕਰ ਇਸ ਨੂੰ ਇੱਕ ਦਲਦਲ ਵਜੋਂ ਵੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਇਸ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਗਲਤ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪੈਰ ਘਰ ਘਰ ਪਸਾਰੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਸ ਦੀਆਂ ਕਈ ਐਪਲੀਕੇਸ਼ਨ ਜਿਵੇਂ ਫੇਸਬੁੱਕ, ਇੰਸਟਾਗ੍ਰਾਮ, ਵਟਸਐਪ ਆਦਿ ਅੱਜ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੇ ਪੈਰਾਂ ਵਿੱਚ ਜ਼ੰਜੀਰਾਂ ਵਾਂਗ ਪਈਆਂ ਹੋਈਆਂ ਹਨ। ਇਹ ਵੀ ਭੈੜਾ ਸੱਚ ਹੈ ਕਿ ਅੱਜ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਬਿਨਾਂ ਰੁਜ਼ਗਾਰ ਦੇ ਤਾਂ ਵੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰ ਬਿਨਾਂ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਸ਼ਾਇਦ ਹੀ ਕੋਈ ਵਿਰਲਾ ਇਨਸਾਨ ਟੱਕਰੇ। ਕਈ ਵਾਰ ਅਜਿਹੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਵੀ ਸੁਣਨ ਨੂੰ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ ਕਿ ਜਿੱਥੇ ਪਾਣੀ ਦੀ ਕਮੀ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਦੀ ਕਮੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਲੋਕ ਪਹਿਲਾਂ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਦੀ ਕਮੀ ਦੂਰ ਕਰਨ ਲਈ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨਗੇ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਹ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸ ਹੱਦ ਤੱਕ ਅੱਜ ਦਾ ਨੌਜਵਾਨ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਅਤੇ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦਾ ਗੁਲਾਮ ਹੋ ਚੁੱਕਾ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਇਹ ਗੁਲਾਮੀ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ੀ ਨਾਲ ਕਬੂਲ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਕਰਦਾ ਵੀ ਰਹੇਗਾ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਅੱਜ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣੀ ਕੈਦ ਵਿੱਚ ਲੈ ਚੁੱਕਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਇੱਕ ਨਸ਼ੇ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਲੱਗ ਚੁੱਕਾ ਹੈ। ਇਹ ਇੱਕ ਅਜਿਹਾ ਨਸ਼ਾ ਹੈ ਜਿਸਦਾ ਇਲਾਜ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਕਿਸੇ ਨਸ਼ਾ ਛੁਡਾਉ ਕੇਂਦਰ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਣ ਦਾ ਵੀ ਸ਼ਾਇਦ ਕੋਈ ਰਾਹ ਨਹੀਂ ਹੈ।

ਜਿੱਥੇ ਅੱਜ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਗਲਤ ਉਪਯੋਗ ਨਾਲ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਅਸਲੀ ਮਕਸਦ ਤੋਂ ਭਟਕ ਰਹੇ ਹਨ, ਉੱਥੇ ਹੀ ਕਈ ਸੂਝਵਾਨ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੇ ਇਸਦੇ ਸਹੀ ਉਪਯੋਗ ਨਾਲ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਆਬਾਦ ਵੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦਾ ਦੂਜਾ ਅਤੇ ਚੰਗਾ ਪੱਖ ਵੀ ਸਾਡੇ ਤੋਂ ਛੁਪਿਆ ਨਹੀਂ ਹੈ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਦੁਰਵਰਤੋਂ ਕਾਰਨ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਇੱਕ ਵੱਡਾ ਵਰਗ ਜਿੱਥੇ ਆਪਣੀਆਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀਆਂ ਰੋਲ ਰਿਹਾ ਹੈ ਉੱਥੇ ਕਈ ਸੂਝਵਾਨ ਵਰਗ ਨੇ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਸਹੀ ਉਪਯੋਗ ਦੁਆਰਾ ਤਰੱਕੀ ਦੀਆਂ ਸਿਖਰਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਛੋਹਿਆ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਨਾਂ 'ਸੁੰਦਰ ਪਿਚਾਈ' ਦਾ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਹੜੇ ਅੱਜ ਗੂਗਲ ਵਰਗੀ ਵੱਡੀ ਕੰਪਨੀ ਦੇ ਸੀ.ਈ.ਓ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਹੇਠ ਕਈ ਐਪਸ ਕੰਮ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਆਉਣ ਨਾਲ ਬੇਰੁਜ਼ਗਾਰੀ ਦੀ ਦਰ ਵਿਚ ਵੀ ਕਮੀ ਆਈ ਹੈ ਕਈ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਧੰਦੇ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਹੀ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਤੋਂ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਉਹ ਆਪਣੀ ਬੁੱਧੀ ਅਤੇ ਮਿਹਨਤ ਸਦਕਾ ਵਧੀਆ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਤੀਤ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਪਰ ਇਸ ਕੌੜੀ ਸੱਚਾਈ ਨੂੰ ਵੀ ਨਹੀਂ ਭੁੱਲਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਕਿ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਹਰ ਸਾਲ ਕਈ ਮਾਸੂਮਾਂ ਦੀਆਂ ਜਾਨਾਂ ਵੀ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।

ਮੁੱਕਦੀ ਗੱਲ ਹੈ ਕਿ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਅੱਜ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਲਈ ਵਰਦਾਨ ਅਤੇ ਸਰਾਪ ਦੋਵੇਂ ਹੈ। ਹੁਣ ਇਸ ਨੂੰ ਸਰਾਪ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਲੈਣਾ ਹੈ ਜਾਂ ਵਰਦਾਨ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ। ਇਹ ਸਾਡੀ ਨੌਜਵਾਨ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦੀ ਹੀ ਸੋਚ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇੱਕ ਸਿੱਕੇ ਦੇ ਦੋ ਪਾਸਿਆਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਵੀ ਚੰਗੇ ਤੇ ਮਾੜੇ ਦੋਵੇਂ ਪੱਖ ਹਨ। ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ ਤਾਂ ਬਸ ਇੱਕ ਅਜਿਹੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਜੋ ਇਸ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਰੂਪੀ ਸਿੱਕੇ ਨੂੰ ਉਛਾਲ ਕੇ ਸਹੀ ਪਾਸੇ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਵਿੱਚ ਕਰ ਲਵੇ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਸਫਲਤਾ ਦੇ ਖੰਭ ਲਗਾ ਲਵੇ।

ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ

ਜੀ. ਜੀ. ਐਨ. ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ, ਲੁਧਿਆਣਾ
ਜ਼ੋਨ - ਲੁਧਿਆਣਾ - 'ਏ'

ਘਰ

ਸਤੰਬਰ ਦੇ ਮਹੀਨੇ 'ਚ ਪੰਜ ਸਾਲ ਬਾਅਦ ਜੱਗੀ ਕਨੇਡਾ ਤੋਂ ਪਿੰਡ ਵਾਪਿਸ ਆਇਆ। ਕਨੇਡਾ ਵਿੱਚ ਪੱਕਾ ਹੋ ਕੇ ਵਾਪਿਸ ਆਏ ਜੱਗੀ ਦਾ ਧੂਮ-ਧਾਮ ਨਾਲ ਸਵਾਗਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਹਰ ਕੋਈ ਜੱਗੀ ਤੇ ਉਹਦੇ ਘਰਦਿਆਂ ਨੂੰ ਵਧਾਈਆਂ ਦੇਣ ਆਉਂਦਾ। ਚਾਰ ਪੰਜ ਦਿਨ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਘਰ ਆਇਆ ਗਿਆ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਰੋਣਕਾਂ ਲੱਗੀਆਂ ਰਹੀਆਂ। ਜਦ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਆਉਣਾ ਜਾਣਾ ਘਟਿਆ ਤਾਂ ਜੱਗੀ ਨੇ ਥੋੜਾ ਅਰਾਮ ਦਾ ਸਾਹ ਭਰਿਆ ਤੇ ਘੁੰਮਣ ਦੀਆਂ ਤਿਆਰੀਆਂ ਵਿੱਚ ਰੁੱਝ ਗਿਆ। ਕੁਝ ਕੁ ਦਿਨ ਬਾਅਦ ਜੱਗੀ ਨੂੰ ਚੇਤਾ ਆਇਆ ਕਿ ਉਸਦੇ ਬਚਪਨ ਦਾ ਮਿੱਤਰ ਹੈਰੀ ਉਸਨੂੰ ਮਿਲਣ ਨਹੀਂ ਆਇਆ। ਉਸਦੇ ਅਤੇ ਹੈਰੀ ਦੇ ਪਿਤਾ ਵੀ ਕਾਫੀ ਚੰਗੇ ਮਿੱਤਰ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਇਕੱਠੇ ਉੱਠਣਾ ਬੈਠਣਾ ਸੀ।

ਜੱਗੀ ਸੋਚਾਂ ਵਿੱਚ ਪੈ ਗਿਆ ਕਿ ਹੈਰੀ ਦੇ ਘਰੋਂ ਕੋਈ ਵੀ ਜੱਗੀ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਕਿਉਂ ਨਾ ਆਇਆ ਥੋੜਾ ਸੋਚਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਸਨੇ ਕੁਝ ਦਿਨ ਰੁਕਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ। ਦੋ ਦਿਨ ਬੀਤੇ ਤੇ ਹੈਰੀ ਘਰੋਂ ਕੋਈ ਨਾ ਆਉਣ ਤੇ ਜੱਗੀ ਨੇ ਹੈਰੀ ਦੇ ਘਰ ਜਾਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ। ਜੱਗੀ ਹੈਰੀ ਦੇ ਘਰ ਪਹੁੰਚਿਆ ਤਾਂ ਉੱਥੇ ਬਾਹਰ। “ਇਹ ਮਕਾਨ ਵਿਕਾਊ।” ਲਿਖਿਆ ਦੇਖ ਜੱਗੀ ਇਕਦਮ ਹੈਰਾਨ ਹੋ ਗਿਆ ਤੇ ਕੁੱਝ ਚਿਰ ਉੱਥੇ ਹੀ ਪੱਥਰ ਵਾਂਗ ਖੜਾ ਰਿਹਾ।

ਡਰਦੇ—ਡਰਦੇ ਘਰ ਦੀ ਘੰਟੀ ਵਜਾਈ ਤਾਂ ਪੰਜ ਕੁ ਮਿੰਟ ਬਾਅਦ ਅੰਦਰੋਂ ਚਿੱਟੇ ਕੁੜਤੇ ਪਜਾਮੇ ਵਿੱਚ ਉਮਰੋਂ ਬਹੁਤ ਸਿਆਣਾ ਇੱਕ ਬਾਬਾ ਆਇਆ। ਜੱਗੀ ਦੇਖ ਹੈਰਾਨ ਸੀ ਕਿ ਇਹ ਤਾਂ ਹੈਰੀ ਦੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਨੇ।

“ਕੌਣ ਆ ਭਾਈ ਬਾਬੇ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਝਪਕਾਉਂਦੇ ਪੁੱਛਿਆ।

“ਘਰ ਦੇਖਣ ਆਏ ਓ ” ਅੱਖਾਂ ਤੇ ਮੋਟੇ ਮੋਟੇ ਸ਼ੀਸ਼ਿਆ ਵਾਲਾ ਚਸ਼ਮਾਂ ਲਗਾਉਂਦੇ ਬਾਬੇ ਨੇ ਕਿਹਾ।

ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਜੱਗੀ ਨੂੰ ਹੈਰੀ ਦੇ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਬਾਪੂ ਕਹਿਣ ਦੀ ਆਦਤ ਸੀ

ਜੱਗੀ ਨੇ ਆਪਣਾ ਚੇਤਾ ਕਰਾਉਂਦਿਆ ਕਿਹਾ, “ਬਾਪੂ ਮੈਂ ਹਾਂ.....ਮੈਂ..... ਜੱਗੀ।”

“ਜੱਗੀ ਤੂੰ ਤਾਂ ਭਾਈ ਕਨੇਡਾ ਨਹੀਂ ਸੀ।” ਬਾਬੇ ਨੇ ਥੋੜਾ ਧਿਆਨ ਦਿੰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ।

“ਹਾਂ ਬਾਪੂ ਮੈਂ ਹਫ਼ਤੇ ਕੁ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਪਿੰਡ ਮੁੜਿਆ ਹਾਂ। ਕਨੇਡਾ ਪੱਕਾ ਹਾਂ।”

“ਉਹ ਵਾਹ ਭਾਈ ਮੁਬਾਰਕਾਂ ਤੈਨੂੰ ” ਬਾਬੇ ਨੇ ਖੁਸ਼ ਹੁੰਦਿਆ ਕਿਹਾ।

“ਉਹ ਤਾਂ ਠੀਕ ਐ ਬਾਪੂ ਪਰ ਆਹ ਘਰ ਬਾਹਰ ਮਕਾਨ ਵੇਚਣ ਦਾ ਨੋਟਿਸ ਕਿਉਂ ਲਵਾਇਆ ਐਂ। ਤੁਸੀਂ ਘਰ ਵੇਚਣਾ ”

“ਹਾਂ ਪੁੱਤਰਾ, ਜੇ ਕਿਸੇ ਨੇ ਲੈਣਾ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਦੱਸੀਂ।”

“ਲੈ ਬਾਪੂ, ਮੇਰਾ ਡੈਡੀ ਦੱਸਦਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ ਕਿ ਸ਼ਿੰਦੇ ਦਾ ਘਰ ਹੀ ਇਸ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾਂ ਪੱਕਾ ਘਰ ਸੀ ਤੇ ਇਹ ਬਣਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ ਸਾਰਾ ਪਿੰਡ ਵੱਸਿਆ।”

ਗੱਲਾਂ ਮਾਰਦੇ ਮਾਰਦੇ ਜੱਗੀ ਤੇ ਬਾਬਾ ਅੰਦਰ ਬੈਠ ਗਏ।

“ਡੈਡੀ ਦੱਸਦਾ ਸੀ ਕਿ ਸ਼ਿੰਦੇ ਨੇ ਪੂਰੀਆਂ ਰੀਝਾਂ ਤੇ ਮਿਹਨਤ ਨਾਲ ਇਹ ਘਰ ਬਣਾਇਆ ਤਾਂ ਹੀ ਤਾਂ ਆਪਣਾ ਪਿੰਡ ਸੁੱਖੀ ਵੱਸਦਾ।”

“ਪੁੱਤਰਾ ਪਿੰਡ ਤਾਂ ਸੁੱਖੀ ਵੱਸਦਾ, ਪਰ ਘਰ ਨੀ ਨਾ।”

“ਕੀ ਹੋਇਆ ਬਾਪੂ ” ਜੱਗੀ ਨੇ ਹੈਰਾਨੀ ਨਾਲ ਪੁੱਛਿਆ।

“ਬੱਸ ਪੁੱਤਰਾਂ ਕੀ ਦੱਸਾਂ। ਤੇਰੇ ਜਾਣ ਮਗਰੋਂ ਹੈਰੀ ਤੇਰੇ ਘਰਦਿਆਂ ਤੋਂ ਸਾੜਾ ਕਰਨ ਲੱਗਾ ਤੇ ਉਸੇ ਨੇ ਵੀ ਬਾਹਰ ਜਾਣ ਦੀ ਰੱਟ ਲਗਾ ਲਈ। ਇਸ ਦੀ ਮੰਮੀ ਤੇ ਮੈਂ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਅਸੀਂ ਬਹੁਤ ਸਮਝਾਇਆ ਕਿ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਖੇਤਾਂ 'ਚ ਹੱਥ ਵਟਾਵੇ ਤਾਂ ਵੀ ਚੰਗੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਤੀਤ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਉਹ ਨਾ ਮੰਨਿਆ ਤੇ ਕਹਿਣ ਲੱਗਾ ਜੇਕਰ ਬਾਹਰ ਨਹੀਂ ਭੇਜਣਾ ਤਾਂ ਇਸ ਪਿੰਡ ਤੋਂ ਦੂਰ ਭੇਜਣ, ਮੈਨੂੰ ਇਸ ਪਿੰਡ ਚ ਘੁੱਟਣ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਉਹੀ ਪਿੰਡ ਜਿਸ 'ਚ ਸਾਰੇ ਪਿੰਡ ਵਾਸੀ ਤਾਂ ਸੁੱਖੀ ਵੱਸਦੇ ਨੇ। ਫਿਰ ਹੈਰੀ ਦੀ ਇੱਕ ਠੀਕ ਠਾਕ ਜਿਹੀ ਨੌਕਰੀ ਨਾਲ ਦੇ ਸ਼ਹਿਰ ਲੱਗ ਗਈ ਤੇ ਇਹ ਉੱਥੇ ਹੀ ਰਹਿਣ ਲੱਗਾ। ਨਾ ਹੀ ਸਾਨੂੰ ਕਦੇ ਫੋਨ ਕੀਤਾ ਨਾ ਹੀ ਕਦੇ ਖੁਦ ਮਿਲਣ

ਆਇਆ। ਜਿਵੇਂ ਸਾਨੂੰ ਭੁੱਲ ਹੀ ਗਿਆ ਹੋਵੇ। ਫਿਰ ਦੋ ਸਾਲ ਬਾਅਦ ਇੱਕ ਦਿਨ ਅਚਾਨਕ ਹੈਰੀ ਇੱਕ ਕੁੜੀ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲੈ ਕੇ ਆਇਆ ਤੇ ਕਹਿਣ ਲੱਗਾ। ਇਹ ਮੇਰੀ ਘਰਵਾਲੀ ਹੈ ਅਸੀਂ ਵਿਆਹ ਕਰ ਲਿਆ। ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਿਲਣ ਆਏ ਹਾਂ। ਮੇਰੇ ਤੇ ਹੈਰੀ ਦੀ ਮਾਂ ਦੇ ਤਾਂ ਪੈਰਾਂ ਥੱਲੋਂ ਜਿਵੇਂ ਜਮੀਨ ਈ ਖਿਸਕ ਗਈ ਹੋਵੇ। ਅਸੀਂ ਜਿਵੇਂ ਤਿਵੇਂ ਕਰ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਗਨ ਤੇ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਦਿੱਤਾ। ਗੱਲਾਂ ਗੱਲਾਂ ਵਿੱਚ ਹੈਰੀ ਆਪਣੇ ਹਿੱਸੇ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਨ ਲੱਗਾ। ਅਸੀਂ ਸਾਫ਼ ਇਨਕਾਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਉਹ ਇਹ ਘਰ ਲੈਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ, ਹੈਰੀ ਉਸ ਦਿਨ ਰੁੱਸ ਕੇ ਤੁਰ ਗਿਆ ਤੇ ਮੁੜ ਨਾ ਆਇਆ।”

ਜੱਗੀ ਬੜੇ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਸਭ ਸੁਣ ਰਿਹਾ ਸੀ। “ਫੇਰ ਬਾਪੂ ਹੁਣ ਤੂੰ ਕਿਉਂ ਘਰ ਵੇਚਣ ਲੱਗਾ”

“ਪਿਛਲੇ ਮਹੀਨੇ ਹੀ ਹੈਰੀ ਦੀ ਮਾਂ ਇਸ ਦੁਨੀਆਂ ਨੂੰ ਛੱਡ ਤੁਰ ਗਈ, ਮੇਰੇ ਲਈ ਤਾਂ ਬਸ ਉਹੀ ਇੱਕ ਸੀ ਇਸ ਦੁਨੀਆਂ 'ਚ। ਘਰ ਤਾਂ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ। ਹੁਣ ਇਹ ਘਰ ਨਹੀਂ ਬਸ ਮਕਾਨ ਹੈ। ਜਦ ਕੋਈ ਰਿਸ਼ਤਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਚਿਆ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਇਹ ਘਰ ਸੀ ਤਾਂ ਫਿਰ ਮਕਾਨ ਦੀ ਵੀ ਕੀ ਲੋੜ ਹੈ।”

ਏਨਾ ਕਹਿੰਦੇ ਬਾਪੂ ਜੀ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਭਰ ਲਈਆਂ। ਜੱਗੀ ਬਾਪੂ ਨੂੰ ਚੁੱਪ ਕਰਵਾਉਣ ਲੱਗਾ।

ਸੁਰਭੀ

ਏ.ਐੱਸ. ਕਾਲਜ, ਖੰਨਾ
ਅੰਤਰ-ਜ਼ੋਨਲ

ਤਲਾਸ਼

“ਅੱਜ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਫੇਰ ਗਲਤ ਹੀ ਹੋਊ ਕੁੱਝ” ਰਣਵੀਰ ਨੇ ਦੁੱਖੀ ਹੋ ਕੇ ਆਪਣੀ ਕੋਲ ਬੈਠੀ ਮਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ। ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਚੁੱਪ—ਚਾਪ ਉਹਦੀ ਗੱਲ ਸੁਣ ਰਹੀ ਸੀ ਜਿਵੇਂ ਇਹ ਉਸਦੀ ਇੱਕ ਆਦਤ ਜਿਹੀ ਬਣ ਚੁੱਕੀ ਹੋਵੇ। ਰਣਵੀਰ ਨੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਜੋ ਸੋਚਣਾ, ਸੋਚਣਾ ਉਹਨੇ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਹੀ ਸੀ, ਚਾਹੇ ਸਥਿਤੀ ਕੋਈ ਵੀ ਹੋਵੇ। ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਗੱਲ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨਾਉਣ ਦੀ ਵੀ ਹੋਣੀ ਤਾਂ ਵੀ ਉਸਨੇ ਜਿਵੇਂ ਤਿਵੇਂ ਉਸ ਵਿੱਚੋਂ ਦੁੱਖੀ ਹੋਣ ਦਾ ਕਾਰਨ ਲੱਭ ਹੀ ਲੈਣਾ। ਉਸਦੇ ਮਾਪੇ ਰਣਵੀਰ ਦੀ ਇਸ ਗੱਲ ਕਾਰਨ ਬਹੁਤ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਰਹਿੰਦੇ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਰਣਵੀਰ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣ ਦੀ ਲੱਖ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਪਰ ਉਹਦੇ ਕੰਨ ਤੇ ਜੂੰ ਨਾ ਸਰਕੀ। ਜਦ ਰਣਵੀਰ ਦੇ ਮਾਪੇ ਉਸਨੂੰ ਸਮਝਾਉਂਦਿਆਂ ਕਹਿੰਦੇ, “ਪੁੱਤ ਤੂੰ ਖੁਸ਼ ਰਹਿਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਿਆ ਕਰ, ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ ਤਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਹੈ, ਹੱਸ ਖੇਡ ਕੇ ਬਿਤਾਉਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।” ਤਾਂ ਰਣਵੀਰ ਅੱਗੋਂ ਸਵਾਲ ਕਰਦਾ ਕਿੱਧਰੋਂ ਮਿਲਣਗੀਆਂ ਭਲਾ ਇਹ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਤਾਂ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੁੱਖ ਹੀ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਕਿੱਧਰੋਂ ਲਿਆਵਾਂ

ਮੈਂ ਆਹ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਖੇੜੇ ਇਸ ਸਵਾਲ ਦਾ ਉੱਤਰ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਮਾਪਿਆਂ ਕੋਲ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਉਹ ਉਸ ਨੂੰ ਸਮਝਾ ਨਹੀਂ ਪਾ ਰਹੇ ਸਨ। ਪਰ ਉਹ ਕਰਦੇ ਵੀ ਤਾਂ ਕੀ ਕਰਦੇ ਕਿੰਨੇ ਯਤਨ ਕਰ ਚੁੱਕੇ ਸਨ ਪਰ ਸਭ ਅਸਫਲ। ਰਣਵੀਰ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਸੱਦਾ ਆਉਂਦਾ ਤਾਂ ਉਹ ਕਹਿੰਦਾ, “ਮੈਂ ਕੀ ਕਰਨਾ ਹੈ ਜਾ ਕੇ, ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਖਰਾਬ ਹੋਵੇਗਾ ਤੇ ਮੈਂ ਥੱਕ ਹੀ ਜਾਵਾਂਗਾ।” ਉਹਨੇ ਕਦੇ ਖੁਸ਼ ਨਹੀਂ ਸੀ ਰਹਿੰਦਾ ਪਰ ਭਾਲ ਉਸਨੂੰ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦੀ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਿਨੀਂ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸ਼ਹਿਰ ਦੇ ਲਾਗੇ ਇੱਕ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਬਹੁਤ ਹੀ ਮਹਾਨ ਸੰਤ ਆਇਆ। ਉਹ ਬਹੁਤ ਹੀ ਮੰਨੇ ਹੋਏ ਸੰਤ ਸਨ।

ਦੂਰੋਂ-ਦੂਰੋਂ ਲੋਕ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਨ ਆ ਰਹੇ ਸਨ। ਕਿਹਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਉਹ ਗਿਆਨ ਦਾ ਭੰਡਾਰ ਹਨ। ਹਰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਹਰ ਉਲਝਣ ਦਾ ਇਲਾਜ ਸੀ ਉਹਨਾਂ ਕੋਲ। ਰਣਵੀਰ ਦੇ ਮਾਪਿਆਂ ਨੇ ਵੀ ਸੰਤਾਂ ਬਾਰੇ ਸੁਣਿਆ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸੋਚਿਆ ਜਿੱਥੇ ਐਨਿਆਂ ਕੋਲੋਂ ਸਲਾਹ ਲਈ, ਇੱਕ ਵਾਰ ਹੋਰ ਕੋਸ਼ਿਸ਼

ਕਰਕੇ ਵੇਖ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਰਣਵੀਰ ਨੂੰ ਵੀ ਇਹ ਕਹਿ ਕੇ ਰਾਜੀ ਕਰ ਲਿਆ ਕਿ ਤੈਨੂੰ ਉੱਥੇ ਤੇਰੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਦੇ ਉੱਤਰ ਮਿਲ ਜਾਣਗੇ। ਇੱਕ ਨਵੀਂ ਉਮੀਦ ਉਸਦੇ ਮਾਪਿਆਂ ਅੰਦਰ ਜਾਗੀ ਸੀ, ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ ਉਹ ਆਪਣੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਖੁਸ਼ ਦੇਖ ਸਕਣ। ਰਣਵੀਰ ਨੂੰ ਵੀ ਇਹ ਆਸ ਸੀ ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ ਉਸਨੂੰ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਪਤਾ ਮਿਲ ਜਾਵੇਗਾ।

ਅਗਲੇ ਹੀ ਦਿਨ ਉਹ ਤਿੰਨੇ ਲਾਗਲੇ ਪਿੰਡ ਲਈ ਰਵਾਨਾ ਹੋ ਗਏ। ਹਰ ਪਾਸੇ ਸੰਤਾਂ ਦੀ ਜੈ ਜੈਕਾਰ ਹੋ ਰਹੀ ਸੀ। ਉਹਨਾਂ ਤਿੰਨਾਂ ਦੀ ਉਮੀਦ ਹੋਰ ਵੀ ਪੱਕੀ ਹੁੰਦੀ ਦਿਸ ਰਹੀ ਸੀ। ਜਦ ਉਹ ਉਸ ਸੰਤ ਕੋਲ ਗਏ ਤਾਂ ਰਣਵੀਰ ਦੇ ਮਾਪਿਆਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਸਮੱਸਿਆ ਉਹਨਾਂ ਅੱਗੇ ਰੱਖੀ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ, ‘ਮਹਾਰਾਜ, ਸਾਡਾ ਬੱਚਾ ਕਦੇ ਖੁਸ਼ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ, ਇਸਦੇ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਖੁਸ਼ੀ ਵੇਖਿਆਂ ਕਈ ਸਾਲ ਹੋ ਗਏ ਹਨ। ਇੰਨੇ ਵਿੱਚ ਰਣਵੀਰ ਵਿਚਕਾਰ ਟੋਕਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਬੋਲਿਆ, “ਬਾਬਾ ਜੀ ਮੈਂ ਖੁਸ਼ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਪਰ ਮੈਂ ਖੁਸ਼ ਰਹਾਂ ਕਿਵੇਂ ਦੁੱਖ ਕਦੇ ਮੇਰਾ ਖਹਿੜਾ ਨਹੀਂ ਛੱਡਦੇ ਤੇ ਕੋਈ ਮੇਰੀ ਗੱਲ ਸਮਝਣ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਕਿਵੇਂ ਮਿਲਣਗੀਆਂ ਇਹ ਖੁਸ਼ੀਆਂ” ਉਹ ਸੰਤ ਰਣਬੀਰ ਨਾਲ ਏਨੀਂ ਥੋੜ੍ਹੀ ਜਿਹੀ ਗੱਲ ਕਰਦਿਆਂ ਹੀ ਉਸਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਸਮਝ ਗਏ। ਉਹ ਬਹੁਤ ਹੀ ਅਰਾਮ ਨਾਲ ਬੋਲੇ, “ਬੇਟਾ ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਕੱਲ੍ਹ ਸ਼ਾਮ ਦੇ ਵੇਲੇ ਆਵੀਂ, ਤੈਨੂੰ ਤੇਰੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਦਾ ਉੱਤਰ ਵੀ ਮਿਲੇਗਾ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਰਾਜ ਵੀ।

ਰਣਵੀਰ ਨੂੰ ਅਜੇ ਵੀ ਇੰਝ ਲੱਗ ਰਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਉਸਨੂੰ ਕਦੇ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਰਸਤਾ ਨਹੀਂ ਲੱਭੇਗਾ। ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਉਹ ਆਥਣ ਸਮੇਂ ਸੰਤ ਕੋਲ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਚੱਲਣ ਲਈ ਆਖਿਆ। ਉਹ ਉਸਨੂੰ ਇੱਕ ਝੁੱਗੀ ਝੌਂਪੜੀ ਵਾਲੇ ਇਲਾਕੇ ਵਿੱਚ ਲੈ ਗਏ ਅਤੇ ਉਹ ਇੱਕ ਬਿਨਾਂ ਛੱਤ ਵਾਲੀ ਝੌਂਪੜੀ ਵਿੱਚ ਪਹੁੰਚੇ। ਮੋਰੀਆਂ ਵਾਲੇ ਲੀੜੇ ਪਾਏ, ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਖਿਡੌਣਾ ਚੱਕੀ ਜੋ ਕਿ ਟੁੱਟਿਆ ਸੀ, ਇੱਕ ਅੱਠ ਸਾਲ ਦਾ ਬੱਚਾ ਸ਼ਾਂਤੀ ਨਾਲ ਖੇਡ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਉਸਨੂੰ ਕੰਨੋਂ ਸੁਣਦਾ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਜਦ ਉਸਨੇ ਸੰਤ ਨੂੰ ਵੇਖਿਆ ਤਾਂ ਭੱਜਦਾ ਭੱਜਦਾ ਆਇਆ, ਪੈਰ ਛੂਹੇ ਅਤੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਖੁਸ਼ੀ ਨਾਲ ਦੌੜਦਾ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਨੂੰ ਬੁਲਾਉਣ

ਚਲਾ ਗਿਆ। ਰਣਵੀਰ ਨੂੰ ਕੁੱਝ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਸੀ ਆ ਰਿਹਾ। ਸੰਤ ਨੇ ਇਸ਼ਾਰਾ ਕਰਦਿਆਂ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਕੋਲ ਬੁਲਾਇਆ ਤੇ ਦੁਲਾਰਿਆਂ ਅਤੇ ਉਸਨੇ ਬੱਚੇ ਦੀ ਮਾਂ ਤੋਂ ਪੁੱਛਿਆ ਕਿ ਬੱਚੇ ਦੇ ਕੰਨਾਂ ਨੂੰ ਹੋਇਆ ਕੀ ਹੈ ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਇਸਨੇ ਇੱਕ ਦੁਰਘਟਨਾ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਦੋਵੇਂ ਕੰਨ ਗੁਆ ਲਏ ਸਨ। ਉਹ ਬੱਚਾ ਅਜੇ ਵੀ ਖਿਡੌਣਿਆਂ ਨਾਲ ਖੇਡ ਰਿਹਾ ਸੀ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਵੇਖ ਕੇ ਮੁਸਕਰਾ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਇੰਝ ਜਾਪਦਾ ਸੀ ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀਆਂ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਉਸ ਕੋਲ ਹੀ ਹੋਣ। ਰਣਵੀਰ ਵੀ ਮਨੋ ਮਨ ਇਹੀ ਸੋਚ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਜਿਵੇਂ ਦੋਵੇਂ ਬਾਹਰ ਆਏ, ਤਾਂ ਸੰਤ ਨੇ ਬਾਹਰ ਆ ਕੇ ਰਣਵੀਰ ਤੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਕੀਤਾ, “ਤੂੰ ਉਸ ਬੱਚੇ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਿਆਨ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ? ਰਣਵੀਰ ਹੁਣ ਸੋਚੀ ਪੈ ਗਿਆ। ਉਹ ਸੋਚ ਰਿਹਾ ਸੀ ਨਾ ਤਾਂ ਉਸ ਕੋਲ ਪਾਉਣ ਲਈ ਵਧੀਆ ਕੱਪੜੇ ਹਨ ਨਾ ਸਿਰ ਤੇ ਛੱਤ ਹੈ ਨਾ ਹੀ ਉਹ ਕੰਨੋਂ ਸੁਣ ਸਕਦਾ ਪਰ ਫੇਰ ਵੀ ਉਹ ਇੰਨਾਂ ਖੁਸ਼ ਹੈ ਪਰ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਤਾਂ ਸੱਭ ਹੁੰਦੇ ਹੋਏ ਵੀ ਮੈਂ ਖੁਸ਼ ਨਹੀਂ। ਉਸਨੇ ਇਹੀ ਗੱਲ ਉਸ ਸੰਤ ਤੋਂ ਪੁੱਛੀ। ਸੰਤ ਨੇ ਜਵਾਬ ਦਿੱਤਾ, “ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਸਭ ਕੁੱਝ ਹੈ ਤੇ ਇਸ ਸੱਭ ਵਿੱਚੋਂ ਤੂੰ ਕਦੇ ਖੁਸ਼ੀ ਲੱਭਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਹੀ ਨਹੀਂ।”

“ਜਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਛੋਟੇ ਛੋਟੇ ਪਲ ਵੀ ਵੱਡੀਆਂ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬਣ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਬੱਚਾ ਇਸ ਗੱਲੋਂ ਦੁਖੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਜੋ ਉਸ ਕੋਲੋਂ ਜਾ ਚੁੱਕਿਆ ਬਲਕਿ ਜੋ ਉਸ ਕੋਲ ਹੈ, ਉਸਨੇ ਉਸ ਵਿੱਚੋਂ ਹੀ ਆਪਣੀਆਂ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਲੱਭ ਲਈਆਂ।” ਹੁਣ ਰਣਵੀਰ ਨੂੰ ਸਮਝ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਜਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਹਰ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਕੁੱਝ ਨਾ ਕੁੱਝ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਦੇ ਹੱਲ ਤੋਂ ਸੰਤੁਸ਼ਟ ਸੀ। ਉਹ ਹੁਣ ਖੁਸ਼ ਰਹਿਣ ਲੱਗਾ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਜਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਨੇ ਥਾਂ ਬਣਾ ਹੀ ਲਈ। ਅੰਤ ਉਸਦੀ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ ਪੂਰੀ ਹੋਈ।

ਆਯੁਸ਼ੀ

ਪੀ. ਜੀ. ਜੀ. ਸੀ. ਕਾਲਜ, ਸੈਕਟਰ 11, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ
ਜ਼ੋਨ - ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ - ‘ਬੀ’

“ਵਧਾਈਆਂ ਹੋਣ ਧੀਏ ਤੈਨੂੰ ...।” ਕਹਿੰਦੇ ਹੋਏ ਮੇਲੂ ਚਾਚਾ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਆ ਕੇ ਖੜ ਗਿਆ। “ਕਾਹਦੀਆਂ ਵਧਾਈਆਂ ਚਾਚਾ ਜੀ, ਨਾਲੇ ਇੰਨੇ ਸਾਹੋ—ਸਾਹ ਕਿਉਂ ਹੋਏ ਪਏ ਓ। ਆਹ ਲਵੋ ਪਾਣੀ ਪੀਓ। ਕਹਿ ਕੇ ਮੈਂ ਪਾਣੀ ਦਾ ਗਿਲਾਸ ਚਾਚੇ ਨੂੰ ਫੜਾਇਆ।

ਮੇਲੂ ਚਾਚਾ ਸਾਡੇ ਪਿੰਡ ਦਾ ਪੰਚ ਹੈ। ਚਾਚੇ ਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤਰ ਸਨ। ਕੋਈ ਧੀ ਨਾ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਉਹ ਮੈਨੂੰ ਆਪਣੀ ਧੀ ਵਾਂਗ ਹੀ ਪਿਆਰ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਚਾਚਾ ਜੀ ਕਹਿੰਦੀ ਸਾਂ।

“ਉਹ ਤੂੰ ਜਿਹੜਾ ਡਾਕਟਰੀ ਆਲਾ ਟੈਸਟ ਦਿੱਤਾ ਸੀ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਤੂੰ ਬਾਹਰਲੇ ਦੇਸ਼ ਡਾਕਟਰੀ ਦੀ ਅੱਗੇ ਦੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਨ ਜਾ ਸਕਦੀ ਏ, ਸਕਾਲਰਸ਼ਿਪ ਦਾ ਸਰਪੰਚ ਸਾਹਿਬ ਕਹਿੰਦੇ ਤੂੰ ਉਸ 'ਚੋਂ ਪਾਸ ਹੋ ਗਈ ਏ।”

ਚਾਚੇ ਦੇ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਸੁਣਕੇ ਮੇਰਾ ਮੂੰਹ ਖੁੱਲ੍ਹਾ ਦਾ ਖੁੱਲ੍ਹਾ ਹੀ ਰਹਿ ਗਿਆ। ਮੇਰੀ ਖੁਸ਼ੀ ਦਾ ਕੋਈ ਟਿਕਾਣਾ ਨਾ ਰਿਹਾ। ਮੇਰੇ ਮੂੰਹ ਵਿੱਚੋਂ ਕੋਈ ਵੀ ਸ਼ਬਦ ਨਾ ਨਿਕਲਿਆ।

“ਚੱਲ ਧੀਏਂ ਸਰਪੰਚ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਘਰ ਚੱਲ, ਨਾਲੇ ਬੇਬੇ—ਬਾਪੂ ਨੂੰ ਵੀ ਨਾਲ ਲੈ ਚੱਲ।” ਚਾਚੇ ਨੇ ਕਿਹਾ। ਬੇਬੇ ਬਾਪੂ ਨੇ ਇਹ ਗੱਲ ਸੁਣ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਹਿੱਕ ਨਾਲ ਲਾ ਲਿਆ। ਫਿਰ ਅਸੀਂ ਛੇਤੀ ਛੇਤੀ ਸਰਪੰਚ ਦੇ ਘਰ ਵੱਲ ਤੁਰ ਪਏ। ਬਾਪੂ ਤੇ ਚਾਚਾ ਅੱਗੇ ਅੱਗੇ ਤੇ ਬੇਬੇ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਪਿੱਛੇ ਸੀ। ਚਲਦੇ ਚਲਦੇ ਮੈਨੂੰ ਉਹ ਦਿਨ ਯਾਦ ਆਇਆ, ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਦਸਵੀਂ ਤੋਂ ਪਿੱਛੋਂ ਗਿਆਰਵੀਂ ਵਿੱਚ ਮੈਡੀਕਲ ਲਿਆ ਸੀ ਤਾਂ ਬੇਬੇ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਕਿਹਾ ਸੀ, “ਧੀਏ ਤੂੰ ਡਾਕਟਰਨੀ ਬਣ ਕੇ ਪਹਿਲਾਂ ਹਸਪਤਾਲ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਖੋਲ੍ਹੇਗੀ ਜਾਂ ਸਹੁਰੇ ਘਰੇ” ਬੇਬੇ ਨੇ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਭਾਵੇਂ ਮਜ਼ਾਕ ਚ ਕਹੇ ਹੋਣ ਪਰ ਮੈਂ ਉਦੋਂ ਹੀ ਸੋਚ ਲਿਆ ਸੀ ਕਿ ਮੈਂ ਜਰੂਰ ਡਾਕਟਰਨੀ ਬਣਾਂਗੀ ਤੇ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਹਸਪਤਾਲ ਖੋਲ੍ਹਾਂਗੀ।

ਰਸਤੇ ਵਿੱਚ ਚਲਦੇ—ਚਲਦੇ ਪਿੰਡ ਦੇ ਕਈ ਲੋਕ ਮਿਲੇ। ਸਾਰੇ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਸਨ ਤੇ ਬਾਪੂ ਅਤੇ ਬੇਬੇ ਨੂੰ ਵਧਾਈਆਂ ਦੇ ਰਹੇ ਸਨ। ਇੰਝ ਲੱਗਦਾ ਸੀ ਜਿਵੇਂ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਮੇਲਾ ਹੋਵੇ ਤੇ ਮੈਨੂੰ ਆਖਿਰ 'ਚ ਪਤਾ ਲੱਗਾ।

ਪਿੰਡ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਇਹ ਗੱਲ ਕਿ ਮੈਂ ਪਿੰਡ ਚ ਹਸਪਤਾਲ ਖੋਲ੍ਹਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹਾਂ ਵੀ ਚਾਚੇ ਮੇਲੂ ਤੋਂ ਹੀ ਪਤਾ ਲੱਗੀ ਸੀ। ਪਿੰਡ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਬਹੁਤ ਆਸਾਂ ਸਨ। ਮੈਨੂੰ ਯਾਦ ਹੈ, ਇੱਕ ਵਾਰ ਬਾਪੂ ਜੀ ਕਿਸੇ ਕਾਰਨ ਕਰਕੇ ਮੇਰੀ ਫੀਸ ਨਹੀਂ ਦੇ ਪਾਏ ਸਨ ਤੇ ਕਾਲਜ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਰੋਲ ਨੰਬਰ ਦੇਣ ਤੋਂ ਮਨ੍ਹਾਂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। ਜਦੋਂ ਇਹ ਗੱਲ ਮੇਲੂ ਚਾਚੇ ਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੀ ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਸਰਪੰਚ ਸਾਹਿਬ ਨਾਲ ਸਲਾਹ ਕਰਕੇ ਕੁੱਝ ਪੈਸੇ ਇੱਕਠੇ ਕਰਕੇ ਮੇਰੀ ਫੀਸ ਦਿੱਤੀ ਸੀ। ਇਸ ਸਕਾਲਰਸ਼ਿਪ ਟੈਸਟ ਬਾਰੇ ਵੀ ਮੈਨੂੰ ਸਰਪੰਚ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਹੀ ਦੱਸਿਆ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੇਰਾ ਫਾਰਮ ਭਰਵਾ ਕੇ ਦਿੱਤਾ ਸੀ, ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਟੈਸਟ ਦੇਣ ਜਾਣਾ ਸੀ ਤਾਂ ਸਾਰੇ ਪਿੰਡ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਅਸੀਸਾਂ ਦੇ ਕੇ ਤੋਰਿਆ ਸੀ।

“ਅੱਜ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਆਸਾਂ ਤੇ ਅਸੀਸਾਂ ਕਰਕੇ ਹੀ ਮੈਂ ਪਾਸ ਹੋਈ ਹਾਂ।” ਮੈਂ ਮਨ ਵਿੱਚ ਸੋਚਿਆ। ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਸਰਪੰਚ ਅੰਕਲ ਦੇ ਘਰੇ ਪਹੁੰਚੇ ਤਾਂ ਉੱਥੇ ਪਿੰਡ ਤੇ ਲੋਕ, ਸਰਪੰਚ ਅੰਕਲ ਤੇ ਤਿੰਨ ਆਦਮੀ ਹੋਰ ਬੈਠੇ ਹੋਏ ਸਨ। ਸਰਪੰਚ ਅੰਕਲ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਵਧਾਈਆਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਤੇ ਕਿਹਾ, “ਧੀਏ ਮੈਨੂੰ ਪੂਰੀ ਆਸ ਸੀ, ਕਿ ਤੂੰ ਟੈਸਟ ਜਰੂਰ ਪਾਸ ਕਰੇਂਗੀ, ਮੈਂ ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ ਤੂੰ ਬਹੁਤ ਮਿਹਨਤ ਕੀਤੀ ਏ ਤੇ ਅੱਗੇ ਵੀ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ ਸਾਡੇ ਪਿੰਡ ਦਾ ਨਾਂ ਰੋਸ਼ਨ ਕਰੇਂਗੀ।

ਫਿਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤਿੰਨ ਬੰਦਿਆਂ 'ਚੋਂ ਇੱਕ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਸਕਾਲਰਸ਼ਿਪ ਫੜਾ ਦਿੱਤੀ ਤੇ ਉੱਥੋਂ ਚਲੇ ਗਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਾਣ ਪਿੱਛੋਂ ਸਰਪੰਚ ਅੰਕਲ ਨੇ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਐਲਾਨ ਕਰਵਾ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਹਸਪਤਾਲ ਬਣਵਾਉਣ ਜਾ ਰਹੇ ਹਾਂ ਤੇ ਕੱਲ੍ਹ ਇਸ ਲਈ ਪੈਸੇ ਇੱਕਠੇ ਕੀਤੇ ਜਾਣਗੇ। ਸਭ ਦੀ ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਹੈ ਜਿੰਨੇ ਪੈਸੇ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਓ ਦੇ ਸਕਦੇ ਓ।”

ਕੁੱਝ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਤਾਂ ਉਸੇ ਵੇਲੇ ਪੈਸੇ ਫੜ੍ਹਾ ਦਿੱਤੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਇਹ ਫੁਰਤੀ ਦੇਖ ਕੇ ਮੇਰਾ ਦਿਲ ਬਹੁਤ ਘਬਰਾ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤੇ ਕੁੱਝ ਸਵਾਲ ਦਿਲ ਤੇ ਦਿਮਾਗ ਵਿੱਚ ਉੱਛਲ ਰਹੇ ਸਨ, ਕੀ ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਉਮੀਦਾਂ ਤੇ ਖਰੀ ਉਤਰਾਂਗੀ

ਕੀ ਜਿਹੜੀ ਆਸ ਉਹ ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਲਾਈ ਬੈਠੇ ਹਨ, ਮੈਂ ਉਸਦੇ ਕਾਬਿਲ ਹਾਂ ਸਭ ਕੁੱਝ ਇੰਨਾ ਛੇਤੀ — ਛੇਤੀ ਕਿਉਂ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ

ਫਿਰ ਇੱਕ ਲੰਬੇ ਸਾਹ ਮਗਰੋਂ ਮੈਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਵਾਲਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰੋਂ ਸਾਫ਼ ਕੀਤਾ ਤੇ ਸੋਚਿਆ ਮੈਂ ਇਸ ਆਸ ਨੂੰ ਜਰੂਰ ਪੂਰਾ ਕਰਾਂਗੀ। “ਆਸ ਦਾ ਦੀਵਾ ਜਿੰਨਾ ਚਿਰ ਬਲਦਾ ਰਹੇ, ਉਨੀ ਹੀ ਰੌਸ਼ਨੀ ਮਿਲਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਇੱਥੇ ਤਾਂ ਕਿੰਨੇ ਹੀ ਦੀਵੇ ਬਲ ਰਹੇ ਸਨ ਜੋ ਮੇਰੇ ਲਈ ਹਨੇਰੇ ਰਸਤੇ ਵਿੱਚ ਰੌਸ਼ਨੀ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਨਗੇ।”

“ਹੁਣ ਇਸੇ ਉਮੀਦ ਨਾਲ ਤੇ ਪੂਰੀ ਹਿੰਮਤ ਨਾਲ ਮੈਂ ਅੱਗੇ ਦੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਾਂਗੀ।” ਇਹ ਸੋਚ ਕੇ ਮੈਂ ਘਰ ਆ ਪੁੱਜੀ। ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਬੇਬੇ ਨੇ ਮੇਰੇ ਜਾਣ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ। ਅਜੇ ਬੇਬੇ ਸਮਾਨ ਤਿਆਰ ਹੀ ਕਰ ਰਹੀ

ਸੀ ਕਿ ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਕੁੱਝ ਔਰਤਾਂ ਵੱਖ—ਵੱਖ ਸਮਾਨ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਆਚਾਰ, ਮਿਠਾਈਆਂ, ਪਾਪੜ, ਪਿੰਨੀਆਂ ਆਦਿ ਲੈ ਕੇ ਆ ਰਹੀਆਂ ਸਨ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਸ ਤੇ ਖੁਸ਼ੀ ਮੈਨੂੰ ਹੋਰ ਵੀ ਹਿੰਮਤ ਦੇ ਰਹੇ ਸਨ ਤੇ ਮੈਨੂੰ ਇੰਝ ਮਹਿਸੂਸ ਹੋ ਕਿ ਰਿਹਾ ਸੀ ਜਿਵੇਂ ਮੈਂ ਬਸ ਕੱਲ੍ਹ ਹੀ ਡਾਕਟਰ ਬਣ ਕੇ ਵਾਪਿਸ ਆ ਰਹੀ ਹਾਂ ਤੇ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾ ਕਦਮ ਉਸੇ ਹਸਪਤਾਲ 'ਚ ਰੱਖਾਂਗੀ।

ਪ੍ਰਿਯਾ

ਦਸਮੇਸ਼ ਗਰਲਜ਼ ਕਾਲਜ, ਚੱਕ ਅੱਲਾ ਬਖਸ਼,

ਮੁਕੇਰੀਆਂ

ਜ਼ੋਨ - ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ - ‘ਬੀ’

ਘਰ ਵਾਪਸੀ

ਅੱਜ ਵਿਜੈ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਪੂਰੇ ਸੱਤ ਸਾਲਾਂ ਬਾਅਦ ਘਰ ਪਰਤ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਉਸਨੂੰ ਉਹ ਦਿਨ ਅੱਜ ਵੀ ਯਾਦ ਸੀ ਜਦੋਂ ਉਹ ਆਪਣਾ ਪਿੰਡ ਛੱਡ ਕੇ ਸ਼ਹਿਰ ਗਿਆ ਸੀ ਤਾਂ ਕਿ ਕੁੱਝ ਪੈਸੇ ਕਮਾ ਕੇ ਆਪਣੇ ਮਾਂ ਬਾਪ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਕੁੱਝ ਸੁਧਾਰ ਕਰ ਸਕੇ।

ਸਾਲ 2002 ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ ਵਿਜੈ ਉਸ ਸਮੇਂ ਇੱਕੀ ਸਾਲ ਦਾ ਸੀ। ਅੱਜ ਉਸਦੀ ਵੱਡੀ ਭੈਣ ਦਾ ਵਿਆਹ ਸੀ। ਘਰ ਵਿੱਚ ਪੈਸਿਆਂ ਦੀ ਤੰਗੀ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਉਸਦੇ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਖੇਤਾਂ ਵਾਲੀ ਜ਼ਮੀਨ ਵੇਚਣੀ ਪਈ ਤਾਂ ਜੋ ਵਿਆਹ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਰੁਕਾਵਟ ਨਾ ਆਵੇ। ਇਸ ਜ਼ਮੀਨ ਤੇ ਉਸਦੇ ਪਿਤਾ ਦਾ ਬਚਪਨ ਬੀਤਿਆ ਸੀ। ਵਿਜੈ ਦੇ ਪਿਤਾ ਅਕਸਰ ਉਸਨੂੰ ਦੱਸਿਆ ਕਰਦੇ ਸਨ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਉਹ ਉੱਥੇ ਖੇਡਿਆ ਕਰਦੇ ਸਨ, ਉਹ ਗੰਨੇ ਤੋੜ ਕੇ ਲਿਆਉਂਦੇ ਅਤੇ ਮਿਲ ਕੇ ਦੋਸਤਾਂ ਨਾਲ ਚੁਪਦੇ ਅਤੇ ਫਿਰ ਉੱਥੇ ਹੀ ਥੱਕ ਕੇ ਸੌ ਵੀ ਜਾਂਦੇ। ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਨਾਲ ਖੇਤਾਂ ਵਿੱਚ ਮੱਦਦ ਵੀ ਕਰਾਉਂਦੇ ਅਤੇ ਫਸਲਾਂ ਦੀ ਰਾਖੀ ਵੀ ਕਰਦੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਪੂਰਾ

ਦਿਨ ਉੱਥੇ ਹੀ ਨਿਕਲ ਜਾਂਦਾ। ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀਆਂ ਦੱਸੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਵਿਜੈ ਨੂੰ ਅੱਜ ਵੀ ਯਾਦ ਸਨ। ਵਿਜੈ ਨੇ ਠਾਣ ਲਿਆ ਸੀ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਵਾਪਿਸ ਦਵਾ ਕੇ ਹੀ ਦਮ ਲਵੇਗਾ। ਇਸ ਲਈ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਤੁਰੰਤ ਬਾਅਦ ਹੀ ਉਸਨੇ ਸ਼ਹਿਰ ਜਾਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰ ਲਿਆ।

ਉਸਨੇ ਆਪਣਾ ਲੋੜੀਂਦਾ ਸਮਾਨ ਪੈਕ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਕੁੱਝ ਦਸ ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਸ਼ਹਿਰ ਲਈ ਨਿੱਕਲ ਪਿਆ। ਜਦੋਂ ਉਹ ਘਰੋਂ ਨਿਕਲ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਮਾਂ—ਪਿਉ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿੱਚ ਹੰਝੂ ਸੀ ਪਰ ਇਹ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਵੀ ਸੀ ਕਿ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਪੁੱਤਰ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਨਾਮ ਜਰੂਰ ਰੋਸ਼ਨ ਕਰੇਗਾ।

ਸ਼ਹਿਰ ਵਿੱਚ ਵਿਜੈ ਦਾ ਇੱਕ ਦੋਸਤ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ, ਜਿਸਦਾ ਨਾਮ ਸੀ ਸੁਜਾਨ ਸਿੰਘ। ਉਂਵ ਵਿਜੈ ਦਾ ਵੀ ਪੂਰਾ ਨਾਮ ਵਿਜੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਸੀ ਪਰ ਉਸਨੂੰ ਉਸਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲੇ ਵਿਜੈ ਹੀ ਬੁਲਾਉਂਦੇ ਸਨ। ਸੁਜਾਨ ਦੀ ਆਪਣੀ ਕਰਿਆਨੇ ਦੀ ਦੁਕਾਨ ਸੀ ਅਤੇ ਉਸਨੂੰ ਆਸ ਪਾਸ ਦੇ ਬਹੁਤ ਲੋਕ ਜਾਣਦੇ ਸਨ। ਵਿਜੈ ਬਾਰੂਵੀਂ ਪਾਸ

ਸੀ ਅਤੇ ਬੀ.ਏ ਵੀ ਕਰ ਚੁੱਕਾ ਸੀ। ਸੁਜਾਨ ਨੇ ਵਿਜੈ ਨੂੰ ਇੱਕ ਦਫਤਰ ਵਿੱਚ ਨੌਕਰੀ ਲਵਾ ਦਿੱਤਾ।

ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਕੁੱਝ ਦਿਨ ਵਿਜੈ ਸੁਜਾਨ ਦੇ ਘਰ ਹੀ ਰੁੱਕਿਆ ਪਰ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਉਸਨੂੰ ਕਿਰਾਏ ਤੇ ਕਮਰਾ ਮਿਲ ਗਿਆ। ਪਹਿਲਾਂ ਪਹਿਲਾ ਤਾਂ ਵਿਜੈ ਨੂੰ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿੱਚ ਕਾਫ਼ੀ ਅਜੀਬ ਮਹਿਸੂਸ ਹੋਇਆ ਪਰ ਸਮੇਂ ਦੇ ਨਾਲ ਉਹ ਉਥੇ ਦੇ ਵਾਤਾਵਰਨ ਵਿੱਚ ਢਲ ਗਿਆ।

ਹੁਣ ਤਾਂ ਵਿਜੈ ਖਾਣਾ ਬਣਾਉਣਾ ਵੀ ਸਿੱਖ ਗਿਆ ਸੀ। ਉਹ ਨਾਸ਼ਤਾ ਕਰ ਕੇ ਦਫਤਰ ਲਈ ਨਿਕਲ ਜਾਂਦਾ ਅਤੇ ਦੁਪਹਿਰ ਦੀ ਰੋਟੀ ਨਾਲ ਲੈ ਜਾਂਦਾ, ਉਹ ਦਫਤਰ ਵਿੱਚ ਮਨ ਲਗਾ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰਦਾ। ਉਸਦੇ ਕੰਮ ਤੋਂ ਖੁਸ਼ ਹੋ ਕੇ ਜਲਦੀ ਹੀ ਉਸਦੀ ਤਨਖਾਹ ਵਧਾ ਦਿੱਤੀ ਗਈ।

ਉਸਨੂੰ ਘਰ ਦੀ ਯਾਦ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਆਉਂਦੀ ਸੀ ਪਰ ਉਹ ਹੁਣੇ ਘਰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਜਾ ਸਕਦਾ ਕਿਉਂਕਿ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਵਾਪਸ ਹਾਸਿਲ ਕਰਨਾ ਹੀ ਉਸਦੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਮਕਸਦ ਬਣ ਚੁੱਕਾ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਜਦੋਂ ਤੱਕ ਉਹ ਇਸ ਕਾਬਿਲ ਨਹੀਂ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਕਿ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਵਾਪਸ ਖਰੀਦ ਸਕੇ, ਉਦੋਂ ਤੱਕ ਘਰ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ ਸੀ।

ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਅਕਸਰ ਉਸਨੂੰ ਸੰਦੇਸ਼ ਭੇਜਿਆ ਕਰਦੀ ਅਤੇ ਉਹ ਵੀ ਸਮਾਂ ਮਿਲਣ ਤੇ ਘਰ ਸੰਦੇਸ਼ ਜ਼ਰੂਰ ਭੇਜਦਾ। ਬਸ ਹੁਣ ਉਸੇ ਦਿਨ ਦੀ ਉਡੀਕ ਸੀ ਜਦੋਂ ਉਸਨੇ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡ ਵਾਪਸ ਜਾਣਾ ਸੀ। ਆਖਿਰਕਾਰ ਉਹ ਦਿਨ ਆ ਗਿਆ ਜਦੋਂ ਉਸਨੇ ਘਰ ਵਾਪਸ ਪਰਤਣਾ ਸੀ। ਉਹ ਹਫ਼ਤਾ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਵਾਪਸ ਖਰੀਦ ਚੁੱਕਾ ਸੀ ਅਤੇ ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਨੂੰ ਦੱਸਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ ਕਿ ਜਿਸ ਜ਼ਮੀਨ ਤੇ ਉਹਦਾ ਬਚਪਨ ਬੀਤਿਆ ਉਹ ਜ਼ਮੀਨ ਅੱਜ ਵੀ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਹੀ ਹੈ।

ਉਸਨੇ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠ ਕੇ ਆਪਣਾ ਸਮਾਨ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਪਿੰਡ ਵੱਲ ਨਿਕਲ ਪਿਆ। ਉਸਦੇ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਮੁਸਕਾਨ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਉਸਨੇ ਜੋ ਸਪਨਾ ਦੇਖਿਆ ਸੀ ਉਹ ਅੱਜ ਪੂਰਾ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਸੀ। ਅੱਜ ਉਹ ਪੂਰੇ ਸੱਤ ਸਾਲਾਂ ਬਾਅਦ ਘਰ ਪਰਤ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਉਹ ਜਾਣਦਾ ਸੀ ਕਿ ਜਦੋਂ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੇ ਹੱਥ

ਵਿੱਚ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਕਾਗਜ਼ ਦੇਵੇਗਾ ਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸੀਨਾ ਮਾਣ ਨਾਲ ਚੌੜਾ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ। ਸ਼ਾਮ ਹੁੰਦੇ ਹੁੰਦੇ ਉਹ ਘਰ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ।

ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਉਸਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਹੋਈ ਅਤੇ ਉਸਨੂੰ ਗਲ ਨਾਲ ਲਾ ਲਿਆ। ਪੂਰੇ ਸੱਤ ਸਾਲ ਬਾਅਦ ਅੱਜ ਜਾ ਕੇ ਉਹ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਸੀ। ਉਸਨੇ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਕਾਗਜ਼ ਆਪਣੇ ਬੈਗ ਵਿੱਚੋਂ ਬਾਹਰ ਕੱਢੇ ਅਤੇ ਮਾਂ ਨੂੰ ਪੁੱਛਿਆ ਕਿ ਪਿਤਾ ਜੀ ਕਿੱਥੇ ਹਨ? ਉਸ ਦੀ ਮਾਂ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਉਹ ਤਾਂ ਪਿਛਲੇ ਮਹੀਨੇ ਹੀ ਅਕਾਲ ਚਲਾਣਾ ਕਰ ਗਏ ਸਨ। ਇਹ ਸੁਣ ਕੇ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਕਾਗਜ਼ ਵਿਜੈ ਦੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਡਿੱਗ ਗਏ। ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਸਨੇ ਉਸਨੂੰ ਸੰਦੇਸ਼ ਵੀ ਭੇਜਿਆ ਸੀ ਪਰ ਕੋਈ ਜਵਾਬ ਨਹੀਂ ਆਇਆ। ਵਿਜੈ ਗੋਡਿਆ ਭਾਰ ਧਰਤੀ ਤੇ ਡਿੱਗ ਗਿਆ। ਉਹ ਇੰਝ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ ਜਿਵੇਂ ਉਸਨੇ ਸਭ ਕੁੱਝ ਹਾਸਲ ਕਰਨ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਸਭ ਕੁੱਝ ਗਵਾ ਲਿਆ ਹੋਵੇ। ਉਸਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿੱਚ ਅੱਥਰੂ ਆ ਗਏ। ਵਿਜੈ ਬਿਲਕੁਲ ਟੁੱਟ ਚੁੱਕਾ ਸੀ ਜਿਵੇਂ ਸਭ ਕੁੱਝ ਖਤਮ ਹੋ ਗਿਆ ਹੋਵੇ ਪਰ ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਸਮਝਾਇਆ ਕਿ, ਹੋਣੀ ਨੂੰ ਕੌਣ ਟਾਲ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਤਾਂ ਰੱਬ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਹੈ। ਸਭ ਦਾ ਜੀਵਨ ਮਰਣ ਉਹੀ ਤਹਿ ਕਰਦਾ ਹੈ ਇਸ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਮਨੁੱਖ ਕੁੱਝ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ। ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਹੌਂਸਲਾ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਸਮਝਾਇਆ ਕਿ, ਅੱਜ ਉਸਦੇ ਜੋ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਅਗਰ ਉਸਦੇ ਪਿਤਾ ਜੀਵਿਤ ਹੁੰਦੇ ਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸੀਨਾ ਮਾਣ ਨਾਲ ਚੌੜਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ। ਅੱਜ ਸੱਚਮੁੱਚ ਪੁੱਤਰ ਤੇਰੀ ਘਰ ਵਾਪਸੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਵਿਜੈ ਦੀ ਮਾਂ ਨੇ ਉਸਦਾ ਸਿਰ ਪਲੋਸਦਿਆਂ ਆਖਿਆ, ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦਾ ਸਿਰ ਉੱਚਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ।

ਜਪਨਜੋਤ ਸਿੰਘ

ਨਨਕਾਣਾ ਸਾਹਿਬ ਕਾਲਜ ਆਫ਼ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ,
ਕੋਟ ਗੰਗੂ ਰਾਏ, ਲੁਧਿਆਣਾ
ਜ਼ੋਨ - ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ - 'ਏ'

ਉਮੀਦ

ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲੇ ਪਾਠੀ ਦੀ ਅਵਾਜ਼ ਕੰਨਾਂ ਵਿੱਚ ਪਈ,
“ਅਵਲ ਅਲਹੁ ਨੂਰੁ ਉਪਾਇਆ, ਕੁਦਰਤ ਕੇ ਸਭ
ਬੰਦੇ।”

ਪਾਠੀ ਦੀ ਰਸ ਭਿੰਨੀ ਅਵਾਜ਼ ਸੁਣ ਭਾਨੋ ਦੀ ਅੱਖ ਖੁੱਲ੍ਹ
ਗਈ।

ਸਟੋਵ ਚਲਾ ਚਾਹ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਗਿਲਾਸ ਕੁ ਪਾਣੀ ਭਾਂਡੇ
ਵਿੱਚ ਪਾ ਭਾਨੋ ਨੇ ਚਾਹ ਪੱਤੀ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਪਾਈ ਤੇ
ਪਾਣੀ ਦਾ ਬਦਲਦਾ ਰੰਗ ਦੇਖ ਖਿਆਲਾਂ ਵਿੱਚ ਗੁਆਚ
ਗਈ। ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੀ ਮਹਿੰਦੀ ਦਾ ਰੰਗ ਯਾਦ ਆ ਗਿਆ
ਜੋ ਵਿਆਹ ਵੇਲੇ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਉਹਦੇ ਹੱਥਾਂ ਤੇ ਰਚੀ ਸੀ।

ਪਿਓ ਤੇ ਚਾਚੇ ਦੇ ਸੁਭਾਅ ਅੜਬ ਸੀ ਤਾਹੀਂ ਭਾਨੋ ਦੇ
ਬਹੁਤੇ ਚਾਅ ਅਧੂਰੇ ਹੀ ਰਹੇ ਸਨ। ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਲੱਗੀ
ਮਹਿੰਦੀ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਅਲੱਗ ਹੀ ਖੁਸ਼ੀ ਦਿੱਤੀ ਸੀ। ਉਹਨੂੰ
ਗਾੜ੍ਹੇ ਰੰਗਾਂ ਦੇ ਸੂਟ ਦੇਖ ਚਾਅ ਚੜਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ। ਪਰ

ਇਹ ਰੰਗ ਜਿਆਦਾ ਸਮਾਂ ਉਸਦੀ ਜਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਨਾ
ਰਹੇ।

ਚਾਹ ਦੇ ਭਾਂਡੇ ਦੇ ਜਲਣ ਦੀ ਬਦਬੂ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਖਿਆਲਾਂ
ਵਿੱਚੋਂ ਬਾਹਰ ਕੱਢ ਦਿੱਤਾ। ਇਨ੍ਹੇ ਨੂੰ ਬੂਹਾ ਖਟਕਿਆ,
“ਠਕ ॥ ਠਕ।”

ਭਾਨੋ ਨੇ ਬੂਹਾ ਖੋਲਿਆ, “ਪਰ ਇੰਨੀ ਤੜਕੇ ਕੌਣ
ਹੋਵੇਗਾ.....”

ਹਨੇਰੇ ਕਾਰਨ ਚਿਹਰਾ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਦਿੱਖਿਆ ਪਰ ਅਵਾਜ਼
ਭਾਨੋ ਨੇ ਪਛਾਣ ਲਈ।

“ਲੰਘ ਆ ਚਾਚੀ....., ਸੁੱਖ ਤਾਂ ਹੈ
ਭਾਨੋ ਨੇ ਘਬਰਾਈ ਅਵਾਜ਼ ਵਿੱਚ ਪੁੱਛਿਆ।

“ਹਾਂ ਕੁਝੇ ਸੁੱਖੀ ਸਾਂਦੀ, ਮੈਂ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਘਰ ਚੱਲੀ ਸੀ,
ਸੋਚਿਆ ਚਿੱਠੀ ਦੇ ਜਾਵਾਂ, ਕੱਲ੍ਹ ਤੇਰੇ ਘਰ ਬੂਹਾ ਖੁੱਲ੍ਹਾ
ਨਹੀਂ ਸੀ, ਤਾਹੀਂ ਡਾਕੀਆ ਮੈਨੂੰ ਫੜਾ ਗਿਆ।”

ਲੈ ਦੱਸ ਚਾਚੀ....., ਚਿੱਠੀ ਕਿਹੜਾ
ਭੱਜੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ, ਦਿਨ ਚੜ੍ਹੇ ਦੇ ਜਾਂਦੀ।” ਭਾਨੋ ਨੇ
ਹੱਸਦਿਆਂ ਕਿਹਾ।

“ਨੀ ਕੁਝੇ ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਲਈ ਵਿਹਲੀ ਹਾਂ ਹੁਣ ਤਾਂ ਲੰਘਣਾ ਸੀ
ਤੇਰੇ ਘਰ ਅੱਗੋਂ।” ਚਾਚੀ ਨੇ ਖਿੱਝਦਿਆਂ ਕਿਹਾ।

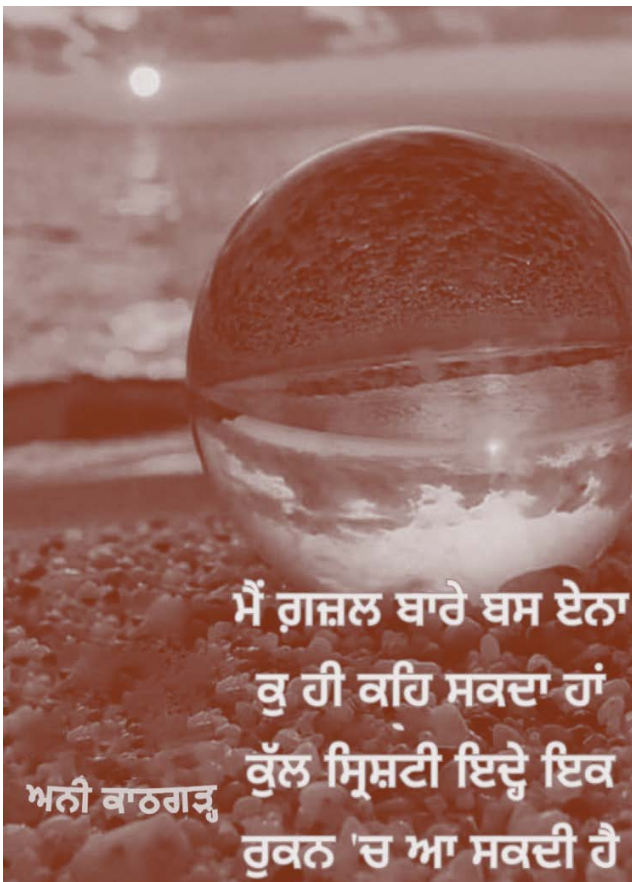
ਭਾਨੋ ਚਿੱਠੀ ਲੈ ਕੇ ਅੰਦਰ ਆਈ ਤੇ ਚਿੱਠੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ
ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਤਸਵੀਰ ਅੱਗੇ ਰੱਖ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਯਾਦ
ਕੀਤਾ। ਮੱਥਾ ਟੇਕ ਖੁਸ਼ੀ ਖੁਸ਼ੀ ਚਿੱਠੀ ਖੋਲੀ..... ॥

“ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਵਿੱਚ ਕੀ ਲਿਖਿਆ.....।”
ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਸੁਆਲ ਕੀਤਾ।

ਹੁਣ ਉਸਦੇ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਪਹਿਲਾਂ ਵਾਲੀ ਖੁਸ਼ੀ ਨਹੀਂ ਸੀ।
ਸ਼ਾਇਦ ਉਸਨੂੰ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਚਿੱਠੀ ਦੀ ਉਡੀਕ ਸੀ।

ਚਿੱਠੀ ਆਉਣ ਦੀ ਆਸ ਟੁੱਟਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਉਸ
ਨੇ ਆਪਣੇ ਮਨ ਨੂੰ ਸਮਝਾਇਆ, “ਜੀਵੇ ਆਸਾ ਮਰੇ
ਨਿਰਾਸ਼ਾ।”

“ਦੀਪੋ.....। ਕੁਝੇ ਦੀਪੋ। ਉੱਠ ਜਾ ਧੀਏ। ਹੁਣ



ਤਾਂ ਦਿਨ ਚੜ੍ਹ ਆਇਆ “ਭਾਨੋ ਨੇ ਝਾਤੂ ਵਿਹੜੇ ਵਿੱਚ
ਰੱਖ ਧੀ ਨੂੰ ਉਠਾਇਆ।

“ਚਿੱਠੀ ਪੜ੍ਹ ਲੀਂ। ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਚ ਲਿੱਖੀ ਆ। ਮੈਨੂੰ
ਤਾਂ ਇੱਲ ਤੇ ਕੁੱਕੜ ਵੀ ਪੱਲੇ ਨਹੀਂ ਪਿਆ।” ਭਾਨੋ ਨੇ
ਹਸਦਿਆ ਕਿਹਾ।

“ਕਾਲਜ ਤੋਂ ਹੀ ਹੋਊ ਮਾਂ ਚਿੱਠੀ ਫਿਰ। ਚਾਹ ਪੀਕੇ
ਦੇਖਦੀ ਆਂ।” ਦੀਪੋ ਨੇ ਜਵਾਬ ਦਿੱਤਾ।

ਦੀਪੋ ਵੀ ਹੁਣ ਬਾਈ ਵਰ੍ਹਿਆਂ ਦੀ ਹੋ ਗਈ ਸੀ। ਵਿਆਹ
ਵੀ ਪੱਕਾ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ। ਉਸਦਾ ਪਿਓ ਫੌਜ ਵਿੱਚ ਸੀ।
ਪਰ ਪੰਦਰਾਂ ਵਰ੍ਹੇ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਲਾਪਤਾ ਸੀ। ਪਿਤਾ ਨੂੰ
ਯਾਦ ਕਰ ਦੀਪੋ ਨੇ ਅੱਖਾਂ ਭਰ ਲਈਆਂ।

“ਅਜੇ ਤਾਂ ਕੋਲ ਹੀ ਆਂ ਮਾਂ ਦੇ। ਅਜੇ ਵਿਦਾ ਹੋਈ ਨੀ
ਦੇਖ ਕਿਵੇਂ ਅੱਖਾਂ ਲਾਲ ਕੀਤੀਆਂ।” ਭਾਨੋ ਨੇ ਧੀ ਨੂੰ ਜੱਫੀ
ਪਾਉਂਦਿਆਂ ਕਿਹਾ।

“ਮਾਂ.....॥ ਬਾਪੂ।”

ਧੀ ਦੀ ਗੱਲ ਵਿੱਚ ਹੀ ਟੋਕਦਿਆਂ ਭਾਨੋ ਨੇ ਕਿਹਾ “ਸ਼ਗਨਾਂ

ਦੇ ਦਿਨ ਨੇ, ਵਿਆਹ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਤੇਰਾ, ਹੱਸ ਖੇਡ ਲੈ
ਚਾਰ ਦਿਨ, ਕੀ ਪਤਾ ਕੁਪੱਤੀ ਸੱਸ ਮਿਲ ਜੇ ਤੈਨੂੰ, ਤੇਰੇ
ਹਾਸੇ ਨੂੰ ਵੀ ਰੋਕ ਲੱਗ ਜਾਣੀ” ਮਖੌਲ ਕਰਦਿਆਂ ਭਾਨੋਂ
ਨੇ ਧੀ ਨੂੰ ਕਿਹਾ। ਪਰ ਮੋਟੀਆਂ ਮੋਟੀਆਂ ਨੀਲੀਆਂ ਅੱਖਾਂ
ਵਿੱਚੋਂ ਡਿੱਗਦੇ ਮੋਤੀਆਂ ਵਰਗੇ ਹੰਝੂ ਉਹ ਧੀ ਤੋਂ ਲਕੇ ਨਾ
ਸਕੀ। ਭਾਨੋ ਨੇ ਕਦੇ ਦੀਪੋ ਨੂੰ ਪਿਓ ਦੀ ਕਮੀ ਮਹਿਸੂਸ
ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਦਿੱਤੀ ਸੀ। ਹਰ ਰੀਝ ਪੂਰੀ ਕੀਤੀ ਆਪਣੀ
ਧੀ ਦੀ। ਪਰ ਵਿਆਹ ਵੇਲੇ ਪਿਓ ਦੀ ਕਮੀ ਮਹਿਸੂਸ
ਕਰ ਰਹੀ ਸੀ ਦੀਪੋ।

ਭਾਨੋ ਨੇ ਭਰਾਵਾਂ ਦੀ ਮਦਦ ਨਾਲ ਧੀ ਦੇ ਵਿਆਹ ਦੀ ਪੂਰੇ
ਚਾਵਾਂ ਨਾਲ ਤਿਆਰੀ ਕੀਤੀ। ਬਸ ਹਫ਼ਤਾ ਕੁ ਬਾਕੀ ਸੀ
ਵਿਆਹ ਵਿੱਚ। ਸਾਰੀਆਂ ਖਰੀਦਦਾਰੀਆਂ ਹੋ ਗਈਆਂ
ਸਨ।

ਭਾਨੋ ਦਾ ਧੀ ਦੇ ਵਿਆਹ ਲਈ ਸਿਲਾਈ ਕਰਾਇਆ ਸੂਟ
ਦੇਖ ਚਾਚੀ ਨੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਤੀਰ ਜੜ੍ਹ ਦਿੱਤੇ।

“ਨੀ ਰੱਬ ਰੱਬ ਕਰ, ਸੁਹਾਗ ਸਿਰ ਤੇ ਨੀ ਤੇ ਗੁਲਾਬੀ ਸੂਟ।

ਭਾਨੋ ਬਿਨਾਂ ਸਾਰਾ ਪਿੰਡ ਇਹੀ ਮੰਨਦਾ ਸੀ ਕਿ ਉਸਦਾ
ਸੁਹਾਗ ਫੌਜ ਵਿੱਚ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋ ਗਿਆ। ਪਰ ਲਾਸ਼ ਵੀ
ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਸੀ ਮਿਲੀ ਉਸਦੀ। ਤਾਂਹੀ ਭਾਨੋ ਨੂੰ ਅਜੇ ਵੀ
ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦਾ ਸਰਦਾਰ ਜਰੂਰ ਆਵੇਗਾ। ਧੀ ਦੇ
ਸਿਰ ਤੇ ਹੱਥ ਰੱਖ ਉਸਨੂੰ ਦੁਆਵਾਂ ਦਵੇਗਾ ਤੇ ਉਸਦਾ
ਕੰਨਿਆ ਦਾਨ ਕਰੇਗਾ। ਉਸਦੀ ਇਸ ਆਸ ਸਦਕੇ ਹੀ
ਭਾਨੋ ਨੇ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਤਾ ਇੰਨ੍ਹਾ ਸਫ਼ਰ ਇੱਕਲਿਆ
ਤੈਅ ਕਰ ਲਿਆ, ਕਿਉਂਕਿ ਉਸਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ, ਆਸ ਹੈ
ਤਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਹੈ।

ਪ੍ਰਭਜੋਤ ਕੌਰ

ਹਰਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕਾਲਜ ਆਫ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਫਾਰ ਵੂਮੈਨ,
ਸਿੱਧਵਾਂ ਖੁਰਦ, ਲੁਧਿਆਣਾ
ਜ਼ੋਨ - ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ - ‘ਬੀ’



ਮਨੁੱਖਤਾ

ਪਰਤਾਪ ਸਿੰਘ ਕਾਲਜ ਦੀ ਸਟੂਡੈਂਟ ਯੂਨੀਅਨ ਦਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸੀ। ਛੇ ਫੁੱਟ ਲੰਬਾ ਜਵਾਨ, ਜੋ ਕਿਸੇ ਵੱਲ ਨਜ਼ਰ ਭਰ ਕੇ ਦੇਖ ਲੈਂਦਾ ਤਾਂ ਬੰਦੇ ਨੂੰ ਥਾਵੇਂ ਹੀ ਕੀਲੂ ਦਿੰਦਾ। ਪਰਤਾਪ ਚੰਗੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਾਲਾ ਨਵੀਂ ਪਨੀਰੀ ਦਾ ਸਿਰ ਕੱਢਵਾਂ ਨੌਜਵਾਨ ਸੀ, ਉਂਵ ਵੀ ਕਾਲਜ ਦਾ ਟਾਪਰ ਸੀ। ਕਾਲਜ ਸਮੇਂ ਦੌਰਾਨ ਹੀ ਉਸਨੂੰ ਲੀਡਰੀ ਦਾ ਭੁੱਸ ਪਿਆ, ਭਾਸ਼ਣ ਦਿੰਦਾ ਤਾਂ, ਮਨ ਵਿੱਚ ਕੁੱਝ ਕਰਨ ਦਾ ਜਜ਼ਬਾ ਉਸਨੂੰ ਹਰ ਵੇਲੇ ਟੁੰਬਦਾ ਰਹਿੰਦਾ। ਪਰਤਾਪ ਦੀ ਮਾਂ ਲੀਡਰਾਂ ਨਾਲ ਵਾਹ ਪਿਆ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਬੜਾ ਡਰਦੀ ਸੀ, ਉਹ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਪਰਤਾਪ ਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਗੱਲਾਂ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਹਿਣ ਦੀ ਸਲਾਹ ਦਿੰਦੀ ਤੇ ਕਿਹਾ ਕਰਦੀ “ਪੁੱਤਰ ਦੇਖ ਆਹ ਭਾਸ਼ਣ ਭੂਸ਼ਣ ਘੱਟ ਦਿਆ ਕਰ, ਲੋਕ ਤਾਂ ਨਾਲੇ ਦੋ ਦੀਆਂ ਚਾਰ ਬਣਾਉਂਦੇ ਨੇ, ਆਹ ਸਟੂਡੈਂਟ ਯੂਨੀਅਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਤੈਨੂੰ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਦੇਣਾ, ਇਹ ਲੀਡਰ ਤਾਂ ਲੋੜ ਪਈ ਤੇ ਗਏ ਨੂੰ ਵੀ ਪਿਓ ਬਣਾ ਲੈਣ ...।” ਗੱਲ ਕਹਿੰਦਿਆਂ ਮਾਂ ਦੇ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਨਿਰਾਸ਼ਾ ਸਾਫ਼ ਝਲਕ ਰਹੀ ਸੀ। ਪਰਤਾਪ ਨੇ ਗੱਲ ਬਦਲਦਿਆਂ ਕਿਹਾ

“ਮਾਤਾ, ਓ ਮੇਰੀ ਪਿਆਰੀ ਮਾਤਾ, ਤੂੰ ਇੰਨੀ ਫਿਕਰ ਨਾ ਕਰਿਆ ਕਰ। ਨਾਲੇ ਮੈਂ ਕਿਹੜਾ ਹਥਿਆਰ ਚਲਾਉਂਦਾ, ਕਿਤੇ ਨੀ ਕੁੱਝ ਹੁੰਦਾ, ਜਾ ਰੋਟੀ ਲਿਆ ਬੜੀ ਭੁੱਖ ਲੱਗੀ ਏ।”

“ਤੇਰੇ ਬੋਲ ਤੇ ਤੇਰੇ ਸ਼ਬਦ ਕਿਸੇ ਹਥਿਆਰ ਨਾਲੋਂ ਘੱਟ ਨੇ, ਮਿੰਟਾਂ ਚ ਸੜ ਕੇ ਸੁਆਹ ਹੋ ਜਾਣ ਲੋਕ ਤੈਨੂੰ ਸੁਣ ਕੇ। ਰੋਟੀ ਪਾਉਂਦਿਆਂ ਮਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਤਾਂ ਪਰਤਾਪ ਨੇ ਨਾਰਾਜ਼ ਹੋਈ ਮਾਂ ਨੂੰ ਕਲਾਵੇ ਵਿੱਚ ਲੈ ਲਿਆ।

“ਹਾਂ ਸੱਚ ਅੱਜ ਸਵੇਰੇ ਜੋਤ ਆਇਆ ਸੀ, ਉਹ ਟਿਊਸ਼ਨ ਵਾਲਾ ਮੁੰਡਾ। ਕਹਿੰਦਾ ਸੀ ਪਰਤਾਪ ਵੀਰੇ ਨਾਲ ਜਰੂਰੀ ਗੱਲ ਕਰਨੀ ਏ। ਤੂੰ ਰੋਟੀ ਖਾ ਕੇ ਉਹਨੂੰ ਘਰ ਬਲਾ ਲਵੀਂ ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਵਿਚਾਰਾ ਡਾਹਡਾ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਲੱਗਦਾ ਸੀ।”

ਇੰਨਾ ਕਹਿ ਕੇ ਮਾਂ ਆਪਣੇ ਕੰਮਾਂ ਵਿੱਚ ਰੁੱਝ ਗਈ। ਰੋਟੀ ਖਾ ਕੇ ਪਰਤਾਪ ਫੋਨ ਕਰਨ ਹੀ ਲੱਗਾ ਸੀ ਕਿ ਜੋਤ ਆ ਗਿਆ।

“ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ ਵੀਰੇ।” ਪੈਰੀਂ ਹੱਥ ਲਾਉਂਦਿਆਂ। ਜੋਤ ਬੋਲਿਆ, “ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ ਬੱਚੇ, ਕਿਵੇਂ ਆਉਣਾ ਹੋਇਐ?”

ਵੀਰੇ ਮੈਂ ਥੋਡੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਗੱਲ ਕਰਨੀ ਸੀ। ਜੋਤ ਗੱਲ ਕਹਿਣ ਵਿੱਚ ਝਿਜਕ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਹਾਵ ਭਾਵ ਸਮਝਦਿਆਂ ਪਰਤਾਪ ਉਸਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਖੇਤਾਂ ਵੱਲ ਚਲਾ ਗਿਆ। “ਅਰਾਮ ਨਾਲ ਦੱਸ ਬੱਚੇ ਕੀ ਹੋਇਐ ਖੁੱਲ ਕੇ ਗੱਲ ਕਰ।” ਉਸਦਾ ਮੋਢਾ ਥਪਥਪਾਉਂਦਿਆਂ ਪਰਤਾਪ ਨੇ ਕਿਹਾ ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਦੱਸਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ।

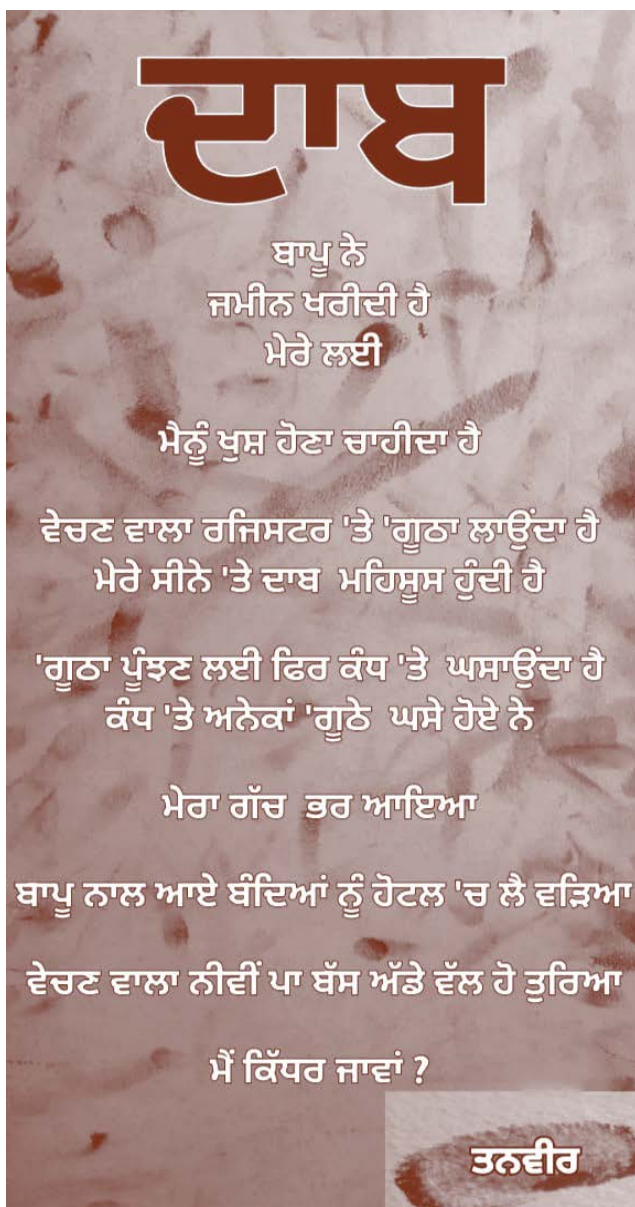
“ਵੀਰੇ, ਇੱਕ ਕੁੜੀ ਐ, ਰਚਨਾ। ਰੋਜ਼ ਸਾਡੇ ਸਕੂਲ ਦੇ ਬਾਹਰ ਖੜੀ ਹੁੰਦੀ ਏ। ਮੈਂ ਉਸਨੂੰ ਪੁੱਛਿਆ ਕਿ ਤੂੰ ਅੰਦਰ ਕਿਉਂ ਨੀ ਆਉਂਦੀ ਤਾਂ ਉਸ ਵਿਚਾਰੀ ਦਾ ਚਿਹਰਾ ਮੁਰਝਾ ਜਾਂਦਾ ਤੇ ਕਹੂ ਮੈਨੂੰ ਕੋਈ ਸਕੂਲ ਵਿੱਚ ਭਰਤੀ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ।”

“ਅੱਛਾ ਫੇਰ ਤੇ ਹੁਣ ਤੂੰ ਕੀ ਚਾਹੁੰਨਾਂ ਫਿਰ ਮਜ਼ਾਕੀਏ ਲਹਿਜੇ ਵਿੱਚ ਪਰਤਾਪ ਨੇ ਕਿਹਾ ਪਰ ਜੋਤ ਗੰਭੀਰ ਅਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਹੀ ਖੜਾ ਰਿਹਾ ਤੇ ਬੋਲਿਆ, “ਵੀਰੇ, ਆਪਾਂ ਉਸਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾ ਨਹੀਂ ਸਕਦੇ, ਮਤਲਬ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਪੇਪਰ ਦੇ ਸਕਦੀ ਉਹ ਤੇ ਟਿਊਸ਼ਨ ਪੜ੍ਹੀ ਜਾਊ ਨਾਲ ਨਾਲ।” ਜੋਤ ਇਹ ਕਹਿੰਦਿਆਂ ਝਿਜਕ ਰਿਹਾ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਪਰਤਾਪ ਨੇ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਫੀਸ ਦੇ ਉਸਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਇਆ ਸੀ ਤੇ ਹੁਣ ਰਚਨਾ ਦੀ ਟਿਊਸ਼ਨ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਕਰਦਿਆਂ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੀ ਗਰੀਬੀ ਤੇ ਗੁੱਸਾ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਪਰਤਾਪ ਬਹੁਤ ਸੁਲਝਿਆ ਹੋਇਆ ਇਨਸਾਨ ਸੀ। ਉਸਨੇ ਬਿਨਾਂ ਕੋਈ ਕਿੰਤੂ ਪ੍ਰੰਤੂ ਕੀਤੇ ਰਚਨਾ ਦੀ ਟਿਊਸ਼ਨ ਲਈ ਹਾਮੀ ਭਰ ਦਿੱਤੀ।

ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਸਕੂਲ ਜਾ ਕੇ ਜਦੋਂ ਗੇਟ ਮੂਹਰੇ ਖੜੀ ਰਚਨਾ ਨੂੰ ਪਰਤਾਪ ਵੱਲੋਂ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਦੀ ਹਾਮੀ ਬਾਰੇ ਦੱਸਿਆ ਤਾਂ ਉਹ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਹੋਈ ਤੇ ਮਿੱਟੀ ਤੇ ਹੀ ਉਂਗਲਾਂ ਨਾਲ ਕੁਝ ਵਾਹੁਣ ਲੱਗੀ। ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਛੁੱਟੀ ਹੁੰਦੇ ਸਾਰ ਜੋਤ ਰਚਨਾ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲੈ ਕੇ ਪਰਤਾਪ ਦੇ ਘਰੇ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ।

ਪਰਤਾਪ ਨੂੰ ਰਚਨਾ ਦੇ ਮਾਸੂਮ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਬਹੁਤ ਤਰਸ ਆਇਆ। ਉਪਰੋਂ ਰਚਨਾ ਦੀ ਉਮਰ ਵੀ ਦਸ-ਗਿਆਰਾਂ ਸਾਲ ਦੇ ਕਰੀਬ ਸੀ ਤੇ ਲਿਖਣਾ ਪੜ੍ਹਨਾ ਉਸਨੂੰ ਉੱਕਾ ਈ ਨਹੀਂ ਸੀ ਆਉਂਦਾ। ਪਰਤਾਪ ਨੇ ਬੜੀ ਮਿਹਨਤ ਅਤੇ ਲਗਨ ਨਾਲ ਰਚਨਾ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਇਆ ਤੇ ਦਸ ਕੁ ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਉਸਨੂੰ ਅੱਖਰਾਂ ਦੀ ਪਛਾਣ ਹੋ ਗਈ।

ਪਰਤਾਪ ਕੋਲ ਹੋਰ ਵੀ ਬਹੁਤ ਬੱਚੇ ਟਿਊਸ਼ਨ ਪੜ੍ਹਦੇ ਸਨ। ਜਦੋਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਆਈ ਸੀ, ਬੱਚੇ ਟਿਊਸ਼ਨ ਆਉਣੋਂ ਹਟਣ ਲੱਗੇ। ਪਰਤਾਪ ਨੇ ਇਹ ਗੱਲ ਕੋਈ ਬਹੁਤੀ ਗੋਲੀ ਨਾ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਕਰਮ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਕਰਦਾ ਪੜ੍ਹਾਉਂਦਾ ਰਿਹਾ।



ਇੱਕ ਦਿਨ ਪਰਤਾਪ ਬੱਸ ਅੱਡੇ ਤੇ ਬੱਸ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਪਿੰਡ ਦੇ ਅਮਲੀ ਟੋਲੇ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਨੇ ਤੰਜ ਕੱਸਦਿਆਂ ਕਿਹਾ, “ਵਾਹ ਬਈ ਮਾਸਟਰਾ ਤੇਰੇ ਤਾਂ ਨਜ਼ਾਰੇ ਆ ਹੁਣ, “ਅਖੇ ਨਾਲ ਪੁੰਨ ਤੇ ਨਾਲੇ ਫਲੀਆਂ” ਗੱਲ ਵਿੱਚੋਂ ਟੋਕਦਿਆਂ, ਦੂਜਾ ਅਮਲੀ ਬੋਲਿਆ, ਹੋ ਗਈਆਂ ਰਚਨਾ ਵਾਲੀਆਂ ਗਲੀਆਂ।”

ਪਰਤਾਪ ਉੱਥੋਂ ਚੁੱਪ—ਚਾਪ ਅੱਗੇ ਵੱਧ ਗਿਆ ਤੇ ਘਰ ਆ ਕੇ ਮਾਂ ਨੂੰ ਦੱਸਿਆ ਤਾਂ ਮਾਂ ਦੇ ਵੀ ਬਹੁਤੀ ਗੱਲ ਪੱਲੇ ਨਾ ਪਈ, ਪਰ ਪਿੱਛੇ ਖੜੇ ਜੋਤ ਨੇ ਸਭ ਸੁਣ ਲਿਆ ਸੀ ਤੇ ਕਾਗਜ਼ ਉੱਤੇ ਇੱਕ ਨਾਮ ਲਿਖ ਕੇ ਪਰਤਾਪ ਨੂੰ ਫੜਾ ਦਿੱਤਾ। ਸਮਝ ਤਾਂ ਹਜੇ ਜੋਤ ਨੂੰ ਵੀ ਇੰਨੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਪਰ ਉਸਨੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਸੁਣਿਆ ਸ਼ਬਦ ਕਾਗਜ਼ ਉੱਤੇ ਲਿਖ ਦਿੱਤਾ। ਪਰਤਾਪ ਨੇ ਨਾਮ ਪੜ੍ਹਿਆ ਤਾਂ ਲਿਖਿਆ ਸੀ “ਮਮਤਾ ਵੇਸਵਾ।”

ਹੈਰਾਨ ਹੋਏ ਨੇ ਜੋਤ ਨੂੰ ਪੁੱਛਿਆ ਤਾਂ ਇੰਨਾ ਹੀ ਜਵਾਬ ਮਿਲਿਆ ਕਿ “ਰਚਨਾ ਦੀ ਮਾਂ।”

ਹੁਣ ਪਰਤਾਪ ਨਾਲ ਰੋਜ਼ ਹੀ ਇਉਂ ਹੁੰਦਾ। ਕੋਈ ਨਾ ਕੋਈ ਬੰਦਾ ਟਿੱਚਰ ਕਰਦਾ ਪਰ ਉਸਨੇ ਸਿਰਫ਼ ਸੱਚੀ ਭਾਵਨਾ ਨਾਲ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਇਆ। ਸਤੰਬਰ ਦਾ ਮਹੀਨਾ ਸੀ ਕਿ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਚੋਣਾਂ ਆ ਗਈਆਂ ਅਤੇ ਵਿਰੋਧੀ ਧਿਰ ਨੇ ਰਸਤੇ ਵਿੱਚ ਜਾਂਦੇ ਪਰਤਾਪ ਨੂੰ ਜਖ਼ਮੀ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਲਹੂ—ਲੂਹਾਣ ਹੋ ਗਿਆ। ਜੋਤ ਤੇ ਰਚਨਾ ਨੂੰ ਜਦੋਂ ਪਤਾ ਲੱਗਿਆ ਤਾਂ ਉਹ ਵੀ ਹਸਪਤਾਲ ਪਹੁੰਚ ਗਏ। ਡਾਕਟਰ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਕਹਿ ਰਹੇ ਸੀ ਕਿ “ਖੂਨ ਬਹੁਤ ਵਹਿ ਚੁੱਕਿਆ ਏ, ਸਾਨੂੰ ਇਸੇ ਵਕਤ ਨੈਗੇਟਿਵ ਬਲੱਡ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।” ਪਿੰਡ ਦੇ ਕਿਸੇ ਵੀ ਬੰਦੇ ਦਾ ਖੂਨ ਮੈਚ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਮਮਤਾ ਨੇ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਦੱਸੇ ਆਪਣਾ ਖੂਨ ਦਾਨ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਤੇ ਨਰਸਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ “ਮਨੁੱਖਤਾ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਕੋਈ ਸੇਵਾ ਨਹੀਂ, ਤੁਸੀਂ ਮੇਰਾ ਨਾਮ ਗੁਪਤ ਰੱਖਿਓ।”

ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਰਚਨਾ ਤੇ ਜੋਤ ਪਰਤਾਪ ਦੇ ਸਿਰਹਾਣੇ ਬੈਠੇ ਅਰਦਾਸਾਂ ਕਰ ਰਹੇ ਸੀ ਤੇ ਪਿੰਡ ਦਾ ਅਮਲੀ ਟੋਲਾ ਮਾਸਟਰ ਦੇ ਅੰਤ ਦੀਆਂ।

ਸੰਜਨਾ

ਐਸ. ਸਰਕਾਰ ਕਾਲਜ ਆਫ਼
ਸਾਇੰਸ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਐਂਡ ਰਿਸਰਚ, ਜਗਰਾਉਂ
ਜ਼ੋਨ - ਮੋਗਾ-ਫਿਰੋਜ਼ਪੁਰ - ‘ਏ’



युवा मन में उमड़े विचार और उनकी अभिव्यक्ति केवल भाषा कौशल का विकास नहीं बल्कि उन विचारों के आदान-प्रदान का एक साझा मंच 'जवाँ तरंग' एक माध्यम है। यह पत्रिका उन सभी विद्यार्थियों को एक अवसर प्रदान करती है जो अपने जोशीले अंदाज में अपनी भावनाओं और मानस स्थिति को कागज पर उकेरते हुए साहित्य निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं। जवाँ तरंग का सतत प्रयास है कि विद्यार्थियों में लेखन के प्रति रुचि एवं जागरूकता विकसित की जाए। विद्यार्थियों की क्रियाशीलता एवं सृजनात्मक सोच को शब्दों में व्यक्त करना उनके कौशल का परिचय करवाता है।

जहां तक मैं समझता हूं विद्यार्थियों की सृजनात्मक शैली उत्साहित विचार व भावनात्मक एवं ज्ञानात्मक विचारों का विकास करना भी 'जवाँ तरंग' का एक प्रयोजन है, जिसे इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त एवं प्रकाशित कर उनकी सरल अभिव्यक्ति एवं मानसिक विकास को सही दिशा में लक्षित करने का एक प्रयास है।

डॉ. रोहताश
संपादक (हिन्दी)

प्राचार्य, संत बाबा हरी सिंह मैमोरियल खालसा कॉलेज ऑफ एडुकेशन, माहिलपुर
सहायक संपादक (हिन्दी अनुभाग) : डा. सर्वजीत कौर एवं श्रीमती मनदीप कौर

अनुक्रमणिका

(हिन्दी विभाग)

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
	कविता		
1	श्रम	गुरजोत	74
2	विश्व गुरु कहलाएंगे ?	सचिन यादव	74
3	उम्मीद	ममता कुमारी	75
4	जीवन	जसलीन कौर	76
5	इंतज़ार	जसपिंदर सिंह	77
6	लक्ष्य	मेघा सरीन	78
	निबन्ध		
7	युवा और नशा	किरन	79
8	प्रतिभा पलायन	आकांक्षा बुडोल	80
9	युवा और सोशल मीडिया	शिल्पा	82
	कहानी		
10	घर	हिमांशु	83
11	सपना और सच	सिमरन वर्मा	85
12	हमारे रिश्ते	प्रिया	86
13	घर	जोगिन्दर	88
14	इंतज़ार	गुरप्रीत कौर	89
15	घर वापसी	मीनू	91
16	तलाश	जोगिन्दर	92



श्रम

एक मज़दूर के स्वप्न में आए ईश्वर,
प्रणाम कर बोला, "प्रभु कैसे आए आप गरीब के घर?
लगता है आए रास्ता भूलकर!"
प्रभु बोले, "हम विशेष तुमसे मिलने आए दूर से चलकर,
तू कह रहा है, आए रास्ता भटककर!"
मज़दूर बोला- "मुझ गरीब के लिए
आप आए, राजा महाराजा छोड़कर,
छप्पन भोग, सुनहरी मुकुट, मखमली बिस्तर,
मेरी सूखी रोटी के लिए आए छोड़कर,
मेरे यहाँ है भूख, प्यास, गरीबी, आँसू,
ईंट का तकिया, जमीन है बिस्तर,
टूटी-फूटी कुटिया, करता हूँ मेहनत जी तोड़कर,
कुछ खास नहीं है मेहनत को छोड़कर।"
प्रभु बोले-"कुछ भी विशेष नहीं है श्रम को छोड़कर,
श्रमी को देखो ना तुम छोटे बनकर,
शुद्ध सोना बनता मेहनत से, रहो ना खोटे बनकर,
सर्वोत्तम है श्रम, गए नानक उपदेश देकर,
श्रम से चमकती है किस्मत, रह ना गरीबी से डरकर,
कृष्ण ने कर्म को महान बताया, लड़ा था अर्जुन सीना
तानकर,
श्रम ने समुद्र में सेतु बनाया, गए जिसे श्री राम लांघकर,
हर धर्म गुरु, महात्मा की नज़र में है श्रम महान,
देखो सारे ग्रन्थ पढ़कर,
स्वादिष्ट व्यंजन है मेहनत, देख इसका स्वाद चखकर,
श्रम में कोई शर्म नहीं, कर इसे रूह लगाकर,
मज़दूर से राजा बनेगा, तू कर इसे, चिन्ता मुझपे
छोड़कर।"
मज़दूर बोला, "धन्य हूँ मैं श्रम रूपी श्रृंगार लगाकर,
प्रसन्न हूँ मैं आप से ज्ञान पाकर।"
चले गए ईश्वर,
श्रम का महत्त्व समझाकर,
सोने गए थे खुद ईश्वर
हमेशा के लिए उस मज़दूर को जगाकर,
चले गए ईश्वर जागृति की जोत जलाकर।

गुरजोत

दशमेश गर्ल्स कॉलेज, बादल
इंटर जोनल

विश्व गुरु कहलाएंगे ?

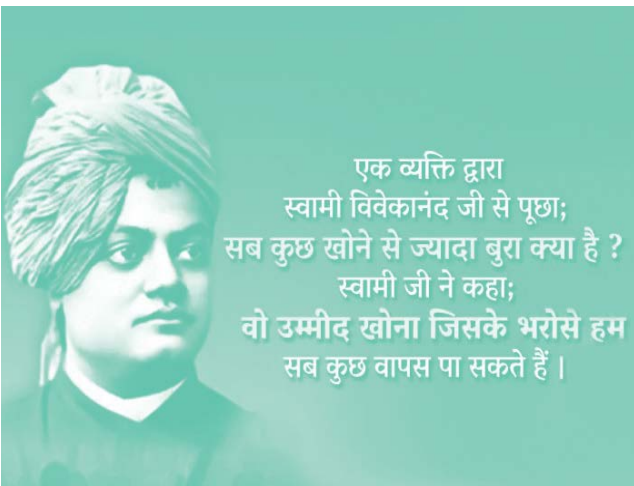
देश प्रेम की अजब रीत है
कहने को हम भाई है,
जाति धर्म की आग लगे तो
हम भी एक कसाई है।
राम नाम की गूँज उठे तो
हत्यारे बन जाते हैं,
रक्त बहा दरिया के भीतर
हाथों को नहलाते हैं।
सत्य बड़ा कड़वा होता है
हम उसको ठुकराते हैं,
भूख भरी आँखों से पूछो
कैसे रात बिताते हैं?
नारी की मूरत भारत में
देवी में दिख जाती है,
औरत की गरिमा राहों पर
पैसे पर बिक जाती है।
भारत माता की जय कहते
राष्ट्र गीत हम गाते हैं,
भूखे बच्चे की रोटी
जहाँ गिद्ध उठा ले जाते हैं।
जय जवान और जय किसान की
बुद्धि बड़ी समानी है,
पेड़ों पर जो लटक रही है
क्या वह लाश कहानी है?
खामोशी का पाठ सीख लो
कहते हैं संदेश से,
चौराहे पर लाश लटकती
है उनके आदेश से।
जो व्यक्ति शासन के ऊपर
तीखे प्रश्न उठाता है,
वह व्यक्ति भारत के भीतर
देशद्रोही कहलाता है।
खुद के घर में आग लगी है
तुमको जीवन सिखलाएंगे,
हर पल पैसा लुढ़क रहा है
विश्व गुरु कहलाएंगे?

सचिन यादव

एस.जी.जी.एस. कॉलेज, सेक्टर-26, चंडीगढ़
जोन - चंडीगढ़ - 'ए'

उम्मीद

आज भी उम्मीद लगाए बैठी हूँ
तुम्हारी स्मृतियों की एक तस्वीर बनाए बैठी हूँ।
तुम लौटोगे!
द्वार को पुष्पों से सजाए बैठी हूँ,
केवल एक उम्मीद लगाए बैठी हूँ,
तुम कह गए थे आऊँगा,
पाँव पर अपने न सही
तिरंगे में ही लिपट कर आऊँगा।
हूँ मैं लाल माँ भारती की,
माँ का आँचल मैं रंग जाऊँगा
इसी आस में
तिरंगे की एक छवि हृदय में बनाए बैठी हूँ,
तुम आओगे!
यही उम्मीद लगाए बैठी हूँ।
निमिष भर को भी आँखें मेरी न झपकी हैं,
जब से गए हो तुम
द्वार पर ही आँखें मेरी अटकी हैं।
याद है....
हाथों की अंगुलियों से मैंने तुम्हारा विजय तिलक किया था।
साजन मेरे लौट के आना
धीरे से मैंने यही कहा था।
इसलिए



नयनों के जल से दीप जलाए बैठी हूँ।
तुम आओगे!
यही उम्मीद लगाए बैठी हूँ,
भारत माँ के लाल हो तुम,
पुत्र धर्म अपना निभा आना
और सुनो!
सजनी बैठी है तुम्हारी.....
केवल तुम्हारी आस में
उसकी खातिर
माँ के चरणों की धूल उठा लाना
और हाँ!
कल दिवाली है
बिटिया ने तुमको याद किया है
गुड़िया एक तुम लेते आना
तुम्हारे खातिर
आरती का एक थाल सजाए बैठी हूँ।
तुम आओगे!
यही उम्मीद लगाए बैठी हूँ
जीवन के बीच सफर में
साजन मेरे न मुख मोड़ जाना
श्वेत रंग देकर वस्त्र मुझे
अंधकार में न छोड़ जाना
सरहद पर लड़ना तुम वीर बनकर
फिर, घर अपने तुम लौट आना।
तुम्हारे ही नाम की माथे पर बिंदिया सजाए बैठी हूँ,
तुम आओगे!
यही उम्मीद लगाए बैठी हूँ।
यही उम्मीद लगाए बैठी हूँ।

ममता कुमारी

पी. जी. जी. सी. कॉलेज, सेक्टर - 42, चंडीगढ़
जोन - चंडीगढ़ - 'बी'

जीवन

कितनी मधुर कितनी मीठी गूँज रही थी किलकारी,
जीवन के फूलों के साथ महक रही थी ईश्वर की फुलवारी,
हर क्षण हर कण से जीवन अंकुरित होता है,
नवजात शिशु की तरह कभी हँसता कभी रोता है।
कहते हैं कि सीखना कभी ना छोड़ो,
जीवन बहुत कुछ सिखाता है,
जिन्दगी की रंगों को नए नज़रिए से दिखाता है,
हर किसी का जीवन हमें कुछ न कुछ बताता है,
मेरा उस सीख से अनजान होना मुझे सताता है।
जीवन दुख और सुख दोनों का मेल है,
क्या जिन्दगी जीना कोई मज़ाक या खेल है?
जिन्दगी को थोड़ा समझना और थोड़ा होता है समझाना,
वृक्ष की डाली से सूखे पत्ते तोड़ हरियाली को सजाना।
प्रकृति भी अपने जीवन से बहुत कुछ सिखाती है,
जीवन की खूबसूरती को सरलता से दर्शाती है,
पर्वत शीश उठाकर चलना हमें सिखाता है,
सागर मन में गहराई लाना हमें बताता है,
पृथ्वी कहती धैर्य ना छोड़ो कितना ही हो सर पर भार,
नभ कहता है फैलो इतना कि ढक लो तुम सारा संसार।
भोर की रोशनी जीने की आशा हम में भरती है,
चाँद की खूबसूरती उमंग हम में भरती है।
सृष्टि के हर कण ने मुझमें खुशियों का बीज बोया है,
मैंने हर क्षण खुद को जीवन की सुन्दरता में खोया है।
एक किसान का जीवन सादगी सिखाता है,
खुद रूखी रोटी खा दुनिया का पेट वह भरता है।
अपनी तकलीफें भूल कर, अनाज का करता-धरता है

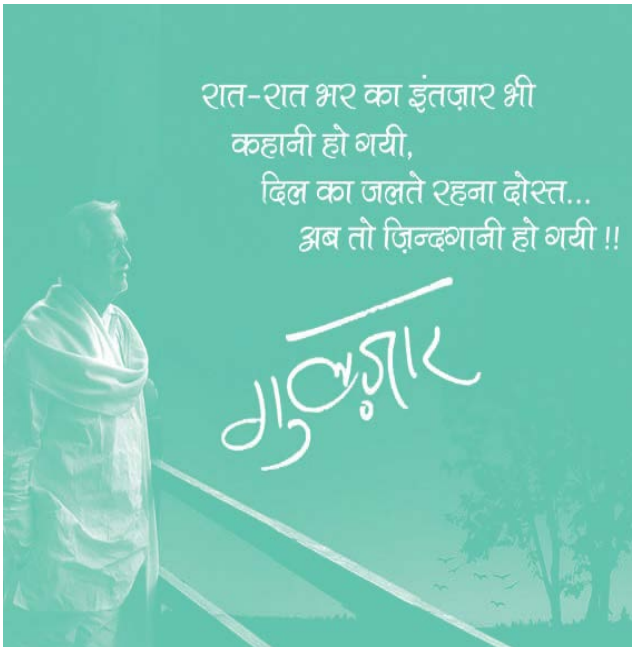
सादे कपड़े पहन सादा जीवन वह जीता है,
सभी के चेहरों पर खुशी देख, वह संतोष का घूँट पीता है।
एक जवान का जीवन अपनापन जताता है
अपने घर से दूर, अपने देश को अपना घर मान लिया,
देश की सुरक्षा ही पहला धर्म, यह उसने जान लिया,
आँखों में नमी, होंठों से मुस्कुराने की कला वह जानता है,
देश के लोगों की सुकून भरी नींद को वह खुशी मानता है।
एक बाल मज़दूर का जीवन जिन्दगी जीने का जज़्बा
सिखाता है,
एक मासूम बच्चे का परिवार जब रोटी को रो रहा था,
उस समय गरीबी का कहर उसमें जिम्मेदारियों का बीज बो
रहा था।
माँ की साड़ी, पिता की दवाई,
बहन की गुड़िया, भाई की पढ़ाई,
हर जिम्मेदारी उसने निभाई।
उसके जीवन के संघर्ष ने हर लड़ाई में उसे जीताया था,
कष्टों में घिरे हुए भी, उसने माँ को सब ठीक बताया था,
वह जीवन
चाहे वह मनुष्य का हो
या प्रकृति के किसी तत्व का,
हमें कुछ न कुछ सिखाता है,
हमारे उस से अनजान होना,
हमें कष्टों की कगार पर ले जाता है।

जसलीन कौर

मालवा सेंट्रल कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वीमेन,
सिविल लाइंस, लुधियाना
जोन - एजुकेशन - 'बी'

इंतज़ार

आज तक मेरी ज़िंदगी, दुनिया की रंगत से बेज़ार है,
गमों का आलम है, के गम भी बेशुमार है,
उम्र दराज़ से मुझे, खुदाई नज़र का 'तज़ार' है,
काम मेरा है तड़पना, मेरी रुह पड़ी बेरोज़गार है,
आज तक मेरी ज़िंदगी, दुनिया की रंगत में बेज़ार है।।
मुझे फुरसत ही कहाँ, अपने हाल का बयान दूँ,
कोई पूछे गर हाल मेरा, उसे दुआओं का आसमान दूँ,
हर एक को है खुद पर गुमान बहुत, मैं तो अपने आप पर
हैरान हूँ,
वो बंद घर की हालत जैसे, हवेली कोई वीरान हूँ,
मुझे फुरसत ही कहाँ, अपने हाल का बयान दूँ।।
ऐ खुदा तेरी ईलाही नज़र की मैं जुस्तुजू में हूँ,
हूँ मैं गुम तेरी तालाश में, तेरी चाहत से गुप्तगू में हूँ,
मैं भटकता फिरता हूँ आसमानों में, अपनी ही आरजू में हूँ,
जो अशक बरसा तेरी याद में, मैं जिंदा उस आस में हूँ,
ऐ खुदा तेरी ईलाही नज़र की मैं जुस्तुजू में हूँ।।



सुना है तू फूलों की ईलाही महक में रहता है,
सुना है तू इश्क के आबशार में बहता है,
मेरी हयात-ए-जुदाई तू अपने दिल में सहता है,
तू एक बच्चे की दुआ में जिंदा है, यह आलम कहता है,
तू था इंतज़ार मीर, गालिब, जॉन और 'इकबाल' का,
हो हर बात का अंत, तू जवाब है उस सवाल का,
तू है एक रोशनी, आबशार है जाहो-जलाल का,
तेरी हस्ती है ना-वक्त, तेरा किस्सा भी कमाल का,
तुझे पाने के लिए पहले तुझ जैसा होना होगा,
तेरी तालाश में पहले, खुद को खुद से खोना होगा,
रातों को जागकर नूर के आँसू रोना होगा,
तेरी मिठास पाने को, मोहब्बत का बीज बोना होगा,
तुझे पाने के लिए पहले तुझ जैसा होना होगा।
है यही चाहत मेरे हर गुनाह को तू माफ करदे,
है यही चाहत मुर्दा लाशों का तू इंसफ करदे,
है यही चाहत मेरी रूह को अपनी रोशनी से साफ करदे,
मेरे ज़िंदा इंतज़ार को तू अपनी झलक से बेताब करदे,
है यही चाहत मेरे हर गुनाह को तू माफ करदे।।
ऐ खुदा कई सालों से, हम तेरे 'इंतज़ार' में हैं,
जो काफ़िला तुझे पाने चला था, हम भी उस ही कतार में हैं,
आज तक फ़रोग कुछ ना हुआ, आज तक बस हार में हैं,
हम तो तेरे घर के खुदा, मुर्दा पहरेदार से हैं,
ऐ खुदा कई सालों से, हम तेरे इंतज़ार में हैं।।

जसपिंदर सिंह
जी. जी. एन. खालसा कॉलेज, लुधियाना
जोन - लुधियाना - 'ए'

लक्ष्य

लक्ष्य हर रोज़ आने वाली
नयी सुबह नहीं,
यह तो अंतरिक्ष में खड़ा
स्थिर सूरज-सा है,
जो हिलता नहीं, चलता नहीं।
अर्जुन के लिए मछली की आँख थी लक्ष्य,
तो कल्पना चावला के लिए चाँद था लक्ष्य,
छोटी-सी आँख से लेकर विशाल चाँद तक
इसका कोई माप नहीं।
क्या है, इसका घर कहीं?
आखिर इस लक्ष्य का कैसा है रूप
बारिश की बूँद-सा है
या सर्दी की धूप?
फिर कहा किसी ने,
यह तो पानी सा है,
डालोगे जिस बर्तन में,
ढाल लेगा वही सुरुप।
खूब खुदाई करके आखिर,
खोजा मैंने फिर अपना नीर,
चोटों के तोहफे, मिट्टी को चीर,
लक्ष्य की राह में खूब चुभे काँटे,
साँसे भी गिनी और दुख भी बाँटे,



पर यह तो निकला क्षितिज-सा
जितना पास पहुँचती हूँ,
यह फिर उतना ही दूर हो जाता है क्यों?
इस अनजान दिल को आया फिर समझ,
अरे! यह तो बाहर नहीं,
दिखता है मेरे ही अंदर,
फुदक रहा है जैसे कोई बंदर,
शायद भूखा है
और गला भी सूखा है,
खाने को माँग रहा है मेहनत
और पीने को पसीना,
दक्षिणा के नाम पर मुझसे सब कुछ छीना।
रहा कुछ न मेरे पास,
पर अभी भी इस दौड़ में नहीं हुई मैं पास।
तब मैंने जिन्दगी दान कर दी,
फिर लक्ष्य ने मेहरबानी की,
बना ही लिया मैंने अपने पानी को हवा,
जमीन पर नहीं
अब ऊँचाइयों में है इसका आशियाना।
बड़े शान से लिखती हूँ मैं यह कथा,
पर लोगों ने तो गानी है वही गाथा,
कि मैंने तो कोई मुश्किल न पाई,
देखो तो ज़रा, क्या किस्मत हैं पाई।
कैसे समझाऊँ उनको,
मैंने तो पूरी जिन्दगी लक्ष्य को भेंट चढ़ाई।
मैंने तो पूरी जिन्दगी लक्ष्य को भेंट चढ़ाई।

मेघा सरीन

गर्व. कॉलेज फॉर गर्ल्स, लुधियाना
जोन - लुधियाना - 'बी'

युवा और नशा

**नशा है एक बड़ी बुरी बीमारी,
इससे करो दूरी हर बारी।**

भूमिका:

आज भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में युवा में नशाखोरी देखी जा रही है। लोगों में तनाव अधिक होने से उनमें नशे जैसी आदतें देखने को मिल रही है। नशा न केवल हमारे स्वास्थ्य बल्कि आसपास के वातावरण के लिए भी हानिकारक है। नशा आज युवाओं को अपनी ओर इस तरह आकर्षित कर रहा है जिस प्रकार छोटा बच्चा नए खिलौने की ओर आकर्षित होता है। नशा हमारे स्वास्थ्य के साथ-साथ हमारे साथ रह रहे अन्य स्वस्थ व्यक्ति को भी बीमार कर देता है। कितने ही प्रकार के नशीले पदार्थ है जो इंसान को बुरी आदतों का इतना आदि बना देते हैं कि वह सोचने समझने की शक्ति खो बैठता है, वह क्या कर रहा है? उसके जीवन का लक्ष्य क्या है? आज भारतीय समाज के युवाओं में नशीले पदार्थों का उपयोग बहुत अधिक देखने को मिलता है। आज भारत में युवाओं की मौत और आत्महत्या के अधिक आँकड़े देखने को सामने आ रहे हैं। देश में युवाओं में नशा बढ़ने के कुछ मुख्य कारण हैं। जिनका हम विस्तृत रूप में वर्णन करेंगे।

1. तनाव-आज का जीवन प्रतियोगिताओं से भरा है। युवाओं में आगे बढ़ने की होड़, बहुत अधिक बढ़ चुकी है। इसके लिए वह गलत कदम उठाने तक को भी तैयार हो जाते हैं। आज सभी को जीतना है। जिसके लिए वे कुछ भी कर गुजरने को तैयार होते हैं। ऐसी स्थिति में तनाव होना आम बात है और तनाव से दूर रहने के लिए नशे जैसे पदार्थों का सहारा लेते हैं। नशे की अधिक मात्रा के सेवन से अक्सर देखा गया है कि वह मृत्यु का शिकार भी हो रहे हैं। बड़े-बड़े अभिनेता व अभिनेत्रियाँ भी इससे दूर नहीं। हमारी सरकार को कुछ उचित कदम उठाने चाहिए ताकि भारत में नशीले पदार्थों का उत्पादन ही बंद हो जाए।
2. बढ़ती मानवीय इच्छाओं के कारण मनुष्य बिना परिश्रम के सब कुछ पाना चाहता है। आज मानव मेहनत करके बिल्कुल खुश नहीं। इच्छाओं की पूर्ति न होने पर वह गलत रास्ता चुन लेता है और

विलासिता की भूख से ऊपर कुछ भी नजर नहीं आता है। यदि उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई तो वह नशीले पदार्थों का प्रयोग करके अपने आपको ऐसी स्थिति में ला खड़ाकर लेता है जहाँ से निकलना उसके लिए संभव नहीं है। कई बार मानव बिना कुछ सोचे समझे फैसला कर लेता है जिसके कारण उसके परिवार को भी बहुत शर्मिंदा होना पड़ता है।

3. लचीली सरकारी व्यवस्था के कारण हमारे भारत में सरकार द्वारा अधिक कड़े कदम नहीं अपनाए गए। जिससे युवा नशाखोरी करते दिखाई पड़ रहे हैं। आज जगह जगह देखने को मिलता है कि शराब की दुकानें खुली हुई हैं। नशीले पदार्थों का व्यापार आम बाजारों में हो रहा है। आज भारत की काफी दयनीय दशा है और लोगों की मानसिकता व युवाओं में बदले तथा प्रतिस्पर्धा की भावना का उग्र रूप देखने को मिलता है। इसके चलते वे अपनी विलासिता को परिपूर्ण करने के लिए अपनी सारी हदें पार कर देते हैं। भारतीयों की मानसिकता है कि दूसरे लोगों को अपने से कम समझते हैं और यह गलत साबित होने पर उग्र रूप धारण कर लेते हैं। भारतीय समाज के इतिहास से ही यह देखा जा सकता है कि अंग्रेजों द्वारा हमारे देश में नशीले पदार्थों को लाया गया और इस का आदी बना दिया गया। लोग नशे के इतने आदी हो गए थे कि भारत जैसे अमीर देश को अंग्रेजों ने गरीब से गरीब बना दिया। अंग्रेजों द्वारा गुलाम बनाने के बाद इतना शोषण किया गया फिर जबरदस्ती अफीम की खेती कराई गई। इसलिए हमें इतिहास से सीख मिलती है। कि यदि हम नशीले पदार्थों के चक्कर में फंसे तो वह दिन दूर नहीं कि फिर से हमारा शोषण बाहरी ताकतों द्वारा होने लगेगा। इससे हमन केवल अपने लक्ष्य से दूर होंगे बल्कि जीवन का भी कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। हम पर हमारे माता-पिता का, भाई-बहन का तथा देश और समाज का भविष्य भी जुड़ा है इसलिए हमें अपने देश और समाज के विकास पर ध्यान देना चाहिए और इन सभी बातों से दूर रहना चाहिए। क्यों ना हम यह प्रण करें कि हम ना करेंगे ना किसी को करने देंगे।

मैं सुधार के कुछ बिंदु देना चाहूंगी और मेरे साथ सब इसकी तरफ ध्यान दें व अमल में जरूर ले आए। विद्यालयों और महाविद्यालयों में समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाने चाहिए ताकि युवाओं में इसको लेकर नकारात्मक सोच बने और कोई भी इस रास्ते पर कभी न जाए।

1. रैलियां और सेमिनार कराएं ताकि सभी लोगों में इसके प्रति नकारात्मकता आए और हम अपने देश को नशामुक्त कर सकें।
2. नशाखोरी को जड़ से खत्म करने के लिए सरकार द्वारा उचित कानून बनाना चाहिए व सख्ती से कानून का पालन कराया जाना चाहिए जिससे लोगों में भय बने और वह नशे से जुड़े किसी भी कार्य को अंजाम न दें।
3. शिक्षा प्रणाली में सुधार करके, शिक्षा प्रणाली को लचीला तथा कठोर दोनों रखना चाहिए। कई बार बच्चे पढ़ाई के अत्यधिक दबाव के कारण भी नशे

जैसीचीजों का सहारा लेते हैं। नशाखोरी को बंद करेंगे, देश का नाम रोशन करेंगे।

निष्कर्ष:

नशाखोरी विश्व की बड़ी समस्या है। सरकार को चाहिए कि वह कड़े नियम लागू करें और इनका सख्ती से पालन कराया जाए। लोगों को स्वास्थ्य के बारे में समझाना चाहिए, जागरूकता पैदा करनी चाहिए व उनकी मानसिकता में बदलाव लाने के लिए समय-समय पर सेमिनार आयोजित करने चाहिए ताकि उनकी मानसिकता तथा सोच में बदलाव आए। आज हम यह निर्णय लें कि हर गांव व हर शहर को नशा मुक्त करने के लिए हम अपने स्तर पर लोगों को नशे से दूर रहने की याचना एवं जागरूक करने का प्रयास करें।

किरण

जी. जी. एस. सी. डब्ल्यू., सेक्टर 26, चंडीगढ़
जोन- चंडीगढ़ - 'बी'

प्रतिभा पलायन

आवश्यकता, आविष्कार की जननी है। जैसे-जैसे मानव प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है, उसकी आवश्यकताएं नया रूप लेती जा रही हैं। कुछ हद तक आवश्यकता का स्थान इच्छाओं ने ले लिया है और मानव हर सूरत में जितना उससे बन पड़े अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करता है। हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं और हम शुरू से इस बात पर प्रकाश डालें तो एक बच्चा जब विद्यालय जाना शुरू करता है, हमने यह पाया है कि उसके माँ-बाप उसके लिए सपने देखना शुरू कर देते हैं। अगर वह बच्चा ज्यादा प्रतिभावान है तो माता-पिता की अपेक्षाएं बच्चे से और ज्यादा बढ़ जाती हैं। आजकल के माता पिता अपने अधूरे सपने को अपने बच्चों से पूरा करते हुए देखना चाहते हैं, और खासकर अधिक प्रतिभावान बच्चे भी माता-पिता का पूरा साथ देना चाहते हैं। सातवीं-आठवीं कक्षा तक बच्चे इस बात का चयन कर लेते हैं कि भविष्य में उन्हें क्या बनना है। विकासशील देशों के विद्यार्थी 12वीं कक्षा के बाद पढ़ाई या नौकरी के लिए विदेशों का चयन कर रहे हैं। इस पूरी घटना को प्रतिभा पलायन कहा जाता है। किसी ने क्या खूब कहा है कि जिंदगी में फर्स्ट नहीं आओगे तो तुम्हें कोई जानेगा भी नहीं और इस फर्स्ट आने की होड़ में भावी पीढ़ी को राष्ट्र के प्रति अपने

कर्तव्य से दूर कर दिया है। विदेशों में संसाधनों की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता बच्चों को अपनी ओर खींच रही है।

प्रतिभा पलायन का सबसे बड़ा उदाहरण भारत में पंजाब राज्य बनकर सामने आया है। हमने यह देखा है कि हर रोज हजारों की संख्या में पंजाबी कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और यू. के. मुख्य तीन देशों की तरफ पलायन कर रहे हैं। पासपोर्ट दफ्तरों में भीड़ देखने को मिल रही है। खैर हम सारा दोष बच्चों या डिग्री धारकों पर ही नहीं लगा सकते। उनके पलायन करने का मुख्य कारण भारत में मुख्यतः नौकरी-पेशायोग्यता के अनुसार न दिए जाने और अनियमित व कम वेतन भी है। इसलिए भावी पीढ़ी यह सोचने पर मजबूर हो गई है कि अपने देश में उनकी प्रतिभा की कद्र नहीं है। वह अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने के लिए भी विदेशों में कार्यरत होने के लिए बेताब है। पलायन का एक बड़ा कारण भारत जैसे विकासशील देश में प्रतिभाओं के बीच बढ़ता हुआ मुकाबला है। यहां छोटी से छोटी नौकरी लेने के लिए भी बहुत कठिन प्रतियोगिताओं से गुजरना पड़ता है। इसका कारण अधिक जनसंख्या और उनके बीच में बेहतर बनने की होड़ है। आज के समय युवाओं की संख्या में डिग्री धारक युवाओं की संख्या अधिक है। उस पर बेरोजगारी की

समस्या ने राष्ट्रीय स्तर पर विकराल रूप धारण कर लिया है। विदेशों में उसी डिग्री के आधार पर वह आजीविका कमा रहे हैं जो उनकी जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ उनकी इच्छाओं की पूर्ति भी कर रही है। दूसरे देशों में उनको अपनी प्रतिभा के अनुसार पर्याप्त वेतन और आदर सम्मान भी मिल रहा है।

विकासशील देशों में रिसर्च के लिए पर्याप्त संसाधनों और अच्छी प्रयोगशालाओं की कमी है जिससे उनकी प्रतिभा का सीधे-सीधे हनन हो रहा है। अब वही युवा अपनी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए एवं प्रगति के लिए विदेशों में पलायन करने को मजबूर है। प्रतिभा पलायन का दुष्प्रभाव देश की प्रगति पर पड़ता है जिससे राष्ट्र की प्रगति बाधित होती है। अगर वही प्रतिभा अपने देश के लिए काम करें तो विकासशील से विकसित होने के बीच की दूरी कम होगी। अगर हम मुख्यतः भारत की बात करें तो इस बात का लोहा पूरी दुनिया ने माना है कि इस दुनिया में भारत में सबसे प्रतिभावान लोग हैं। एक समय था जब चर्चिल ने कहा था कि भारत को आज़ाद भी कर दिया जाए तो भी भारतीय देश को नहीं चला पाएंगे। आज उनके खुद के राष्ट्र, ब्रिटेन में एक मूल रूप से भारतवंशी 'ऋषि सुनक' ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली है। हमारे देश ने कितने ही बड़े महान प्रतिभावान हस्तियों को दुनिया को दिया है, चाहे वे स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री या भीमराव अंबेडकर हों। मिसाइलमैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से किसी विश्वविद्यालय के मंच पर भाषण देते हुए एक बार पूछा गया कि भारत से बड़े स्तर पर प्रतिभा पलायन हो रहा है, ऐसे तो देश में प्रतिभाशाली दिमाग ही खत्म हो जाएंगे। इस पर उन्होंने हंसते हुए गर्व भरी आंखों से यह उत्तर दिया कि जो लोग राष्ट्र की सेवा नहीं करना चाहते, राष्ट्र को उनकी आवश्यकता नहीं है। भारत में प्रतिभा की कमी नहीं है। जरूरत है तो उस प्रतिभा को सामने लाने की। पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से भर गया। ऐसा नहीं है कि प्रतिभा पलायन से देश को नुकसान नहीं हो रहा है, बल्कि प्रगति की ओर अग्रसर भारत बाधित जरूर हो रहा है। पर भारत में रहकर जो अपनी पढ़ाई पूरा करना चाहते हैं और बाद में राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को निभाना चाहते हैं उनसे जो बन पड़े उतना राष्ट्र के लिए अपना योगदान दे सकते हैं।

मंजिलें उन्ही को मिलती हैं, जिनके सपनों में जान होती है।

परों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।

प्रतिभा पलायन को रोकने के लिए स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर कदम उठाने की जरूरत है। सबसे पहले तो काम होना चाहिए देश की अर्थव्यवस्था जो अच्छी आर्थिक स्थिति में आ सके और युवाओं की भूख को शांत किया जा सके और उन्हें वापस अपने देश के प्रति उनके कर्तव्यों का बोध कराया जा सके। आर्थिक स्थिति बेहतर हो जाने पर दोनों बातें कृतार्थ हो पाएंगी। युवाओं की प्रतिभा को उचित अवसर प्रदान कर उनकी कुछ कर दिखाने की चाह पूरी होगी और साथ ही देश प्रगति की ओर और तेजी से अग्रसर हो पाएगा। बेरोजगारी की समस्या पर व्यापक स्तर पर काम करने व सोचने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

यह बात एक राष्ट्र अपनी प्रतिभा से कह रहा है, जो पलायन कर रही है:-

रोटी कपड़ा और मकान, यही है जीवन के तीन आधार।

पर चलते-चलते तू जा पहुंचा सात समुंदर पार और बदल गया तेरा राष्ट्र के प्रति प्यार।

अभी कुछ नहीं हुआ हमारी हिम्मत के बाहर, लौट आ !मिलकर दोनों लगाएंगे राष्ट्र का बेड़ा पार।

मैं भी सोचूँ तेरे लिए और तू भी सोच मेरे लिए, याद कर ! यही थे हम और यही हैं हम।

अतः आज की पीढ़ी को यह सोचने की जरूरत है कि जिन संसाधनों के पीछे हम भी विदेश तक जा पहुंचे हैं, अगर हम अपनी प्रतिभा का उपयोग करके और पूरे दिलो दिमाग से डटकर वही संसाधन अगर अपने देश में उपलब्ध करवा दें तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा अपना देश प्रगति, समृद्धि और खुशहाली से भरपूर होगा जो आने वाली हमारी पीढ़ी की आवश्यकताओं के साथ-साथ उनकी इच्छाओं की भी पूर्ति करेगा। माना समय लगेगा पर अगर हम अपना समय अपने राष्ट्र में खर्च करेंगे तो यह समय लाना मुमकिन है।

अकांक्षा बुढोल

देव समाज कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सेक्टर 45, चंडीगढ़

जोन- एजुकेशन - 'ए'

युवा और सोशल मीडिया

**हमारा भारत देश महान है, युवा इसकी शान है,
युवाओं को सही पथ दिखाना, मानवता की असल
पहचान है।**

आज के समय में युवा और सोशल मीडिया एक पक्के मित्र की तरह साथ हैं। आज का युवा पूरी तरह से सोशल मीडिया के संपर्क में है। उनको इसकी बहुत जरूरत है। आज का दौर कुछ ऐसा हो गया है कि सोशल मीडिया के बिना युवा अपने दैनिक कार्य नहीं कर पाते उन्हें प्रत्येक कार्य हेतु इसका प्रयोग करना पड़ता है-जैसे अपनी पढ़ाई के लिए, ऑनलाइन सामान मंगवाने के लिए, किसी को कोई संदेश भेजने के लिए, किसी से संपर्क बनाने के लिए यहां तक की यातायात के लिए भी आज का युवा सोशल मीडिया का प्रयोग करता है। वह घर बैठकर ही यह पता लगा लेता है कि उसकी ट्रेन या बस कहाँ पर है। आज का समय भी कुछ ऐसा ही है जहाँ युवाओं को सोशल मीडिया से जुड़ना पड़ेगा। परंतु विचार करने वाली बात यह है कि युवाओं को सोशल मीडिया का संपूर्णता से ज्ञान हो, उन्हें यह पता होना चाहिए कि सोशल मीडिया उनके लिए मित्रता के साथ दुश्मनी भी निभाती है। इसका जरूरत से अधिक या अनुचित कार्य के लिए प्रयोग नुकसानदेह हो सकता है। इसलिए आज के समय में युवाओं को इसका प्रयोग अपने हित को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। इसकी उपयोगिता को समझ इसका सदुपयोग करना चाहिए तब जाकर युवाओं को सोशल मीडिया से कोई लाभ प्राप्त होगा।

सोशल मीडिया के लाभ

सोशल मीडिया के द्वारा आज युवा वर्ग बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। आज का युवा इसका उचित उपयोग करके प्रत्येक क्षेत्र में सफलता हासिल कर रहा है। हमारे युवाओं को इसकी जरूरत भी है। कोरोना जैसी भयानक महामारी के समय एक पल के लिए तो सभी को लगा कि उनकी पढ़ाई रुक गई। सबके मन में अपनी पढ़ाई को लेकर चिंताएं उत्पन्न होने लगीं। उस भयानक स्थिति में सोशल मीडिया युवाओं के लिए वरदान बना। इसके जरिए विद्यार्थी अपनी पढ़ाई जारी रख सके। अध्यापक भी बड़ी आसानी से बच्चों को घर बैठे पढ़ा लेते थे। जिससे कि किसी को कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा।

आज का युवा बहुत जिज्ञासु है, उसे भिन्न भिन्न प्रकार की जानकारी इकट्ठा करना अच्छा लगता है जिसके लिए उसे सोशल मीडिया का प्रयोग करना पड़ता है। वह सोशल मीडिया के द्वारा किसी भी वस्तु की जानकारी के लिए उसकी तह तक जाने के लिए हर संभव कोशिश करता है। इस खोज में सोशल मीडिया उसके लिए लाभदायक सिद्ध होता है। कहीं भी और कैसी भी स्थिति में दूर बैठे किसी देसी विदेशी अध्यापक से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकता है। युवा सोशल मीडिया के द्वारा देश विदेश की जानकारी को प्राप्त कर लेता है। सोशल मीडिया के प्रयोग से अपने समय को बचाता है। क्योंकि आज भीड़-भाड़ के दौर में युवाओं को किसी भी सरकारी या गैर सरकारी कार्य हेतु बड़ी-बड़ी पंक्तियों में खड़ा होना पड़ता है। सोशल मीडिया के द्वारा युवा वर्ग अंतरराष्ट्रीय एकता स्थापित कर रहा है। सोशल मीडिया के माध्यम से वह दूसरे देशों के लोगों से बातचीत कर वहाँ की संस्कृति को समझता है और उनकी अच्छाइयों को ग्रहण करता है। इस प्रकार युवा अंतरराष्ट्रीय मित्रता स्थापित करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया हमारे लिए लाभदायक है।

सोशल मीडिया की हानियाँ

सोशल मीडिया से हमारे समाज को बहुत हानियों का सामना भी करना पड़ता है। लोग गलत समाचार एक दूसरे को भेज देते हैं जिसके चक्कर में युवा वर्ग परेशान होता है और वह गलत रास्ते पर चल पड़ता है। कुछ असामाजिक तत्व युवाओं को सोशल मीडिया द्वारा भ्रमित कर उनसे दंगे फसाद करवाते हैं। सोशल मीडिया के द्वारा आज बहुत लूटपाट हो रही है। आज का युवा सोशल मीडिया से इतना प्रभावित हो गया है कि वह इसके बिना नहीं रह पाता जिस कारण उसके शारीरिक तथा मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार जरूरत से ज्यादा कोई भी चीज जहर के समान हो जाती है, उसी प्रकार सोशल मीडिया का युवाओं द्वारा अत्यधिक प्रयोग उनके विकास के लिए हानिकारक है अर्थात् जहर के समान है। युवा आज कोई भी कार्य घर बैठे आसानी से करना चाहता है। जिस कारण उसकी शारीरिक शक्ति कम होती है। वह सोशल मीडिया के द्वारा दूसरे लोगों के साथ संपर्क स्थापित कर लेता है पर साथ में बैठे अपने परिवार के बारे में कुछ नहीं पता

होता। सोशल मीडिया के द्वारा कई बार गलत संगति में पड़ जाता है जिसका परिणाम सही नहीं होता। युवा अपने काम के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग करता है पर कई बार गलत जानकारियों के कारण उसे अपने काम में बहुत घाटा उठाना पड़ता है। किताबों की अपेक्षा मोबाइल व लैपटॉप पर ज्यादा समय व्यतीत करने लगा है जिसके कारण आंखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सोशल मीडिया के ज्यादा प्रयोग के कारण युवाओं में मानसिक तनाव बना रहता है। जिस कारण वह लड़ाई झगड़ा आदि गलत कार्य करते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया हमारे लिए किसी हद तक जरूरी है। पर युवाओं को यह बात हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि उन्हें इसका प्रयोग लाभ कार्यों के लिए करना है। जितना जरूरत हो उतना ही इसका इस्तेमाल करें व कोई भी जानकारी प्राप्त होने पर उसे पूरी तरह जांच पड़ताल के बाद ही किसी को भेजें। युवाओं को इनसे होने वाली हानियों से

बचना चाहिए। किसी को भी सोशल मीडिया द्वारा भ्रमित करने से बचना चाहिए। जो कार्य हम इसके बिना संपन्न कर सकते हैं उसे अवश्य करना चाहिए ताकि युवा वर्ग आलसी ना हो जाए। युवाओं को इसके द्वारा किसी भी देश या विदेश की गलत जानकारी नहीं फैलानी चाहिए। सोशल मीडिया आज के युवाओं के लिए किसी वरदान से कम नहीं इसलिए युवाओं का फर्ज बनता है कि वे इसका प्रयोग अपने हित व जनकल्याण के लिए करें। इसके द्वारा होने वाली हानि से बचना चाहिए। हमें इससे बहुत कुछ अच्छा और बुरा सीखने को मिलता है पर ध्यान रखना चाहिए कि हमें इससे सिर्फ अच्छा ग्रहण करना है और इसकी बुराइयों से बचना है। पढ़ाई के लिए, जानकारी के लिए, समय को बचाने के लिए आज सभी युवाओं को सोशल मीडिया के लाभ और हानियों को ध्यान में रखते हुए इसका प्रयोग करना चाहिए।

शिल्पा

कमला लोटीया एस.डी. कॉलेज, लुधियाना

जोन- लुधियाना - 'ए'

घर

बचपन की अठखेलियों के आंगन को छोड़ती हुई लक्ष्मी यौवन की सीढ़ियों में पर्दापण कर चुकी थी। लक्ष्मी के पिता का नाम कुबेर था, परंतु उनकी जीवनशैली उनके नाम से एकदम विपरीत थी। वह एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखते थे। जब भी कोई कुबेर को उसका नाम लेकर पुकारता था तो एक एकदम शर्मसार हो जाते, क्योंकि उसका नाम उनके काम के विपरीत था। वह पेशे से एक स्कूल में चपड़ासी था। लक्ष्मी की माता का नाम रमा था।

रमा को जब पुत्रीधन के रूप में लक्ष्मी प्राप्त हुई थी, तब कुबेर ने अपनी हैसियत का ख्याल न करते हुए, पूरे ग्रामवासियों को दावत दी थी। समय का पहिया चलता गया। लक्ष्मी अपने विद्यालय की अव्वल और उत्कृष्ट छात्रा थी।

लक्ष्मी जब विद्यालय के मैदान में खेल-कूद कर रही होती, तो अक्सर वहाँ पर उसकी कक्षा के कुछ बच्चे बिजली की रफ्तार के समान आते और लक्ष्मी को "झुगगी वाले की लड़की, चपड़ासी की लड़की!" कहकर चिढ़ाते। पहले तो

लक्ष्मी वहाँ चुपचाप खड़ी रहती, परंतु एक दिन लक्ष्मी के सन्न का बाँध टूटा और उसने उन्हें कहा कि "फिर क्या हुआ? अगर मैं एक चपड़ासी की पुत्री हूँ। मुझे अपने पिता पर गर्व है। काम छोटा या बड़ा नहीं होता और स्वच्छता का कार्य तो सबसे श्रेष्ठ कार्य माना गया है। मेरे पिता जी मुझे शिक्षा देकर अपना कर्तव्य पूर्ण कर रहे हैं। अब ये मेरा कर्तव्य बनता है कि मैं अपना स्वप्न पूर्ण कर के उनका स्वर्णिम स्वप्न पूर्ण करूँ और उन्हें जल्दी से एक आलीशान घर खरीद कर दूँ।" उसकी साहसपूर्ण बातें सब बच्चों के मुख-मण्डल पर ताला लगा देतीं।

जिस विद्यालय में लक्ष्मी छात्रा थी, उसी स्कूल में कुबेर चपड़ासी था और आज अपनी पुत्री की इन गौरवमयी बातों को सुन, वह धन्य हो गया था।

लक्ष्मी अब बड़ी हो गई और वह पढ़-लिखकर आज एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में उच्च-पद पर प्रोफेसर नियुक्त हो चुकी थी। अब उसने एक बड़ा-सा घर खरीदा और अपने माता-पिता को भेंट स्वरूप दिया।

लक्ष्मी के तीखे नयन-नक्श, सरू-सा ऊँचा कद, साँचे में ढलती काया, दूध को मात देता रंग और ऊपर से उसका हँसमुख स्वभाव, सभी को उसका दीवाना बना देता है।

जवानी के सागर में मन की सीपी हिल्लोरे खा रही होती है और अचानक उसमें फौजी रमेश पनाह ले लेता है। दोनों का प्यार परवान चढ़ता है।

लक्ष्मी ने सहसा एक दिन अपने पिता से कहा "पिता जी! मैं और रमेश एक-दूसरे से अगाध और असीमित प्रेम करते हैं। शीघ्र अतिशीघ्र विवाह बंधन में बंधना चाहते हैं।"

कुबेर और रमा, लक्ष्मी के और रमेश के रिश्ते को स्वीकार करते हैं और उनका जल्दी ही प्रसन्नता पूर्वक पाणि-ग्रहण होता है।

विवाह को अभी पाँच ही महीने हुए होते हैं और लक्ष्मी अपने पति रमेश को फोन करके प्रसन्नतापूर्वक कहती है कि, "रमेश तुम जल्दी से घर आ जाओ। मैं गर्भवती हूँ।" रमेश यह सूचना पा कर खुशी में कहता है "मैं आज ही घर आ रहा हूँ।"

रमेश का फोन आए 48 घंटे बीत जाते हैं, परंतु रमेश का कुछ अता-पता नहीं है। लक्ष्मी बहुत चिंतित होती है। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से स्पंदन करने लगता है। अचानक एक फोन आता है। लक्ष्मी फोन उठाती है और फोन में एक अजनबी

के बोलने की आवाज़ आती है। वह कहता है, "मैं फौज से एक कर्मचारी बात कर रहा हूँ। जिस गाड़ी से आपके पति घर रवाना हुए थे, उस गाड़ी पर दुश्मन देश के सैनिकों ने आक्रमण कर दिया था और आपके पति ने अपने शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन किया और अंत में आपके पति इस लड़ाई में शहीद हो गए।"

लक्ष्मी यह बात सुनकर स्तब्ध रह गई। रो-रो कर उसका बुरा हाल हो गया। समय का पहिया अपनी चाल चलता जा रहा था कि कुछ महीने बाद उसे प्रसव पीड़ा शुरू हो गयी। परंतु उसके जीवन में अभी दुखों का बाँध समाप्त नहीं हुआ था। उसका बच्चा पैदा होते ही स्वर्ग सिधार गया।

अब तो लक्ष्मी की सब आशाओं का अंत ही जैसे हो गया। वह सोचती, "आज उसके पास एक आलीशान महल है, परंतु घर में रहने वाला कोई भी नहीं है। वह विचार करती है, "घर तो परिवार के सदस्यों से बनता है। अगर परिवार है तो झोंपड़ी भी घर कहलाती है।" पूरा घर लक्ष्मी को काटने को दौड़ता था। आशाहीन लक्ष्मी बहुत रोती रहती।

आशा और उम्मीद से क्षीण लक्ष्मी खुदकुशी करने के लिए सड़क पर जा निकली, परंतु अचानक उसे एक दृष्टिबाधित लड़का दिखाई दिया। जिसकी आयु लगभग पाँच वर्ष थी। वह लड़का सड़क के मध्य में चल रहा था। अचानक से दूसरी तरफ से ट्रक तेज़ रफ्तार से आ रहा था।

लक्ष्मी के अंदर की माँ उस बच्चे को देखकर जागृत हो उठी और वह जल्दी से उस बच्चे को जाकर बचा लेती है। लक्ष्मी को पता चलता है कि वह बच्चा अनाथ है।

लक्ष्मी उस बच्चे को अपने घर ले गई और वह बच्चा अपने पुलकित मुख से उसको "माँ" कहकर संबोधित करता है। लक्ष्मी भी उसे अपने बेटे समान प्रेम देती है। अब लक्ष्मी समाज-सेवी संगठनों के साथ जुड़ गई और सबकी मदद कर अपने जीवन को उजागर करती है।

लक्ष्मी उस बच्चे का नाम उम्मीद रखती है, क्योंकि वह बच्चा उसके जीवन में जीने की आखिरी उम्मीद बन कर आया था।

आज लक्ष्मी की ममता और प्रेम स्वरूपी घर पूर्ण हो गया था।

**यह मायने नहीं रखता कि घर
कितना बड़ा है, मायने यह
रखता है कि घर में कितनी
खुशी है।**



हिमांशु

एस.जी.जी.एस. कॉलेज, सेक्टर-26, चंडीगढ़
इंटर-जोनल

सपना और सच

“जाने ये लड़की भी कब इस घर से जाएगी।” उसने गुस्से में खुद से बड़बड़ाते हुए कहा।

“शादी की थी इसके बाप से लेकिन मेरी तो शादी नहीं बरबादी हो गई।”

तभी उसका पति अंदर से आवाज़ देता है और चाय बनाने के लिए कहता है जिस वजह से वह और भी ज्यादा चिड़ जाती है,

“हाँ, हाँ घर के सारे काम मैं ही करूँ।”

“पहले ये बताओ कि ये लड़की इस घर से कब जाएगी”

“जल्द ही, अब ले आओ चाय”

वह गुड़िया की सौतेली माँ थी और शादी करने से पहले यह शर्त रखी थी कि गुड़िया को अपने नाना के घर भेजा जाए, जिसे उसका पति अब तक पूरी नहीं कर पाया था। दरअसल उसने दूसरी शादी ही गुड़िया को एक माँ देने के लिए की थी लेकिन उसने जैसा सोचा था वैसा नहीं हुआ। उसने सोचा था कि समय के साथ वह गुड़िया को अपनी बेटी मान लेगी परन्तु उसमें तो ममता नाम की चीज़ ही नहीं थी।

गुड़िया दिव्यांग थी और साथ ही एक बिमारी से पीड़ित स्कीज़ोफ्रेनीया जिसमें इन्सान तो ऐसी चीज़ें या लोग दिखाई देते हैं जो असल में होते ही नहीं।

“माँ, माँ.....ऊपर मेरी माँ रहती है।”

“नहीं बेटा वहाँ कोई नहीं है।”

“है.....माँ है..... वो मुझसे बहुत प्यार करती है।”

कब उसे कहाँ उसकी माँ दिखने लगे, कुछ पता नहीं लगता था और वो वहाँ जाने की कोशिश करती और गिर जाती जिस वजह से उसके पिता की चिंता बढ़े ही जा रही थी।

वह अपनी सौतेली माँ को अपनी ‘माँ’ मानती थी, तबसे उसे उसका ‘माँ’ बुलाना बिल्कुल पसंद न था।

“मेरी दो-दो माई है”

“मैं नहीं हूँ तुम्हारी माँ, एक थी जो चली गई और तुम भी

उसके पास जल्द ही चली जाओगी।”

“नहीं मैं उनको इधर बुलाऊँगी”

“दो-दो माई.....दो-दो माई.....”

अपने खिलौनों से बातें करती और ये बड़बड़ाती रहती। हर रात वह एक ही सपना देखती कि उसकी दो-दो माई हैं, एक ऊपर छत पर रहती है और एक नीचे, घर में। जब वो यह बात अपने पिता को बताती तो उन्हें बहुत तकलीफ होती क्योंकि वे जानते थे कि ऐसा असंभव है कि उसकी सौतेली माँ उसे अपना ले। ये सपना, सच से बहुत दूर का था।

“मैं जा रही हूँ बाज़ार, तुम्हारे साहब भी देर से आएंगे”

“जी मैडम।”

“इस पागल को खाना खिला देना।”

“जी मैडम।”

कामवाली बाई ने गुड़िया को खाना खिलाने की बहुत कोशिश की लेकिन उसने नहीं खाया तो वह वहीं रखकर वहाँ से चली गई। गुड़िया सारा दिन अपनी माँ से बातें करती रहती जो कि इस दुनिया में थी ही नहीं।

“माँ.....माई.....मुझे फिर वही सपना आया.....माँ मुझसे प्यार से बात कर रही थी.....दो-दो माई.....हा! हा!.....दो-दो माई।”

गुड़िया घर में अकेली थी और सौतेली माँ ने आने में देर कर दी थी। कुछ देर बाद जब लौटी तो देखा कि चाबी तो कार में ही रह गई और लिफ्ट बंद हो चुकी थी। उसने घबराते हुए खिड़की से देखा कि गुड़िया अंदर चाकू से खेल रही थी। उसने उसे चाकू फेंकने को कहा पर वह नहीं मानी।

“अगर आज इसे अंदर कुछ हो गया.....तो बस।”

कुछ समय तक तो उसने कोशिश की मदद माँगने की लेकिन कुछ हासिल नहीं हुआ। फिर उसने प्यार से गुड़िया को आवाज़ दी और कहा कि वह उसके पास आए तो उसने देखा कि वह केक ला रही थी उसके पास और रोशन दान से उसे देने की कोशिश कर रही थी।

“ये क्या है, पागल लड़की।”

“पापा, आपको लाइज़ देने के लिए आए थे।”

“लाइज़.....ओ.....स्पराइज़”

उसे बहुत खुशी हुई यह जानकर की उसके पति को जन्मदिन याद था। गुड़िया ने रोशनदान से उसे केक कटवाया और जन्मदिन मनाया।

“तुमने ये केक पहले क्यों नहीं खाया।”

“पहले फू-फू करते हैं न।”

ये सुनकर उसका मन भर आया। गुड़िया ने उससे पूछा कि वह उसकी माँ क्यों नहीं बनती। उसने उसको बताया कि वह उससे बहुत प्यार करती है।

“मेरी माँ बन जाओ न आप।”

उसका मन पिघलने लगा। वह गहरी सोच में डूब गई तभी अंदर से गुड़िया के रोने की आवाज़ आई क्योंकि वह गिर गई

“बेटा.....बेटा ध्यान से।” घबराते हुए वह बोली।

तभी उसने गुड़िया के पास जाने के लिए खिड़की का शीशा तोड़ दिया, काँच भी चुभ गए उसके पैर में लेकिन उसने आकर गुड़िया को सीने से लगा लिया। दोनों की आँखों में आंसू थे जिसमें घृणा बह चुकी थी, बची थी तो केवल ममता। तभी उसका पति लौटा और कांच टूटा देख घबराते हुए दरवाज़ा खोला तो दृश्य देख भावुक हो गया।

सिमरन वर्मा

डी.ए.वी.कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अबोहर

जोन - एजुकेशन 'सी'

हमारे रिश्ते

रिश्तों के धागे बहुत नाजुक होते हैं। अगर ये एक बार टूट जाएं, तो दोबारा जुड़ जरूर जाते हैं, मगर इसमें गाँठ पड़ जाती है। वे रिश्ते फिर पहले जैसे नहीं हो पाते। हमारी कहानी में दिव्या नाम की एक लड़की अपने माता-पिता के साथ मगहर में रहती थी। मगहर एक जाना माना शहर था। दिव्या शुरू से ही बहुत होशियार थी, परन्तु उसमें एक कमी भी थी कि वह अपने गुणों और सबसे ज्यादा होशियार होने के कारण बहुत घमण्डी थी। अपने आपको सबसे अच्छा और समझदार आंकती थी। किसी की कोई बात या सलाह सुनना और उसे बर्दाश्त करना, उसे पसन्द नहीं था। जब दिव्या बड़ी हुई तो उसके माता-पिता ने सोचा कि क्यों ना अब उसकी शादी करवा दी जाए। लेकिन दिव्या मना करती रही। उसका कहना था कि जब वह अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी, तभी विवाह करेगी।

कुछ समय बाद दिव्या की एक अच्छी सरकारी नौकरी लग गई। सभी घरवाले और दिव्या बहुत ही ज्यादा प्रसन्न थे। दिव्या ने अपने घरवालों को बताया कि वह एक सूरज नाम के लड़के को पसन्द करती है और उससे ही शादी करेगी। घरवालों को कोई आपत्ति नहीं थी और उन दोनों का विवाह कर दिया। विवाह के कुछ दिन तक तो सब कुछ ठीक रहा, परन्तु धीरे-धीरे दिव्या को अपने ससुराल के माहौल से घुटन होने लगी। उसके ससुराल में सासू माँ, ससुर, एक ननद, एक देवर, उसका पति और वह, छह लोग रहते थे।

वह अपने सास-ससुर की कही किसी भी बात को न सुनती, हमेशा अपनी मनमानी करती। एक दिन उसने सूरज से कहा कि, “उसे सबसे अलग रहना है। वह सबके साथ नहीं रह सकती।” उसने अपने पति को धमकी भी दी कि, “यदि वह उसे लेकर अलग नहीं रहेगा, तो वो अपनी जान दे देगी।”

सूरज बहुत ही परेशान था, क्योंकि वह अपने माता-पिता से बहुत प्यार करता था और व दिव्या से भी बहुत प्यार करता था।

सूरज ने अपनी परेशानी दिव्या की माँ के साथ बाँटी। दिव्या की माँ ने उसे एक सलाह दी और सूरज उनकी बात मानकर एक अलग घर में रहने लगा। दिव्या बहुत खुश हुई कि उसकी बातें हर कोई मान रहा था। कुछ दिन बीते, अगर कोई भी घर पर आता तो दिव्या को देखना पड़ता, सारे घर की जिम्मेदारियाँ उसके सिर पर थी। धीरे-धीरे वह परेशान रहने लगी। अलग घर के बावजूद भी खुश नहीं थी। एक दिन दिव्या की माँ उससे मिलने आई। दिव्या को अपने फैसले से ही परेशान देखकर उससे कहने लगी, “बेटी दिव्या, अब तुम्हें क्या परेशानी है, पहले तुम अपने घरवालों से दूर रहना चाहती थी और अब अलग रहकर भी तुम खुश नहीं हो?” दिव्या उदास होकर अपनी माँ के पास बैठ गई।

दिव्या की माँ ने कहा, “बेटा, जब तुम अपने मायके में रहती थी, तुम कुछ गलती करती थी और मैं तुम्हें डाँटती थी,

समझाने की कोशिश करती थी। तुम्हारे पापा तुम्हें अच्छी बातें सिखाते थे। तब भी तुम चिड़चिड़ी हो जाती थी, लेकिन क्या कभी तुमने हमारी बातों से परेशान घर छोड़ने की बात कही? तुम एक-दो दिन नाराज़ रहती और फिर मान जाती थी। जब उस समय तुम हमारी डाँट से, तानों से परेशान होकर भी हमसे बेहद प्यार करती थी, तो अब तुम्हारे सास-ससुर की बातें ना मानकर घर क्यों छोड़ आई? तुम अपने पति के साथ खुश हो, उसकी बातों का बुरा नहीं मानती, लेकिन क्या तुमने कभी सोचा है कि अगर तुम्हारे सास-ससुर न होते, तुम्हारी सास ने सूरज को जन्म ना दिया होता, तो क्या होता? पति तुम्हें प्यारा है, लेकिन उसके माता-पिता, जिन्होंने उसे जन्म दिया, पढ़ा-लिखा कर बड़ा किया, आज इस काबिल बनाया कि वह अपने पैरों पर खड़ा है, तुम उनसे नफरत क्यों करती हो? जब भी कोई तुम्हारे घर आता है, चाहे बिजली का बिल आता है, महीने के राशन लाने का समय होता है या किसी भी अन्य काम के लिए कोई आता है, तुम्हें भागकर अपना काम छोड़कर पहले उन्हें देखना पड़ता है। अगर तुम्हारे सास ससुर तुम्हारे साथ होते तो तुम्हें सिर्फ उनकी छोटी बहू बनकर रहना होता, इन सभी मुश्किलों को वह स्वयं संभाल लेते। तुम आज इतनी चिन्ता-परेशानी में ना होती। मायके में तुम अपने भाई-बहनों से कितना लड़ती-झगड़ती थी, परन्तु तुम उनसे बहुत प्यार करती और उनकी हर जिद्द को पूरा करती। फिर ससुराल में आकर ऐसा क्या हो गया, क्या तुम्हारी ननद और देवर तुम्हारे भाई-बहनों की तरह नहीं हैं? बेटा, अगर देखा जाए तो मायके और ससुराल में फर्क हम लोगों ने खुद पैदा किया है। अपनी माँ अच्छी माँ, और पति की माँ बुरी। अपने पापा अच्छे और पति के पापा बुरे, अपने बहन-भाई अच्छे और

पति के बहन-भाई बुरे। आखिर क्यों बेटा? अगर तुम उनकी बहू न बनकर बेटी बनने की कोशिश करोगी, तो वह भी खुश रहेंगे और तुम भी।”

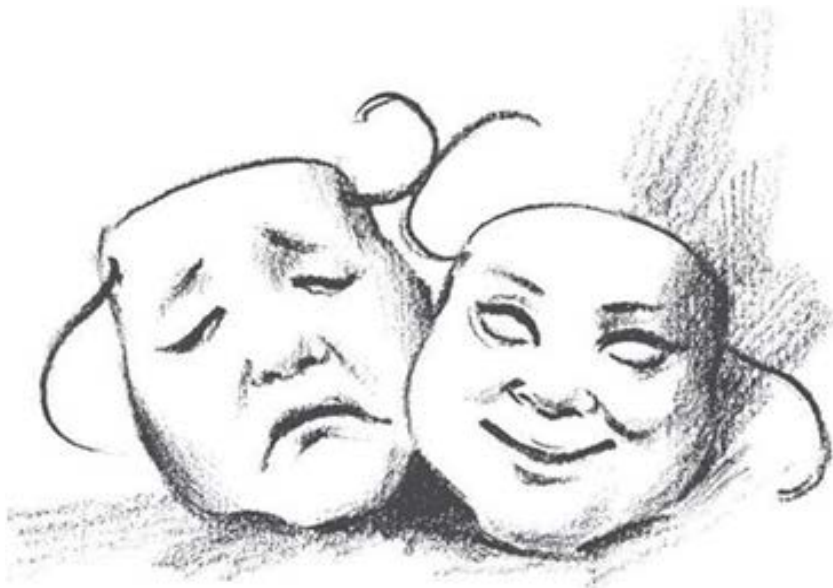
दिव्या को ऐसा महसूस हो रहा था, कि जैसे उसके आँखों और दिमाग पर बँधी कोई पट्टी खुल गई हो। दिव्या अब सब कुछ समझ चुकी थी। वह अपनी गलती मान चुकी थी। वह अपने सुसराल वापिस गई और उसने अपने सास-ससुर से माफी माँगी। उस दिन के बाद से दिव्या ने अपने घर-परिवार को पूरी तरह से अपना लिया था, ना किसी से कोई शिकवा, न शिकायत। वह अपने घर के काम करती और फिर अपनी नौकरी करने जाती। उसके सास-ससुर भी उसे बहुत मानते और अपनी बेटी की तरह प्यार करते।

दिव्या ने जब दो कदम अपने ससुराल के रिश्तों को सम्भालने के लिए आगे बढ़ाए, तो उसके सारे रिश्ते उलझे हुए धागों में से पूरी तरह से सुलझ गए। वह अब अपनी जिन्दगी में बहुत खुश थी।

दिव्या ने अपनी जिन्दगी में ये सबक तो सीख लिया था कि परमात्मा ने हमें धरती पर भेजा और बहुत सारे रिश्तों से जोड़ दिया। लेकिन उसने ये जिम्मेदारी हमारे ऊपर छोड़ दी है कि हम अपने आपको उन रिश्तों में कैसे ढालते हैं। हमें हमारे रिश्तों को सजों कर रखना आना चाहिए।

प्रिया

डी.ए.वी. कॉलेज, अबोहर
जोन - श्री मुक्तसर साहिब



“हाँ.....हाँ हम घर समय पर पहुँच जाएँगे।” कॉल काटते हुए, सुमन ने संदूक बंद किया। अपने मामा की शादी में जाने के लिए बच्चे और सुमन जोर-शोर से तैयारियों में जुटे हुए थे। उन्हें उसी रात का बेसव्री से इंतज़ार था।

आखिर वह दिन भी आ गया। संदीप, सुमन और बच्चे अमृतसर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। खुशी की चमक उनके चेहरे पर साफ-साफ झलक रही थी।

लोगों की उमड़ती भीड़ में से निकलते हुए, संदीप ने सुमन से कहा - “तुम, रुको यहीं। मैं पता करके आता हूँ कि गाड़ी किस प्लेटफार्म पर आ रही है?”

तकरीबन 10 मिनट बाद पूछ-ताछ करके संदीप भीड़ में से निकला ही था, कि अनाउंसमेंट हुई - “यात्रीगण कृपया ध्यान दें, गाड़ी संख्या 22429, दिल्ली पठानकोट एक्सप्रेस, अपने निर्धारित समय 01 बजकर, 05 मिनट पर, प्लेटफॉर्म नंबर 01 पर आ रही है।”

संदीप ने कहा - “अरे! ये तो हमारी गाड़ी है। जल्दी चलो।”

जैसे-तैसे, संभलते-संभालते, उसने, बच्चों और सुमन को लेडीज़ बोगी में बैठाया। सामान पर निगाह डालते हुए कहा, “नग गिने, पूरे तो हैं? संभल कर जाना, पहुँचते ही फोन करना।”

पों.....पों.....झुक्.....झुक्.....झुक्.....करती गाड़ी ने जैसे ही रफ्तार पकड़ी। बच्चे कुछ खाने के लिए चिल्लाने लगे।

सुमन ने बैग में से चिप्स और बिस्कुट के पैकेट निकाल कर उनको दिये, राहत की सांस लेकर, सुमन आराम फरमाने लगी। अपने आस-पास के सहयात्रियों और उनके भावों का जायजा लेने लगी।

सुमन की बगल में एक बूढ़ी काकी बैठी थी। सामने की सीट पर 2 औरतें बातों में मगन थी, उनके बगल में एक युवती, खिड़की के पास बैठी, बाहर की ओर, एक टक देखे जा रही थी।

सुमन ने उस युवती पर अपनी दृष्टि डाली और देखा - “24-25 साल की, यौवन अवस्था में चेहरे पर उदासी, रंग पीला, बदन पर मटमैले कपड़े, माथे पर बिंदी, हाथों में काँच की चूड़ियाँ और आँखें नम थी।”

सुमन ने मन ही मन सोचा - “लगती तो, ब्याहता है। लेकिन, चेहरे पर मायूसी!”

उसकी इस अवस्था को देखकर, सुमन के मन में सहानुभूति जागी और सोचा - “कैसे उससे बात की जाए?”

इतने में बच्चों ने फिर से खाने की मांग की। सुमन ने बैग को टटोला और उन्हें चिप्स का पैकेट दिया। उसने खाने के लिए उस युवती से भी पूछा, मगर उसकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया न हुई। सुमन ने उसकी बाजू पकड़ कर हिलाया। वह सिहर उठी थी और उसे हैरानपूर्वक देखने लगी।

सुमन ने चिप्स का पैकेट उसके समक्ष करते हुए पूछा - “ये ले लो।” उसने पहले तो ना की, पर फिर थोड़े से चिप्स ले लिये। युवती के बगल में बैठी दोनों औरतों से भी पूछा। उन्होंने एकाध चिप्स लिया और अगले स्टेशन पर उतरने की तैयारी करने लगी।

उनके उतरते ही सुमन से रहा न गया। वह उस युवती की बगल में जाकर बैठ गई और पूछा - “बहन, कोई चिन्ता सता रही है तुम्हें?”

उसके इतना पूछते ही, उस युवती की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। सुमन ने उसे गले लगाया और पीठ थपथपाई।

युवती ने कहा, - “मेरा तो सारा घर-परिवार ही उजड़ गया है।”

सिसकियाँ लेते-लेते उसने अपनी व्यथा बतानी शुरू की, “बहन, औरत ही औरत की दुश्मन होती है। मेरी तो सास ने मेरा घर तबाह कर दिया। मेरा घर-परिवार सब बिखर गया। 4 महीने का गर्भ गिराया और घर से बेघर कर दिया।”

युवती की दशा पर सुमन को तरस आया और पूछा - “ऐसा क्यों किया उन लोगों ने?”

जवाब में उस युवती ने चेहरा नीचे कर लिया। मानो वह किसी लज्जा से मरी जा रही हो।

“बहन, मुझ पर विश्वास करो।” सुमन ने अपनत्व भरे शब्दों से कहा, “बहन, मुझ पर विश्वास करो।” युवती के मन में भरा गुब्बार उमड़ उठा और वह बोली - “मेरा पति नपुंसक, शराबी, नशाखोर, जुलमी, अत्याचारी और मुझ पर हाथ उठाता था। मेरी सास ने बड़े पुत्र का घर-परिवार बसाने के

लिए, मुझे देवर की ओर धकेला। अपने ही डॉक्टर रिश्तेदार द्वारा टेस्ट करवाने पर पता चला कि गर्भ में लड़की है, तो 4 महीनों का गर्भापात करवाया। फिर कुलटा, कुलच्छनी कहकर आवारा कुत्ते की तरह, घर से बाहर फेंक दिया। औरत का तो बस एक ही घर रह गया - मायका। बहन, वहीं जा रही हूँ।”

युवती के सपनों का घर चकना-चूर हो जाने की कहानी ने सुमन को अंदर से झिंझोड़कर रख दिया।

उसका यकायक हाथ, अपने पेट पर चला गया - “क्या तीसरा बच्चा या लड़की हुई तो!” बच्चियों की ओर स्नेह भरी दृष्टि डाली।

उसका मन अनेक सवाल के घेरे में आ गया - “अभी तक तो घर में ऐसी बात उठी नहीं। यदि वारिस ना दे पाई, तो क्या मेरी सास भी, मेरे मर्द का दूसरा घर बसायेगी? क्या, मुझे भी

ये लोग छोड़ देंगे? यदि लड़की हुई, तो क्या मेरा भी गर्भापात करवाया जायेगा? मेरा दर्द, कौन समझेगा? मेरी बच्चियों और मुझे कौन सहारा देगा? वह समय कब आयेगा, जब एक औरत दूसरी औरत को समझेगी? समाज तो विकास कर रहा है, मगर लोगों की सोच कब विकास करेगी?”

ऐसे और न जाने कितने सवाल तूफान बनकर सुमन के जहन में उठ रहे थे।

माँ की व्याकुलता से बच्चियां बिल्कुल बेखबर थीं और अपनी मासूम शरारतों में मग्न थीं।

जोगिन्दर

एस.सी.डी. गर्व. कॉलेज, लुधियाना
इंटर-जोनल

इंतजार

ऐसा लगता था जैसे कि किसानों की जीत हो गई थी क्योंकि सरकार ने उनकी माँगें मान ली थी, हालाँकि लोगों को शक था कि सरकार आगे चलकर उन माँगों को कभी पूरा नहीं करेगी। राजधानी में एक साल से अधिक समय तक चला किसान आंदोलन जब समाप्त हुआ तब तंबू और शमियाने हटाये जाने लगे। दूर-दूर से आये किसान अपना-अपना सामान ट्रैक्टरों, ट्रॉलियों पर लाद रहे थे और वापिस अपने-अपने घर जाने की तैयारी कर रहे थे। एक साल तक किसानों ने उस इलाके में जगह-जगह पर लंगर चलाये थे। किसानों के साथ-साथ उस इलाके के गरीब लोगों को भी हज़ारों की संख्या में भोजन खिलाया था।

लेकिन कुछ गाँव वालों को रास्ता बंद होने के कारण एक साल तक बहुत तकलीफ हुई थी। आखिरकार रास्ता खुला, आसपास के ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। लेकिन कुछ लोगों की सांसें थमने लगी थी। सड़क पर सोने वाले, भीख माँग कर खाने वाले, मजदूरी करने वाले बच्चे, बूढ़े, औरतें और बेरोजगार नौजवान बहुत दुखी थे।

9 वर्षीय मुन्ना और 40 वर्षीय लल्लन बहुत दुखी थे। चारों

ओर कैमरे थे। विदेश से आए पत्रकार जयदेव को सबसे सवाल पूछने थे लेकिन हर बार कहानी नई होनी चाहिए थी।

जयदेव:- तुम कहाँ से आए हो? तुम्हारा नाम क्या है?

मुन्ना और लल्लन ने पिछले एक वर्ष में कैमरे और माइक बहुत देखे थे। इसलिए न तो वे कैमरे से झिझकते और न ही माइक पर बोलने से डरते थे। लेकिन वे अपने चेहरे की निराशा नहीं छिपा पाएँ। मुन्ना ने बहुत ही आत्मविश्वास से लेकिन उदास स्वर में शब्दों को जोड़कर कहा, “मुन्ना मेरा नाम है, मैं पिछली बस्ती की झुग्गी में रहता हूँ।”

जयदेव:- यह आंदोलन खत्म होने पर तुम क्या कहना चाहते हो?

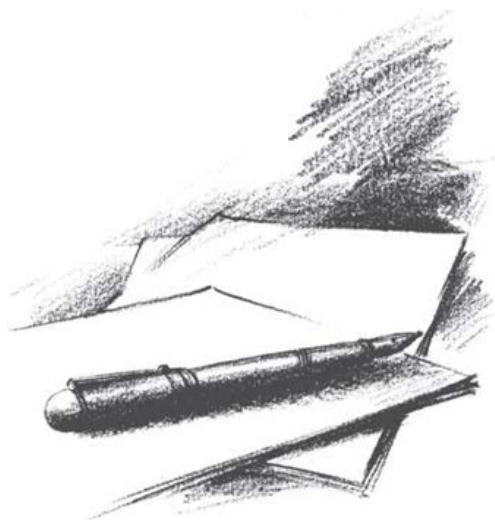
मुन्ना:- पिछले एक वर्ष से मैं यहीं खाता था और परिवार के लिए खाना भी ले जाता था। घर में पिता नहीं है, माँ बीमार है, दो छोटी बहनें हैं। सभी लोग यहाँ से ले जाया गया खाना खाते थे। इन्होंने हमें कपड़े और कंबल भी बांटे थे। हम सब यहाँ पूर्ण सुरक्षित थे। इन लोगों के जाने के बाद अब हम सब कैसे खाएँगे। अब या तो हम भीख माँगे या भूख से मरेँगे।

जयदेव ने किसी और को देखा, वह चेहरा भी उदास और निराश लग रहा था। जयदेव ने उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है, तुम क्या करते हो और क्या यह आंदोलन खत्म होने पर तुम कुछ कहना चाहते हो?" लल्लन के चेहरे पर उदासी थी। लेकिन उसने भी कहा, हाँ सर! नाम मेरा है लल्लन। मैं उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ। मैं फेरीवाला हूँ। साबुन, तेल, कंघी आदि घूम कर बेचता हूँ। 2 वर्ष से कोई काम धंधा नहीं क्योंकि कोरोना काल था। इस समय में भेदभाव और रिश्तों में तकरार बढ़ी, आमदन कम और बीमारी के कारण खर्चा अधिक। किसी को रोजगार नहीं मिलता था। लेकिन इस समय में किसानों ने गरीबों की भगवान के रूप में सहायता की। उन्हें खाने के लिए खाना, पहनने के लिए कपड़ा और सबको एक बराबरी का पाठ पढ़ाया। इस भयानक बीमारी के डर से जहाँ लोग न किसी से मिलते और न ही कहीं जाते, यहाँ दूर-दूर से बड़े-बड़े शहरों से लोग इस आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए आते थे। जब से किसान आंदोलन शुरू हुआ, हमने दिन रात यहीं पर सोते थे, फुटपाथ पर नहीं। सर्दी गर्मी का तो हमें पता ही नहीं चलता था। हमें नहीं पता था कि जिन्दगी इतनी खूबसूरत भी हो सकती है। शायद! अब फिर से फुटपाथ पर सोना पड़े और मैं दिन में केवल एक बार ही खाना खा पाऊँगा" यह कह कर उसकी आँखों में आँसू भर आए। "चलो, अगले को बुलाओ।" कहीं से पत्रकार की आवाज़ आई।

जयदेव:- नहीं, यह काफी है।

कैमरा मैन:- ठीक है-ठीक है।

दोनों ने अपना सामान समेटा और अगले लक्ष्य की ओर चल पड़े।



कहीं दूर से किसी ने हाथ लहराया। मुन्ना और लल्लन खुशी और उत्साह से दौड़ते हुए वहाँ गए। तब वे दोनों टेंट से बाहर आए, उनके हाथ में खाने पीने का सामान और पाँच सौ रुपये का एक-एक नोट था। वे दोनों बहुत खुश थे। उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा और अचानक उनके चेहरों से उत्साह गायब हो गया। उनकी आँखें एक दूसरे से पूछ रही थी कि, "अब क्या होगा।"

वे दोनों जानते थे कि यह खाने-पीने का सामान और पाँच का नोट उनके लिए किसानों की तरफ से अंतिम उपहार थे। वे दोनों नम आँखें लिए वहाँ से जा रहे थे कि पीछे से जसबीर सिंह ने उन्हें आवाज़ लगाई और कहा, "ओ भाई लल्लन! निराश क्यों होते हो? हम लोग यहाँ से जा रहे हैं, इस दुनिया से नहीं। हम भाई-भाई हैं, हमारा कुछ भी बाँटा हुआ नहीं है। तुम भी हमारे साथ पंजाब चलो। वहाँ हमारे साथ खेतों में काम करना और अपने परिवार का पेट भरना। यह सुनकर मुन्ना और लल्लन जसबीर सिंह के गले लग कर फूट-फूट कर रोने लगे।

वे जानते थे कि अब उनके आगे मजदूरी और भुखमरी का पहाड़ खड़ा था। किसकी जीत हुई और किसकी हार हुई थी, इससे उन दोनों को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। पर वे जानते थे कि अब अगली सुबह उनको अपनी रोटी कमाने के लिए फिर इधर-उधर जाना पड़ेगा और लोगों के ताने भी सुनने पड़ेंगे। वे नहीं जानते थे कि विकासशील भारत में उनके जैसे शायद 50 करोड़ व्यक्ति ऐसे हैं जो भीख माँग कर, मजदूरी करके अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं और अपने परिवार का पेट भरते हैं। असमानता का दुःख सहते हैं।

उन्हें उस दिन का इंतज़ार था जिस दिन वे भी आंदोलन कर सकते और जीत जाते। लेकिन उनकी माँगें तो बहुत छोटी-छोटी होने वाली थी- पेट भरने के लिए रोटी, तन ढकने के लिए कपड़ा और सिर छुपाने के लिए छत। उन्हें उस पल का इंतज़ार था, जिस समय वे बिना कल की चिंता किए, आज को जी सकें।

उनसे फिर मिलने की आशा लिये, उन्होंने खुशी-खुशी किसानों को अलविदा कहा।

गुरप्रीत कौर

रामगढ़िया गर्ल्स कॉलेज, लुधियाना

जोन- लुधियाना - 'बी'

घर वापसी

इस शोर से भरी नगरी में आज हल्की खामोशी थी। यह खामोशी आज से पहले कभी महसूस नहीं हुई। चिड़ियों की चहचहाहट आज सुनाई दे रही थी। हाथ में एक खत था, जिसमें लिखी बातों से मन और आँखें दोनों भर आईं।

शायद आज घर वापसी का समय आ गया है। मन में कुछ हलचल सी थी। आज कुछ भी पहले जैसा नहीं लग रहा था। मन में बस सवाल आ रहा था, कि क्या मेरी ये घर वापसी मुझे अपने गले से लगाकर अपने पास आने देगी। शायद आने भी कैसे दे, जिस तरह मैं सब पीछे छोड़ इस शोर भरी नगरी में जो आ गई थी। उस समय मैंने कुछ नहीं सोचा, आज शायद ये घर मेरे लिए कुछ ना सोचे।

आज भी जब इस शोर भरी नगरी से कुछ सुकून भरे पल निकालकर जब खामोशी में बैठती हूँ तो आँखों के सामने वे सारे पल आ जाते हैं।

चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ जाती है, जब पड़ोस की काकी के घर चुपके से जाकर उनके बगीचे से फूल चुरा लाते थे। काकी यह बात जानती थी, शायद तभी तो हर बार घर का दरवाजा खुला ही रख देती थी और हम खुद को चालाक समझते थे। शायद वहाँ की बात ही कुछ अलग थी। कितने साधारण और मासूम थे सब लोग।

मेरा बस चलता तो मैं कभी यहाँ से जाती नहीं। कितनी अजीब बात है, समझ हमेशा दूर जाकर ही आती है। समझ नहीं पाई आखिर क्या कारण थे मेरे, जो उस खामोशी को छोड़ इस शोर भरी नगरी में आ गई। याद है मुझे जब झूम-झूम कर गाना गाते स्कूल जा रही थी, तभी एक आदमी से मुलाकात हुई। देखने में वह बहुत अमीर और समझदार लग रहा था। शायद वह आदमी भी इस शोर भरी नगरी से ही आया था। उस आदमी ने मुझे इतना झूमते हुए देख पूछने लगा "सुनो, यहाँ लाल विलास नाम के व्यक्ति का घर-कहाँ है?" "आपको क्या काम है उनसे?" मैंने उनकी तरफ देखते हुए पूछा। क्योंकि मैं जानती थी कि वह आदमी, उस नगर का नहीं था और मुझे हमेशा दूर से आए लोग पसंद नहीं थे और आज देखो मैं भी एक दूर नगर की ही बन गई।

इस आदमी ने थोड़ी आवाज़ भारी करके, मेरी तरफ देखते

हुए कहने लगा - "पता है या नहीं?" "हाँ पता है, वह मेरे दादा जी है।" मैंने भी उनकी तरफ देखते हुए कहा।

आज जब सोचती हूँ उस बारे में तो बस यही ख्याल आता है कि काश मैं उनसे नहीं मिली होती। पर क्या इससे कुछ बदलाव आता? शायद हाँ भी और शायद ना भी। जब उस आदमी की मुलाकात मेरे दादा जी से हुई तो उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा, "आप हमारे साथ चले। हम सब आपका इंतज़ार कर रहे हैं।" दादा जी का बहुत बड़ा नाम था। हर कोई उन्हें जानता था। उनकी बहुत इज्ज़त करते थे। शायद तभी उन्हें इस नगरी से उस शोर भरी नगरी में ले जाना चाहते थे।

"नहीं, मैंने एक बार कह दिया है। मैं यहाँ से कहीं नहीं जा रहा।" (दादा जी ने जबाब दिया) मैं नहीं समझ पा रही थी कि आखिर क्यों वह नहीं जाना चाहते। सब कुछ तो है वहाँ। सुकून की जिन्दगी, पैसा, बड़ा घर, गाड़ी सबकुछ। फिर क्यों?

जाते समय उस आदमी ने मुझे कहा - "उन्हें मैं काफी समझदार समझता था, पर वह तो नादान निकले। लेकिन हाँ, तुम आना, तुम जरूर आना! इतना कहकर वह चले गए।

आज सोचती हूँ अगर उस समय मैं अपने कान बंद कर लेती या वहाँ से भाग जाती तो ठीक रहता। पर क्या ये सही रहता। आज मुझे इस तरह घर वापसी के बारे में सोचकर घबराहट होती है।

उस समय वह शोर भरी नगरी मुझे सुकून का लालच दे रही थी। मैं भी अब ठान चुकी थी, अब यहाँ नहीं रहना। यहाँ रहकर मैं अपने सपने नहीं पूरे कर सकती। जैसे ही अपनी पढ़ाई खत्म की, मैंने मन बना लिया अब मैंने नहीं रुकना। मैं सीधा अपने दादा जी के पास गई और कहा- "मुझे जाना है!" मैं जानती थी कि वह मुझे जरूर रोकेगा। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। उन्होंने मुझसे बस एक सवाल किया - "जाने के बाद कभी वापस आने का ख्याल तो नहीं आएगा?" "नहीं" मैंने बिना कुछ सोचे जल्दी से जवाब दे दिया। बस फिर क्या, मैंने अपना सारा सामान बाँधा और इस शोर भरी नगरी में चली गई।

आज घर वापसी का समय आ गया है। शायद ये समय मेरे लिए हमेशा से खास था। यह मेरा ही इंतज़ार कर रहा था, अपने साथ ले जाने के लिए। बस मेरे भीतर कभी हिम्मत नहीं आई। शायद मुझे अपने दिए जवाब से डर लग रहा था। मुझे खुद से ही हारने का डर सता रहा था घर वापसी को लेकर। लेकिन मन में हल्की सी गुदगुदी, अलग तरह की हलचल सब एक साथ हो रही थी।

क्या मेरी ये घर वापसी, मुझे फिर से वो सारी यादें देगी? क्या मेरी ये घर वापसी मुझे फिर से सुकून देगी? क्या मेरी ये घर वापसी मुझे फिर से वो प्यारी और मीठी मुस्कान देगी? क्या मेरी ये घर वापसी मुझे अपना पाएगी?

आज मुझे अपने दिए उस जवाब से बहुत पछतावा हो रहा था। शायद दादा जी को भी पता था, तभी शायद उन्होंने भी कुछ कहा नहीं था। मन में बस यही आशा है, मेरी ये घर वापसी मेरी सारी गलती भुलाकर मुझे अपना ले। काश! मेरी ये घर वापसी मुझे फिर से जीना सिखा दे.....।

मीनू

देव समाज कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चंडीगढ़

जोन - एजुकेशन - 'ए'

तलाश

जून की कड़कड़ाती धूप में, सिर पर दुपट्टा ओढ़े, दाहिने हाथ की कोहनी में पर्स दबाये, उसी हाथ में पानी की बोतल पकड़े हुए शालू घर जाने के लिए कॉलेज के मोड़ पर ऑटो का इंतज़ार करते हुए -- "ओ फो! एक तो गर्मी, ऊपर से ऑटो नहीं मिल रहा है।"

इतना कहते वह थोड़ा आगे ही बढ़ी थी कि उसे पीं.....पीं..... ऑटो का हार्न सुनाई दिया तो पीछे मुड़कर, हाथों से इशारा करते हुए ऑटो रोका और उसमें चढ़ गई।

ऑटो में एक बूढ़ी काकी और एक बच्ची, करीब 6-7 वर्ष की बेहद सुंदर मगर तन पर मैले-कुचैले कपड़े पहने बैठी थी। काकी का सांवला रंग, हाथ में लाठी, सफेद बाल, मुंह पर झुर्रियां, माथे पर तिरछी रेखाएं थी, मानो वह किसी बात से खिझी हुई हो।

बच्ची अपने दाँतों तले होंठ दबाये, नन्ही-प्यारी आँखों से शालू को निहार रही थी। जिसे देख शालू थोड़ा मुस्कराई और उसकी नज़र जैसे ही काकी से टकराई तो काकी उसे तीखी आँखों से देखने लगी। शालू मन ही मन बुदबुदाने लगी -- "आंटी मुझे ऐसे क्यों देख रही है?"

शालू ने उनसे नज़र हटाते हुए, ऑटो में आगे लगे आइने में बिना इरादे से नज़र डाली तो देखा कि बच्ची अँगूठे से इशारा करके पीने के लिए पानी माँग रही थी। आगे से काकी झिड़क कर बोली -- "आगे जा कर पीलाऊँगी।" इतना सुनने के बाद शालू ने आईने से नज़र हटाते हुए अपनी पानी की बोतल को देखा और जैसे ही बच्ची के आगे बढ़ाने लगी तो उसे ख्याल आया -- "मेरा पानी तो जूठा है।"

तकरीबन 20 मिनट बाद ऑटोवाले ने एक दुकान के सामने ऑटो रोकते हुए कहा "काकी, यहाँ से आपको पानी की बोतल मिल जाएगी।" इस पर काकी ने अपनी नाक को सिकुड़ कर कहा -- "आगे से ले लेंगे" शालू बैचेन हो उठी और सोचा "यह बात क्या है?" थोड़ा दूर जा कर ऑटोवाले ने उनको उतारते कहा -- "यहाँ से मुल्लापुर का दूसरा ऑटो ले लो।" काकी उतरते हुए बड़बड़ाने लगी मगर ऑटोवाले के कानों पर जून सरकी। उसने ऑटो आगे बढ़ाया। अब शालू सोचने लगी -- "ऑटोवाले ने उनको क्यों उतारा?"

इतने में शालू के मन में अनेकों सवाल उभरे, जिनके द्वारा वह इन्सानियत की तलाश करने लगी -- "क्या माँ को बच्ची की परवाह नहीं? क्या वह उसके लिए पानी की बोतल और एक बिस्किट का पैकेट नहीं दे सकती थी? क्या नानी को बच्ची से प्यार नहीं था? उसे तरस क्यों नहीं आया? क्या वह लड़की थी इसलिए या फिर गूंगी थी इसलिए? क्या समाज में इन्सानियत की मौत हो गई है? क्या मैं भी समाज के ऐसे लोगों में आती हूँ जो अपने अन्दर इन्सानियत की तलाश करना भूल गये हैं?"

स्वयं में भी इन्सानियत की तलाश करते हुए, शालू ने ऑटो के आईने की तरफ देखा और खुद को कौसते हुए कहा, "काश! मैं अपनी पानी की बोतल उसे दे देती। जूठा हुआ तो क्या हुआ? बच्ची की प्यास तो बुझती और उसके चेहरे पर मुस्कान तो आती।"

जोगिन्द्र

एस.सी.डी. गर्व. कॉलेज, लुधियाना

जोन- लुधियाना - 'ए'

Plantation Drive 2022-23



Chandigarh, Chandigarh, India
QQ89+829, Panjab University, Sector 14, Chandigarh, 160014, India



Chandigarh, Chandigarh, India
QQ89+829, Panjab University, Sector 14, Chandigarh, 160014, India
Lat 30.765996°
Long 76.767854°
23/09/22 12:16 PM GMT +05:30



Cultural Programmes 2022-23



Swachh Bharat Abhiyan 2022-23



Chandigarh, CH, India
Sector 14, Chandigarh, 160014,
Lat 30.765758, Long 76.767812
09/17/2022 12:10 PM

Summer Camp 2022-23



Best Handwriting Award - English

"I beg your pardon, Dr. Lanyon," he replied civilly enough. "What you say is very well founded; and my impatience has shown its heels to my politeness. I came here at the instance of your colleague, Dr. Henry Jekyll, on a piece of business of some moment; and I understood..." He paused and put his hand to his throat, and I could see, in spite of his collected manner, that he was wrestling against the approaches of the hysteria - "I understood, a drawer..."

But here I took pity on my visitor's suspense, and some perhaps on my own growing curiosity.

Swati Kumari
Arya College, Ludhiana
PU Inter Zonal Youth & Heritage Festival
2022-23

Best Handwriting Award - Hindi

हालिया सर्वेक्षण के अनुसार भी विकसित देशों के लोगों में आध्यात्मिक रुझान बढ़ा है, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यहाँ की उपभोक्तावादी संस्कृति से ऊबकर वास्तविक सुख की ओर पलायित हो रहे हैं। गरीब देशों की स्थिति इस संदर्भ में बड़ी ही वीभत्स है। यहाँ प्रश्न चित्त की शान्ति और अध्यात्म का नहीं, अपितु 'रोटी, कपड़ा और मकान' का है। इसके कारण सामाजिक विकृतियाँ चरम पर हैं। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि जहाँ प्रश्न मौलिक आवश्यकताओं का हो, तो वहाँ ईश्वर का स्मरण भी इन्हीं साधनों के लिए किया जाता है।

प्रभप्रीत कौर

रामगढ़िया गर्ल्स कॉलेज, लुधियाना

पीयू इंटर ज़ोनल यूथ एंड हैरिटेज फ़ैस्टीवल

2022-23

Best Handwriting Award - Punjabi

ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਭਗਤੀ ਲਹਿਰ ਦੀਆਂ ਮਹਾਨ
ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਪੰਦਰਵੀਂ ਸਦੀ ਈਸਵੀ ਦੀ ਇੱਕ ਉੱਚੀ
ਹਸਤੀ ਹੋਏ ਹਨ। ਨਾ ਕੇਵਲ ਆਪਣੀ ਡੂੰਘੀ ਭਗਤੀ ਭਾਵਨਾ
ਅਤੇ ਰੱਬ ਦੇ ਪਿਆਰੇ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਹੀ, ਬਲਕਿ ਭਾਰਤ ਦੇ
ਉਸ ਵੇਲੇ ਸਮਾਜ ਅੰਦਰ ਇੱਕ ਵਿਚਾਰਵਾਨ ਅਤੇ ਨਿਯੰਤਰ
ਸੁਧਾਰਕ ਹੋਣ ਦੀ ਹੈਸੀਅਤ ਵਿੱਚ ਭੀ ਆਪ ਇੱਕ ਉੱਚੀ
ਬਾਉਂ ਰੱਖਦੇ ਹਨ। ਆਪ ਦੇ ਕਬਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਰਾਹੀਂ ਆਪ
ਦੇ ਦਿਲ ਦੇ ਭਾਵ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ ਸਾਡੇ ਤੱਕ ਪੁੱਜੇ ਹਨ।
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਾਫੀ ਵਡਾ ਹਿਸਾ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ
ਅੰਕਤ ਹੈ, ਆਪਣੀ ਸ਼ੈਲੀ, ਰੂਪ ਅਤੇ ਸੰਗਤ ਕਾਰਣ
ਆਪ ਨੂੰ ਇੱਕ ਮੰਨੇ ਪ੍ਰਮਾਣਿਤ ਸਾਹਿਤਕ ਕਲਾਕਾਰ ਹੋਣ
ਦਾ ਭੀ ਮਾਣ ਦਿੰਦੇ ਹਨ।

ਗੀਤਾ ਰਾਨੀ

ਦਸਮੇਸ਼ ਖਾਲਸਾ ਕਾਲਜ, ਸ਼੍ਰੀ ਮੁਕਤਸਰ ਸਾਹਿਬ
ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਅੰਤਰ ਜ਼ੋਨਲ ਯੂਥ ਫੈਸਟੀਵਲ
2022-23

3rd Best Debate (favour) in North Zone Inter University Youth Festival 2022-23

G20 Presidency can make India Vishwa Guru ?

It is quite apparent that the world is doing some things wrong for the past few years. We can admit that it needs a teacher, a guru. And who can fill this position better than India? After all, we've been doing this for the past 5 millennia! – And we can do it a thousand times better at this crucial time when India holds the presidency of the G20!

To support my argument further, I'll be relying on using the 'good old' three elements of chronology that even my short-sighted opposition can't ignore today. They are, of course, the history (yesterday), the present (today), and the future (tomorrow).

If we walk back to the times of spears and swords we can see how Alexander the "Great" was drowned in his lust, greed, and gluttony to conquer the world; while on the other hand, we can see Ashoka, the GREAT, spreading the message of peace through his 'Dhamma'. And much like the imagination of today's opposition and the political career of our 'yuva neta' this film is also stuck at the same frame.

-Look at the Russo-Ukrainian war for example; a dictator, like Alexander, is bloodthirsty for conquest. The entire world is busy arming either side while India is busy sending them humanitarian aid while also promoting the message of peace through Diplomacy.

But now the question arises, if India has really been that great of a teacher for so long, then why is this a special time? After all, the opposition is entitled to say that this presidency is nothing but a rotational process. Everyone gets their chance at it in 2 decades.

Well, it is special because, for the first time, the whole class is focused on the teacher! For years, India kept teaching these lessons of peace and prosperity but no one was interested enough. Now with this presidency, we have their eyes and ears locked on us! India is more than ready to step into the classroom and build a better future by teaching them: how to digitally empower millions, how to make fast payments (UPI) a norm, and most importantly, how to avoid the calamity that climate change is! – And this is not restricted to the green policies of govt. but it is also enshrined in the values of our people. Look at Padma Shri Tulsi Gowda for example; she planted Thirty thousand saplings and looks after the nurseries of the local forest department at the ripe age of 78, 78! She is older than the independence of this Country yet younger than many of us.

I'll reiterate, that India is ready to enter the classroom and teach; not the chapters of power and politics but the lessons of Inclusion, growth, and sustainability when the whole class of G20, sits patiently on the premises of the world's largest democracy. India is seen as a bright spot on the global economic horizon. It can play a "lighthouse" role by regionalizing and globalizing its many achievements. From social justice reforms, digital transformation, and climate action, to pandemic and disaster relief. India can provide proven solutions and be a transformer of the Global South.

This G20 Presidency can & will transform India from a 'Guru' that it has been, to a Vishwaguru that it aspires to be. Because India is the only country that is able to teach the world to fight for the 'Peace of my planet' and not more Pieces of it!

Nilesh Seth

Panjab University Campus, Chandigarh

3rd Best Debate (against) in North Zone Inter University Youth Festival 2022-23

G20 Presidency can make India Vishwa Guru ?

"Well I found Chancellor Merkel's statement quite admirable when I met her at a G20 summit and with deep cynicism she described how for taking pictures no longer the Germans used the word cheese instead they would grit their teeth and say Greece", said Julia Guillard. Recently India has achieved its presidency for the current year 2023 and the leaders are viewing it as a great achievement, but isn't quite ironical, India itself lacks the knowledge of adequately distributing the funds, how will it lead such a great summit? Without working on the ground level the dream of flying in the sky cannot be achieved. But, first of all, a very warm greeting to each and everyone present here and to my worthy opponents thank you for patiently listening to this not so interesting short story and what to come ahead for I present my strong disapproval of today's motion that G20 presidency can make India the vishva guru.

To begin with, G20 is an international forum with an aim of addressing the issue of relating to financial stability. And India being a member is nothing less than a boon as it will open gates of learning and attaining current year's presidency will definitely help India to gain experience of how the current proceedings take place in financial market on an international level. But thinking that this whole scenario can make India the vishva guru, it is nothing but a delusion because everyone knows how badly India is suffering and is lacking behind in numerous spheres and a mere title won't be helpful to achieve it. Let me give you guys a bit of statistics to make the matter much more clear. India is increasingly bounded by the chains of poverty and approximately 100 millions of Indians fall below poverty line, 200 million Indians including the 100 above are malnourished and 20 million children sleep on the pathways every night without having a proper meal. This is what we Indians need? No, definitely not.

Not only poverty, but there are numerous other factors which are imposing great threat to India's development such as unemployment rate in India is quite high, its skyrocketing and why is it so? Due to the lack of capital, but the income earned from GST tax collection and other tax collection is quite high, so why are the investments not made accordingly? Why is every sector being privatized? Why still getting education at numerous places is not even an option? I'm not a great fan of China,

but still getting constitution and freedom before China, at that time our population was comparatively low, why were we still not getting the desired results? The answer is quite simple corruption. Nobody wants to be honest and responsible, everyone just wants to satisfy their greed, the leaders itself. What kind of leaders do we want? The responsible, educated and experienced, but what are we getting? The ones who how to instigate hatred on the name of the religion, the ones who have never ever in their lives step their foot inside a school and the ones on whom numerous charge sheets are filed but are never investigated. This is what we Indians need to become a vishva guru? Nobody knows the answer.

Well, definitely it is great achievement to become a vishva guru but we can't put our hopes just on a mere title, we need to work on our lacking, rather than advocating others. We as the citizens of India also need to be responsible for whom we are choosing our leader as. The title of vishva guru can only be achieved when people would be getting the sources to attain three meals per day, when the poverty would be curbed out and last but not the least when the future gemstones of the country would be well looked after than only in the true sense India would become a vishva guru.

Sejal Sakia

B. A. M. Khalsa College, Garhshankar

Best in Elocution 2022-23

Drug Addiction: A Perpetual Problem

2/3rd of individuals return to drug use within weeks of beginning addiction treatment, according to U.S. National Library of Medicine.

85 % of individuals relapse within a year of treatment, according to National Institute on Drug Abuse.

Drug addiction is a disease which affects the brain as well as the behavior of the individual and makes it impossible for the individual to come out of that addiction. The person gets so used to substance use that he becomes unable to control his urge for the drugs. In the case of Baljit Singh v State of Punjab (CRM-M No. 15305 of 2022), the Punjab and Haryana High Court has beautifully explained the concept of drug addiction. The court said that drug addiction is a problem that eats the vitals of the society. The drug addiction is like a monster, which if once takes into its tentacle any target, it becomes difficult for that creature to escape from its lethal limbs. The target becomes the food for the monster forever.

Drug addiction is not a problem that can come and go easily but perhaps it has a long lasting impact. When a person uses a drug for the first time, it may have a wide range of various short-term effects. The drug disrupts regular brain activities as soon as it enters the body. The brain can activate various hormones and neurons when certain drug types have similarities to natural neurotransmitters.

For instance, marijuana use enhances dopamine release, which can lead to a peaceful and at-ease feeling. The need to use marijuana again stems from the brain remembering this experience, which produces pleasure. Thus, the addiction starts and the problem becomes perpetual. The research by National Institute on Drug Abuse as well as U.S National Library of Medicine bear testimony to the fact that how once a person starts taking drugs, he becomes a puppet at the hands of drugs and can hardly reach status quo.

The fact that over-usage of drugs is bad is universally known but still people gets into its trap. The moment one opens newspaper, one sees how newspaper is replete with the news of young children consuming drugs. No sooner does one open the social media than he finds that how people feel proud in glamourizing 'hookah rings'.

The reason for the same is 'the cool' tag that is given by the society to the individuals who drink wine, enjoy the hookah rings and use all kinds of drugs. In most of the cases, the first intake is for experience but hardly does the individual know that he is treading a walk to hell from where there is no come-back.

Thank You!

Simarpreet Kaur

University Institute of Laws,

Panjab Univeristy Regional Centre, Ludhiana

PU Inter Zonal Youth & Heritage Festival

2022-23

Second Best in Elocution 2022-23

Drug Addiction: A Perpetual Problem

A recent tweet by Punjab police dated 08-11-2022 reads,

"Drug addiction reduces a man to a mindless and ridiculous thing, and creates social parasites and criminals"

The words 'social parasites and criminals' used in the tweet make me wonder that instead of focusing on emphatic treatment and rehabilitation, we are still stigmatizing and vilifying the drug addicts. The menace of drug addiction has shaken our socio- cultural ambience like never before. It is therefore not surprising that drug business at global level is estimated to be approximately 500 Billion Dollar. Nearly 3,000 kg of heroin had been seized from Gujarat's Mundra Port in September last year by the Directorate of Revenue Intelligence (DRI), which was estimated to be worth over Rs 21,000 crore in the international market.

Newspaper headlines containing tragic stories of untimely deaths and the unending cries of bereaved families are traumatizing the collective consciousness of the nation every day. Changing cultural values, economic stress and rapidly dwindling supportive bonds coupled with agrarian crisis, glorification of drugs in songs and social media has made the matter worse. Particularly in Punjab, the rampaging unemployment, easy availability of heroine and state's geographical location (Because of it being sandwiched between nacro-drug producing golden crescent and golden triangle) has made this state one of the worst sufferers of drug nuisance. In fact, Punjab of today is the biggest victim of Pakistan sponsored Narcotics Terrorism and a big market for drugs. Now the question arises- If Cross border narcotics terrorism is the root cause of Punjab's drug problem, why then has the drug menace reared its ugly head only in the last decade? It is of our own making. Our own government policy initiative to curb opium created a vacuum in the market which a deadlier and more costly heroin has filled. It goes without saying that Drug menace is indeed a perpetual problem. A recent study made by doctors in the Post-Grade Institute of Medical Education, Chandigarh, reveals that one in seven persons in Punjab have become drug addicts. The drugs trade in Punjab is estimated annually to the tune of Rs 7,500 crore. Staggering figures these are for a state like Punjab which had been hailed as the glorious land of five rivers since ages. Isn't it a matter of shame that village Maqboolpura in Amritsar bears the dark sobriquet 'village of widows and orphans' because many of the men are dead-from-drug overdose!

We need to take the bull by the horns. Remember, people are not incurably diseased. They are merely dependent on substances and addictive behavior which can be healed with medication, unconditional acceptance, compassion and empathy. The problem is of our own creation, thanks to weakening of governance and breakdown of social systems. Public representatives must take the lead, with unsparing and impartial police, caring parents and strict teachers, responsible community participation, and expeditious judiciary. All must work in tandem. The 'silent killer' must be crushed with an iron hand before it eats away the state's young generation. Remember, Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will.

Thank You!

Navreet Kaur

*D.A.V. College of Education, Abohar
PU Inter Zonal Youth & Heritage Festival
2022-23*

63rd Panjab University Inter-Zonal Youth & Heritage Festival 2022-23 Result

Swami Premanand Mahavidyalaya, Mukerian

10th NOVEMBER, 2022

Position	Item Name / College Name / Participants Name
	Folk Dance: Luddi (Boys) - Team
1st	P. G. Govt. College, Sector- 11, Chandigarh : Rupinder Pal Singh, Juzar Singh, Inderjeet Singh, Ashishpal Singh Chauhan, Bikramjeet Singh Baldwan, Divyanshu, Rohit Kumar, Sukhpreet Singh, Ravneet Singh, Mukhtiar Singh
2nd	Swami Premanand Mahavidyalaya, Mukerian : Harmanpreet Singh, Punit Dadwal, Mukhwinder Singh, Gurvinder Singh, Tej Pratap Singh, Jasvir Singh, Gurbinder Singh, Parveen Kumar, Naverjot Singh, Arshdeep Singh
3rd	Baba Kunden Singh College, Muhar : Sameer Moudgil, Puneet, Navpreet Singh, Harmeet Singh, Jaskaranpal Singh, Chetan Sharma, Amandeep Singh, Harshdeep Singh, Pankaj Sharma, Harsimran Singh
	Folk Dance: Luddi (Boys) - Individual
1st	P. G. Govt. College, Sector 11, Chandigarh : Rupinder Pal Singh
3rd	Baba Kunden Singh College, Muhar : Amandeep Singh
	Folk Dance: Malwai Gidha - Team
3rd	B. C. M. College of Education, Ludhiana : Shivam Bawa, Harpal Singh, Rahul Bhatia, Taran Singh, Anirudh Batra, Ranjot Singh, Rahul Bhatti, Ankush Kumar, Suraj Kumar, Yash Kirti
	Folk Dance: Jhumar - Team
1st	S. C. D. Government College, Ludhiana : Pritam Singh, Gurpartap Singh, Gurjeet Singh, Jashandeep Singh, Anmoldeep Singh, Gurmeet Singh, Rhythm Shukla, Balkaran Singh, Pardeep Singh, Ishpreet Singh
2nd	S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur : Prince Bobby, Hardeep Nath, Navdeep Nangal, Sagar Singh, Sumeet, Abhishek Suman, Rajveer Badhan, Gurpreet Singh, Rajat Khanna, Sharndeeep Singh, Robbin Singh
3rd	Guru Nanak Khalsa College, Abohar : Gurkirtan Singh, Harmeet Singh, Akashdeep Singh, Mehakpreet Singh, Jashandeep Singh, Arshdeep Singh, Raj Kumar, Rajneesh Sidhu, Sunny Kumar, Ankit Kumar
	Folk Dance: Jhumar - Individual
2nd	S. C. D. Government college, Ludhiana : Gurjeet Singh
	Folk Dance: Luddi (Girls) - Team
1st	Khalsa College For Women, Civil Lines, Ludhiana : Anmol Dununna, Sunidhi, Rahat Khanna, Nishu, Jasmin Kaur, Jyoti Bisht, Sanaha, Jasleen Kaur, Janvi Verma, Deepika Vaid
2nd	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Ruban Kaur Sidhu, Kumkum Kwatra, Jannat Bajwa, Aditi Joshi, Komalpreet Gill, Avleen Kaur, Alpit Virk, Sukhmahak Kaur, Ripanpreet Kaur, Pranamya Joshi, Simranjeet Kaur
3rd	A. S. College, Khanna : Simranjeet Kaur, Upasna Sharma, Riya, Jiya, Priya, Tarshpreet Kaur, Pavandeep Kaur, Tanishjot Kaur, Amanpreet Kaur, Poonam, Sneha
	Folk Dance: Luddi (Girls) - Individual
1st	Khalsa College for Women, Civil Lines, Ludhiana : Anmol Dununna

Position	Item Name / College Name / Participants Name
	Folk Dance: Sammi (Girls) - Team
1st	Dashmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Bhupinder Kaur, Harsimran Pal, Jashandeep Kaur, Jashanpreet Kaur, Kajalpreet Kaur, Rajkamal Kaur, Parul, Lakshdeep Kaur, Sukhdeep Kaur, Sumandeep Kaur, Sukhjeewan Kaur
2nd	Dev Samaj College of Education for Women, Ferozepur City : Prabhjot Kaur, Ramanpreet Kaur, Surinderpal Kaur, Kajal, Surinder Kaur, Saloni, Kirandeep Kaur, Taniya, Shweta, Simran
3rd	G. T. B. Khalsa College of Education, Dasuya : Surekha, Sonali, Simaranjit Kaur, Simranjit Kaur, Yogta Rani, Priyanka, Kiranpreet Kaur, Praveen Kaur, Reema, Priyanka Manhas, Jaspreet Kaur, Rupinder Kaur
	Folk Dance: Sammi (Girls) - Individual
2nd	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Sukhdeep Kaur
3rd	Dev Samaj College of Education for Women, Ferozepur City : Kajal
	Classical Dance
1st	Swami Premanand Mahavidyalaya, Mukerian : Gagandeep Kaur
2nd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 42, Chandigarh : Ananya
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Rubeena
3rd	Sri Aurobindo College of Commerce and Management, Ludhiana : Saachi Garg
3rd	P. G. Govt. College for Girls, Sector- 11, Chandigarh : Varsha Parle
	Group Dance (General) - Team
1st	P. G. Govt. College for Girls, Sector- 11, Chandigarh : Siwani, Shveta, Sangeeta, Komal, Himani, Aarti, Nitya Sharma, Hiteshna Samal, Drishti Azad, Saloni
2nd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Apurva Ahlawat, Sanjana, Prachi, Vaishali, Anjali Dhiman, Yuvika, Jaspreet Kaur, Jhalak
2nd	D. A. V. College, Sec. 10, Chandigarh : Aalisha Desta, Kanak Desta, Vidi Abrol, Himani Mittal, Siya Sharma, Aditi Mishra, Rashi, Naitika, Anushika Dutta, Sakshi Shandial
3rd	Dashmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Jaspreet Kaur, Simran Soni, Pooja, Sukhmanpreet Kaur, Gagandeep Kaur, Babbaldeep Kaur, Sandeep Kaur, Khushbu, Ruby, Simranjeet Kaur
3rd	Dashmesh Girls College, Mukerian : Pallavi Manhas, Simaranjeet Kaur, Poonam Manhas, Shaina, Prinka Thakur, Sunaina Devi, Akansha Chaddha, Rajinder Kaur, Diksha, Simranjit Kaur
	Group Dance (General) - Individual
1st	Dashmesh Girls College, Mukerian : Sunaina Devi
2nd	P. G. Govt. College for Girls, Sector- 11, Chandigarh : Drishti Azad
3rd	D. A. V. College, Sector 10, Chandigarh : Vidi Abrol
3rd	Dashmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Gagandeep Kaur
	Group Shabad - Team
1st	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Jaspreet Kaur, Sharanpreet Kaur, Radhika Malhotra, Amisha Kainth, Taranjeet Kaur Lamba, Jasleen Kaur, Manmeet Kaur
2nd	Dashmesh Girls College, Mukerian : Mandeep Kaur, Sakshi Sahote, Simran Thakur, Bharti, Deepika, Nandita, Vimaljeet Kaur
3rd	B. A. M. Khalsa College, Garhshankar : Arshdeep Kaur, Himanshi Sharma, Payal, Kushal Kumar Rana, Amarjeet Singh, Parminder Singh, Ranjeet Kaur

Position	Item Name / College Name / Participants Name
	Group Shabad - Individual
1st	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Jaspreet Kaur
2nd	Arya College, Ludhiana : Peterson
3rd	Dashmesh Girls College, Mukerian : Simran Thakur
3rd	B. A. M. Khalsa College, Garhshankar : Kushal Kumar Rana
	Group Bhajan - Team
1st	B. S. K. College for Women, Kala Tibba, Abohar : Simran Banga, Mehak Preet Kaur, Harpreet Kaur, Payal, Given Preet Kaur, Simran Kaur, Sukhjeet Kaur
2nd	Swami Premanand Mahavidyalaya, Mukerian : Priyanka Pathania, Chandanpreet Kaur, Nandita Pathania, Disha Sharma, Sanjana, Vikrant Kumar, Gurkirat Singh
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Ishika, Apneet Kaur, Surbhi, Pooja Rani, Nivedita Salwahan, Manveer Kaur, Hiya Khosla
3rd	G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh : Pragati Nagpal, Palvi Sharma, Tania Barodia, Koyena Das, Sakshi Devi, Kriti Jain, Anushka Bajaj
	Group Bhajan - Individual
1st	P. G. Govt. College for Girls, Sector- 11, Chandigarh : Chayanika Garg
2nd	B. S. K. College for Women, Kala Tibba, Abohar : Simran Banga
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Hiya Khosla
3rd	Govt. College of Education, Sec. 20, Chandigarh : Diksha Parmar
	Classical Music (Vocal)
1st	Master Tara Singh Memorial College for Women, Ludhiana : Jasleen Kaur
2nd	B. C. M. College of Education, Ludhiana : Taran Singh
3rd	G. N. College, Sri Muktsar Sahib : Sukhdeep Kaur
3rd	P. G. Govt College, Sector- 46, Chandigarh : Shilpi Roy
	Quiz
1st	Sri Aurobindo College of Commerce And Management, Ludhiana : Kashish Arora, Eklavya A Grover, Dheeraj Sharma
2nd	P. G. Govt. College, Sector- 11, Chandigarh : Sushree Snigdha Patra, Abhinav Bajaj, Anuradha Singh
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Guneet Kaur, Harveer Kaur Sandhu, Deepika Goyal
	Heritage Quiz
1st	D. A. V. College of Education, Abohar : Sandeep Kaur, Pawanmeet Singh, Manpreet Singh
2nd	Mai Bhago College (Co-Education), Ramgarh, Ludhiana : Bhawana Sharma, Sukhmanjot Kaur, Sukhpreet Kaur
3rd	Dashmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Tajpreet Kaur, Rajpreet Kaur, Harpreet Kaur
	Embroidery: Phulkari
1st	Khalsa College of Education , Sri Muktsar Sahib : Ginamdeep Kaur
2nd	Guru Nanak Girls College, Model Town, Ludhiana : Balpreet Kaur
3rd	Dev Samaj College for Women, Ferozepur City : Rajwinder Kaur
3rd	Shree Atam Vallabh Jain College, Ludhiana : Mamta

Position	Item Name / College Name / Participants Name
	Embroidery: Bagh
1st	Rayat Bahra College of Education, Bohan, Hoshiarpur : Ramandeep Kaur
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Lovepreet Kaur
3rd	Govt. Home Science College, Sec. 10, Chandigarh : Tanisha
	Embroidery: Dasuti/Cross Stitch
1st	P. G. Govt. College for Girls, Sector- 11, Chandigarh : Khushbu
2nd	Dev Samaj College of Education, Sector 45, Chandigarh : Jasleen Kaur
3rd	Arya College, Ludhiana : Diksha
	Knitting
1st	Devki Devi Jain Memorial College for Women, Ludhiana : Kashifa Gulnar
2nd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 42, Chandigarh : Rupa
3rd	Sri Guru Gobind Singh College, Sector- 26, Chandigarh : Kajal Rani
	Crochet Work
1st	Master Tara Singh Memorial College For Women, Ludhiana : Kalayani Verma
2nd	Dashmesh Girls College, Mukerian : Diksha Sharma
2nd	A. S. College, Khanna : Sukhdeep Kaur
3rd	Dev Samaj College of Education for Women, Firozpur City : Manjot Kaur
3rd	S. G. G. S. College of Education, Beghpur, Kamlooh : Nitika Sharma
	Pakhi Designing
1st	Arya College, Ludhiana : Priyanka Rajput
2nd	Dev Samaj College for Women, Ferozepur City : Kawaljeet Kaur
3rd	D. A. V. College of Education, Abohar : Simran Kaur
3rd	Swami Premanand Mahavidyalaya, Mukerian : Neha Rani
	Mehandi Designing & Application
1st	S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur : Manisha Rani
2nd	A. S. College, Khanna : Bhawana Kumari
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Neelam
3rd	Malwa Central College of Education for Women, Civil Lines, Ludhiana : Deeksha
	Creative Writing (Essay)
1st	Panjab University Campus, Sector-14, Chandigarh : Ritagya Sharda
2nd	Dev Samaj College for Women, Sec. 45, Chandigarh : Naina Nath
2nd	PU S. S. G. Regional Centre, Bajwara, Hoshiarpur : K. Venkata Surendera
3rd	D. A. V. College, Sector- 10, Chandigarh : Aashima Gupta
3rd	Dev Samaj College of Education, Firozpur : Mehal Monga
	Creative Writing (Story)
1st	A. S. College, Khanna : Surbhi
2nd	Sri Guru Gobind Singh College, Sector- 26, Chandigarh : Himanshu
2nd	G. T. B. khalsa College For Women, Dasuya : Armanpreet Kaur

Position	Item Name / College Name / Participants Name
3rd	S. D. College, Hoshiarpur : Agrima
3rd	S. C. D. Government College, Ludhiana : Joginder
	Creative Writing (Poem)
1st	D. A. V. College, Sector- 10, Chandigarh : Sukhman Singh Tusri
2nd	Dev Samaj College of Education, Firozpur : Neha Sharman
2nd	Partap College of Education, Hambran Road, Ludhiana : Samridhi
3rd	Dashmesh Girls College, Badal : Gurjot
3rd	G. T. B. khalsa College for Women, Dasuya : Anamika
	Handwriting Competition (Hindi)
1st	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Prabhpreet Kaur
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Simran
2nd	S. G. G. S. College of Education, Beghpur, Kamlooh : Umesha Kalia
3rd	Malwa Central College of Education for Women, Civil Lines, Ludhiana : Dilpreet Kaur
3rd	D. A. V. College, Sector- 10, Chandigarh : Manisha Sharma
	Handwriting Competition (Punjabi)
1st	Dashmesh Khalsa College, Sri Muktsar Sahib : Geeta Rani
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Babita
2nd	S. C. D. College, Ludhiana : Jashanpreet Kaur
3rd	Govt. College, Hoshiarpur : Jaskirat Kaur
3rd	Khalsa College of Education, Sri Muktsar Sahib : Mehak Rani
	Handwriting Competition (English)
1st	Arya College, Ludhiana : Swati Kumari
2nd	Dev Samaj College of Education, Firozpur : Shruti Sharma
2nd	Dashmesh Girls College, Mukarian : Rajvir Kaur
3rd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Muskan
3rd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Kashish Kapoor
11th NOVEMBER, 2022	
	One Act Play - Team
1st	P. G. Govt. College, Sector- 11, Chandigarh : Chirag Jindal, Utsav Katoch, Priti Kumari, Muskan Dhiman, Sanjana Upreti, Shubham Paswan, Jaspreet Kaur, Rajkaran Singh, Pawan Sharma
2nd	Guru Gobind Singh College for Women, Sec. 26, Chandigarh : Priya, Khushi Sharma, Mehak Jamwal, Muskan Rana, Rhea Sharma, Riya, Sakshi, Aayushi, Anjali Kumari
3rd	Dashmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Ravneet Kaur, Ramanpreet Kaur, Jasmeen, Dakshu, Cheshtha Sharma, Jaspinder Kaur, Navjot Kaur, Manisha Kumari, Sarabjeet Kaur
3rd	Dev Samaj College for Women, Ferozepur City : Bipenjeet Kaur, Jaspreet Kaur, Riyam, Mehakpreet Kaur, Poornima, Jaspreet Kaur, Jashanpreet Kaur, Amanpreet Kaur, Simran
	One Act Play - Individual
1st	P. G. Govt. College, Sector- 11, Chandigarh : Subham Paswan
2nd	Guru Gobind Singh College for Women, Sec. 26, Chandigarh : Riya

Position	Item Name / College Name / Participants Name
3rd	S. G. G. S. Khalsa College Mahilpur : Iqbal Singh
	Histrionics
1st	Khalsa College For Women, Civil Lines, Ludhiana : Mehakpreet Kaur
2nd	P. G. Govt. College, Sector- 11, Chandigarh : Pawan Sharma
3rd	Dev Samaj College for Women, Ferozepur City : Mehakpreet Kaur
	Group Singing (Indian) - Team
1st	G. H. G. Khalsa College, Gurusar Sadhar : Tanvir Kaur, Navjot Kaur, Japneet Kaur, Ajit Singh, Taranjeet Kaur
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Jaspreet Kaur, Sharanpreet Kaur, Radhika Malhotra, Preeti Sidhu, Taranjeet Kaur Lamba, Jasleen Kaur
3rd	D. A. V. College, Abohar : Nitish Kumar, Subham Soni, Chetna, Jasneet Kaur, Suneha Rani, Lovejot Kaur
	Group Singing (Indian) - Individual
1st	G. H. G. Khalsa College Gurusar Sadhar: Ajit Singh
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Jaspreet Kaur
3rd	D. A. V. College, Abohar : Subham Soni
	Light Music Vocal (Gazal)
1st	S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur : Neeraj Sanyal
2nd	D. A. V. College, Sector- 10, Chandigarh : Swar Sharma
3rd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 42, Chandigarh : Sargam Sharma
3rd	Malwa Central College of Education for Women, Civil Lines, Ludhiana : Rupal Kaur
	Light Music Vocal (Geet)
1st	Guru Nanak College, Sri Mukatsar Sahib : Sony Singh
2nd	S. M. S. Karamjot College for Women Miani, Hoshiarpur : Preet Kaur
3rd	R. S. D. College, Ferozepur City : Karan
3rd	Devki Devi Jain Memorial College for Women, Ludhiana : Shabnam
	Folk Song
1st	G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh : Paras Kamboj
2nd	G. H. G. Khalsa College, Gurusar Sadhar : Taranjeet Kaur
3rd	S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur : Robbin Singh
3rd	Guru Nanak College, Sri Muktsar Sahib : Sukhdeep Kaur
	Poem Recitation
1st	Panjab University Campus, Sector-14, Chandigarh : Anjali Banga
2nd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh : Noor
3rd	B. S. S. G. Govt. College, Sidhsar, Ludhiana : Raavi Gulzar
3rd	Baba Kundan Singh College, Muhar : Jashandeep Singh Sindhu
	Muhavredar-Vartalaap - Team
1st	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Prety Arora, Kritika
2nd	Dev Samaj College for Women, Ferozepur City : Manisha Rani, Amanpreet Kaur, Gurnoor Kaur

Position	Item Name / College Name / Participants Name
3rd	Arya College, Ludhiana : Bhumi, Pankhuri Sharma, Simranpreet Kaur
3rd	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Jasleen Kaur, Navjot Kaur, Husanpreet Kaur
	Debate
1st	Panjab University Campus, Sector-14, Chandigarh : Nilesh Seth
2nd	B. A. M. Khalsa College, Garhshankar : Sejal Sakia
3rd	Guru Nanak National College, Doraha : Anudeep Kaur
3rd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh : Ravneet Kaur
	Elocution
1st	UIL, P. U. R. C., Ludhiana : Simarpreet Kaur
2nd	D. A. V. College of Education, Abohar : Navreet Kaur
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Damanpreet Kaur Khanuja
	Collage Making
1st	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Asmita Chhibar
2nd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh : Simran Kumari
3rd	D. A. V. College, Abohar : Pooja Rani
3rd	Govt. College of Art, Sector- 10, Chandigarh : Yukti
	Rangoli
1st	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Neelam Kumari
2nd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 42, Chandigarh : Visaka
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Rinki Verma
3rd	Shree Atam Vallabh Jain College, Ludhiana : Gautam Jain
	On the Spot Painting
1st	Govt. College of Art, Sector 10, Chandigarh : Ankur
2nd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Neha
3rd	D. A. V. College, Sector- 10, Chandigarh : Achom Lamangaaba
3rd	Govt. College, Hoshiarpur : Radhika
	Photography
1st	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Sehaj Kaur Tiwana
2nd	Govt. College of Art, Sector- 10, Chandigarh : Baljeet Singh
3rd	Dev Samaj College for Women, Ferozepur City : Harshita
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Jasmeet Kaur
	Clay Modelling
1st	P. U. R. C. C., Karyal, Dharamkot, Moga : Gurpreet Singh
2nd	D. A. V. College, Sector- 10, Chandigarh : Manjot Tanwar
3rd	Dev Samaj College of Education, Ferozpur : Sheenam Bala
	Cartooning
1st	Govt. College of Art, Sector- 10, Chandigarh : Harmanjot Singh Gill
2nd	Govt. College of Art, Sector- 10, Chandigarh : Akhil Chouhan

Position	Item Name / College Name / Participants Name
3rd	Khalsa College for Women, Civil Lines, Ludhiana : Bhumika Arora
3rd	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Guntaj
	Poster Making
1st	Govt. College of Art, Sector-10, Chandigarh : Abhishek Chandoria
2nd	Guru Nanak Girls College, Ludhiana : Priyanka
3rd	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Anubha Sharma
3rd	G. K. S. M. Govt. College, Tanda Urmur : Jasmeet Kaur
	Installation (Team)
1st	D. A. V. College, Hoshiarpur : Mudita, Parveesh Singh, Samiksha Thakur, Arshdeep
2nd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh : Manpreet Kaur, Aradhya Gurung, Saumya Singh, Muskan Loura
3rd	G. K. S. M. Govt. College, Tanda Urmur : Paramjit Singh, Gourav, Manraj Singh, Jonsar
	Still Life Drawing
1st	Govt. College of Art, Sector 10, Chandigarh : Gurpreet Singh
2nd	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Manisha
3rd	Khalsa College for Women, Civil Lines, Ludhiana : Manminder Kaur
3rd	Govt. College, Hoshiarpur : Radhika
12th NOVEMBER, 2022	
	Skit - Team
1st	G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh : Ashutosh Singh Dadwal, Diya Pandhu, Harshita Verma, Prince Saini, Pashmin, Sidak Singh Bhatia
2nd	B. A. M. Khalsa College, Garhshankar : Prabhjot Singh, Amandip, Sumiti, Navroop, Parteek, Abhishek Dhiman
3rd	Khalsa College for Women, Civil Lines, Ludhiana : Sandhya, Ishita Bagga, Tanya, Harmanpreet Kaur, Khushi, Ridhima Jain
3rd	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Ravneet Kaur, Ramanpreet Kaur, Dakshu, Jaspinder Kaur, Navjot Kaur, Pooja Rani
	Skit - Individual
1st	G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh : Diya Pandu
2nd	Khalsa College for Women, Civil Lines, Ludhiana : Ridhima Jain
3rd	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Ravneet Kaur
3rd	B. A. M. Khalsa College, Garhshankar : Amandip
	Mimicry
1st	Arya College, Ludhiana : Muskan Karwal
2nd	Govt. College of Commerce & Business Administration, Sector- 50, Chandigarh : Harshit Singh
3rd	Dasmesh Girls College, Mukerian : Mahima Thakur
	Mime - Team
1st	Govt. College, Hoshiarpur : Khushboo, Ashiq Kumar Jha, Harkanwal Singh, Kumkum Kumari, Rajinder Kaur, Aarti, Stuthy

Position	Item Name / College Name / Participants Name
2nd	G. T. B. National College, Dakha : Anjali, Harpreet Kaur, Parwinder Kaur, Parveen Kaur, Suman Kumari, Sukhpreet Kaur
3rd	D. A. V. College, Hoshiarpur : Yuvraj, Saurabh Joshi, Ritik Kumar, Tarun Suri, Aridhi Sharma, Aarti Kumari
3rd	Shree Atam Vallabh Jain College, Ludhiana : Gourav Sharma, Ketan Sharma, Yogesh, Gaurav Taneja, Arshraj Sharma, Maitree Jain
	Mime - Individual
1st	Govt. College, Hoshiarpur : Kumkum Kumari
2nd	S. D. P. College for Women Ludhiana : Samridhi
3rd	G. T. B. National College, Dakha : Suman Kumari
	Bhand - Team
1st	S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur : Sahil Sharma, Iqbal Singh
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Kajal, Komalpreet Kaur
3rd	Guru Nanak College, Moga : Sukhbir Singh, Akashdeep Singh
3rd	Dashmesh Girls College, Mukerian : Garima Manhas, Swaranjeet Kaur
	Bhand - Individual
1st	S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur : Iqbal Singh
2nd	Dashmesh Girls College, Mukerian : Garima Minhas
3rd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Komalpreet Kaur
	Bhangra - Team
1st	S. C. D. Govt. College, Ludhiana : Gurmeet Singh, Gurpartap Singh, Anmoldeep Singh, Ishpreet Singh, Jashandeep Singh, Balkaran Singh, Gurjeet Singh, Pritam Singh, Pardeep Singh
2nd	G. H. G. Khalsa College, Gurusar Sadhar : Parminder Singh, Maninder Singh, Manjot Singh, Jasdeep Singh, Navdeep Singh, Sukhmeet Singh, Inderpreet Singh, Tanbir Singh
3rd	D. A. V. College, Hoshiarpur : Manroop Singh, Harshpreet Singh Goraya, Gursimran, Sukhish Ahuja, Jashanpreet Singh, Harmandeep Singh, Daljit Singh, Taranvir Dhanjal
	Bhangra - Individual
1st	S. C. D. Govt. College, ludhiana : Preetam Singh
2nd	S. C. D. Govt. College, ludhiana : Gurjeet Singh
3rd	D. A. V. College, Hoshiarpur : Jashanpreet Singh
	Ladies Traditional & Ritualistic Songs of Punjab - Team
1st	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 42, Chandigarh : Jashanpreet Kaur, Navjot Kaur, Mahee Kaushik, Radhika Karyal, Simran Kumari, Ramanpreet Kaur
2nd	Dev Samaj College for Women, Ferozepur City : Karamjeet Kaur, Parwinder Kaur, Ramnik Kaur, Imanat Kaur, Navneet Kaur, Pooja Rani
2nd	Panjab University Campus, Sector-14, Chandigarh : Simranpreet Kaur, Gurleen Kaur, Simran Sindhu, Harmanjot Kaur Baweja, Divya Dhawan, Kiranjeet Kaur
3rd	Dev Samaj College of Education, Sec. 36 B Chandigarh : Manjinder Kaur, Prerna, Neha, Parul Rehal, Amanpreet Kaur, Versha Kumari
3rd	Baba Kundan Singh College, Muhar : Kamalpreet Kaur, Gurwinder Kaur, Jyoti, Harmanpreet Kaur, Jasbir Kaur, Veerpal Kaur

Position	Item Name / College Name / Participants Name
	Ladies Traditional & Ritualistic Songs of Punjab - Individual
1st	P. G. Govt. College for Girls, sec. 42, Chandigarh : Jashanpreet Kaur
2nd	Dev Samaj College for Women, Ferozepur City : Karamjeet Kaur
3rd	Baba Kundan Singh College, Muhar : Harmanpreet Kaur
	Kavishari - Team
1st	Baba Kundan Singh College, Muhar : Sukhwinder Singh, Mehtab Singh, Rachhpal Singh
2nd	A. S. College, Khanna : Pushpinder Kumar, Jaspaldas, Gurpreet Singh
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Jaspreet Kaur, Manveer Kaur, Satwinder Kaur
3rd	S. M. S. Karamjot College for Women, Miani, Hoshiarpur : Preet Kaur, Simranpreet Kaur
	Kavishari - Individual
1st	Baba Kundan Singh College, Muhar : Sukhwinder Singh
2nd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Manvir Kaur
3rd	A. S. College, Khanna : Jaspal Das
	Vaar Singing - Team
1st	Baba Kundan Singh College, Muhar : Sukhwinder Singh, Mehtab Singh, Rashpal Singh
2nd	D. A. V. College, Sector- 10, Chandigarh : Money, Ramandeep Singh, Taran Singh
3rd	Devki Devi Jain Memorial College for Women, Ludhiana : Anuradha, Vishaljit Kaur, Diya
	Vaar Singing - Individual
1st	Devki Devi Jain Memorial College for Women, Ludhiana : Vishaljit Kaur
2nd	Baba Kundan Singh College, Muhar : Sukhwinder Singh
3rd	Govt. College, Hoshiarpur : Baldeep Kaur
	Kali Singing - Team
1st	A. S. College, Khanna : Sahil Khan, Jaspal Das, Gurpreet Singh
2nd	Guru Nanak College, Narangwal : Harpreet Kaur, Loveleen Kaur, Jasmeen
3rd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Jasleen Kaur, Manpreet Kaur, Sonia
3rd	Dev Samaj College for Women, Sec. 45B, Chandigarh : Jasmeen Kaur, Komalpreet Kaur, Anmolpreet Kaur
	Kali Singing - Individual
1st	Guru Nanak College, Narangwal : Loveleen Kaur
2nd	A. S. College, Khanna : Jaspal Das
3rd	Dev Samaj College Women, Ferozepur City : Tanveer Kaur
	Instrumental Music (Indian): Percussion
1st	Khalsa College, Garhdiwala : Juhar Singh
2nd	Lala Lajpat Rai Memorial College of Education, Dhudike, Moga : Basant Singh
3rd	P. G. Govt College, Sector- 46, Chandigarh : Tushaar
3rd	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Elizabeth Alfred
	Folk Instrument (Solo)
1st	Baba Kundan Singh College, Muhar : Varinder Singh

Position	Item Name / College Name / Participants Name
2nd	D. A. V. College, Giddarbaha : Karamjeet Singh
3rd	Guru Nanak College of Education, Dalewal : Harpreet Singh
3rd	Master Tara Singh Memorial College for Women, Ludhiana : Kiritika
	Instrumental Music (Indian): Non-Percussion
1st	Panjab University Campus, Sector-14, Chandigarh : Gurdeep Singh
2nd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh : Ratna Malviya
3rd	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Swarita Issar
	Guddian Patole Making
1st	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Roshni
2nd	Shree Atam Vallabh Jain College, Ludhiana : Reema Kumari
3rd	Dashmesh Girls College of Education, Badal, Sri Muktsar Sahib : Sukhjeet Kaur
3rd	G. T. B. Khalsa Collge of Education, Dasuya : Parminder Kaur
	Paranda Making
1st	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Seema Rani
2nd	D. A. V. College of Education, Hoshiarpur : Jasdeep
3rd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Kumalpreet Kaur
3rd	G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh : Kanishka Verma
	Chhikku Making
1st	Dashmesh Girls College, Mukerian : Suhani Jaryal
2nd	D. A. V. College of Education, Hoshiarpur : Kirandeep
3rd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Vishali Sonkar
3rd	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Harpreet Kaur
	Naala Making
1st	G. T. B. Khalsa College for Women, Dasuya : Tanveer Kaur
2nd	Master Tara Singh Memorial College for Women, Ludhiana : Simran Kaur
3rd	S. B. B. S. Memorial Girls College, Sukhanand, Moga : Bhalwinder Kaur
3rd	G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh : Simran Kaur
	Tokri Making
1st	Govt. College, Sri Muktsar Sahib : Sikander Singh
2nd	D. A. V. College, Hoshiarpur : Manpreet Singh
3rd	Khalsa College for Women, Civil Lines, Ludhiana : Deepika
	Khiddo Making
1st	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Gurvinder Kaur
2nd	Shree Atam Vallabh Jain College, Ludhiana : Shubhra Sharma
3rd	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh : Simran
3rd	B. C. M. College of Education, Ludhiana : Ankita Arora
	Peerhi Making
1st	Sri Guru Gobind Singh College, Sector- 26, Chandigarh : Gurleen Kaur

Position	Item Name / College Name / Participants Name
2nd	Mata Ganga Khalsa College, Kottan, Ludhiana : Taranveer Kaur
3rd	D. A. V. College of Education , Fazilka : Sukhpreet Singh
3rd	Master Tara Singh Memorial College for Women, Ludhiana : Sukhwinder Kaur
	Rassa Vattna
1st	Shree Atam Vallabh Jain College, Ludhiana : Jatin Sharma
2nd	Govt. College, Sri Muktsar Sahib : Jasvir Singh
3rd	D. M. College, Moga : Sukhjinder Singh
3rd	G. H. G. Khalsa College of Education, Gurusar Sudhar, Ludhiana : Parminder Singh
	Eennu Making
1st	A. S. College, Khanna : Ramanjot Kaur
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Kumalpreet Kaur
3rd	S. B. B. S. Memorial Girls College, Sukhanand, Moga : Parneet Kaur
3rd	S. H. S. M. College for Women, Chella, Makhsuspur, Hoshiarpur : Jasmin Kaur
	Mitti de Khidaune
1st	D. M. College, Moga : Sarvdeep Singh
2nd	Govt. College of Art, Sector- 10, Chandigarh : Harshdeep Singh
3rd	Guru Nanak Girls College, Model Town, Ludhiana : Shahin
3rd	D. A. V. College of Education, Hoshiarpur : Manpreet Kaur
13th NOVEMBER, 2022	
	Indian Orchestra - Team
1st	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Baljeet Kaur, Prabhjeet Kaur, Abhinubhjeet Kaur, Sushmeet Kaur Saluja, Priya, Komal Devi, Yashumati Suman, Harpreet Rani
2nd	Dasmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib : Prabhjot Kaur, Parmeet Kaur, Prabhsimranjeet Kaur, Lovedeep, Harman Kaur, Iqbal Kaur, Sapna, Swarita Issar
3rd	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Mannat Sirkeck, Manmeet Joshi, Elizabeth Alfred, Ishmeet Kaur, Kunjalika Tikku, Amrteshwar Kaur, Kamakshi, Ishika Dhiman
3rd	P. G. Govt. College, Sector- 46, Chandigarh : Tushaar, Nisha, Dev Vrat Singla, Rachit, Anuj Kumar Rawat, Anshwinder Singh, Navtresh Kumar, Brahmansh Bhasin
	Indian Orchestra - Individual
1st	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Prabhjeet Kaur
2nd	M. C. M. D. A. V. College for Women, Sec. 36, Chandigarh : Kunjalika Tikku
3rd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Yashumati Suman
3rd	Khalsa College, Garhdiwala : Jujhar Singh
	Folk Orchestra - Team
1st	G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh : Jiya Sharma, Paras Kamboj, Khushpreet Kaur, Mehakpreet Kaur, Rajan Kumar, Anmolpreet Singh, Malika Mehta, Karanpal Singh, Darshan Singh Suri, Karandeep Singh, Anureet Pal Kaur, Ritish Kalia
2nd	Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana : Baljeet Kaur, Sony, Abhinubhjeet Kaur, Sushmeet Kaur Saluja, Harshleen Kaur, Priya, Komal Devi, Harpreet Rani, Harsimarn Kaur, Yashumati Suman, Manpreet Kaur, Sonia

Position	Item Name / College Name / Participants Name
3rd	Baba Kundan Singh College, Muhar : Arshdeep Singh, Lovepreet Singh, Jugraj Singh, Gurpreet Singh, Sarbjeet Singh, Rashpal Singh, Sangeet Kamal, Santosh Singh, Mehtab Singh Folk Orchestra - Individual
1st	A. S. College, Khanna : Maninder Singh
2nd	Guru Nanak Khalsa College, Abohar : Honey
3rd	G. G. D. S. D. College, Sector- 32, Chandigarh : Anureet Pal Kaur Gidha - Team
1st	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh : Jaismeen Kaur, Simrandeep Kaur, Gagandeep Kaur, Mitansha Lohran, Manjot Kaur, Kanchan, Jasleen Kaur, Parneet Kaur, Tamanna Dadwal, Rubaldeep Kaur, Simranjeet Kaur
2nd	S. G. G. S. Khalsa College, Mahilpur : Manpreet Banga, Sarita, Amanjit Kaur, Tajinder Kaur, Ritika, Mandeep Kaur, Rajwinder Kaur, Diksha Kaushal, Simranjit Kaur, Payal, Manveer Kaur
3rd	Govt. College for Girls, Ludhiana : Rupinder Ruby, Isha Bajaj, Geetika, Prabhpreet Kaur Matharoo, Uma Sharma, Harshdeep Kaur, Jasraj Kaur, Riya Bajaj, Taniya, Yashleen Kaur, Kiranjot Kaur
3rd	D. A. V. College, Abohar : Jashanpreet Kaur, Jasmeen Kaur, Rimsha, Parminder Kaur, Bharti Sharma, Komalpreet Kaur, Jasmeen, Gagandeep Kaur, Rajdeep Kaur, Apinder Kaur, Gurleen Kaur Gidha - Individual
1st	P. G. Govt. College for Girls, Sec. 11, Chandigarh : Simranjeet Kaur
2nd	Swami Premanand Mahavidyalaya, Mukerian : Kajal Salaria
3rd	D. A. V. College, Abohar : Parminder Kaur

Overall Panjab University Vice Chancellor's Trophy 2022-2023

Won by

Ramgarhia Girls College, Miller Ganj, Ludhiana

1st Runners Up

Dashmesh Girls College, Badal, Sri Muktsar Sahib

2nd Runners Up

P. G. Govt. College for Girls, Sector- 11, Chandigarh

Annual Function 2022-23



Annual Function 2022-23



Annual Function 2022-23



Annual Function 2022-23



Annual Function 2022-23



Annual Function 2022-23



Annual Function 2022-23





Statement about ownership and other particulars about "Jawan Tarang"

Form IV (See Rule 8)

- | | | |
|----|--------------------------------|---|
| 1. | Place of publication | Panjab University, Chandigarh |
| 2. | Periodicity of its publication | Yearly |
| 3. | Printers Name | Sh. Jatinder Moudgil |
| | Nationality | Indian |
| | Address | Manager, Panjab University Press,
Chandigarh |
| 4. | Publishers Name | Dr. Rohit Kumar Sharma |
| | Nationality | Indian |
| | Address | Department of Youth Welfare,
Panjab University, Chandigarh |
| 5. | Editor | Dr. Rohit Kumar Sharma |
| | Nationality | Indian |
| | Address | Department of Youth Welfare,
Panjab University, Chandigarh |

I, Director Youth Welfare, Panjab University, Chandigarh hereby declare that particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
Signature of the Publisher

Printed and published by Director Youth Welfare on behalf of Department of Youth Welfare, Panjab University, Chandigarh and printed at Reliant Advertising, SCO 65, 1st Floor, Sector- 32C, Chandigarh and published at Chandigarh.

Dr. Rohit Kumar Sharma, Editor

This magazine is for internal circulation within the Panjab University jurisdiction.



Dr. Rohit Kumar Sharma, DYW, Panjab University receiving the Overall Championship Trophy from Hon'ble Chief Minister of Punjab S. Bhagwant Mann during the Punjab State Inter University Youth Festival 2022-23



Releasing the theme logo of Panjab University Youth & Heritage Festivals 2022-23



Staff of Youth Welfare Department, Panjab University with the Overall Championship Trophy 2022-23



Director and Assistant Director, Department of Youth Welfare, Panjab University holding the Overall Championship Trophy 2022-23



Dr. Tejinder Gill, Assistant Director Youth Welfare, Panjab University receiving the Overall Championship Trophy 2nd Runners Up during the 36th North Zone Inter University Youth Festival 2022-23



Contingent of Panjab University, Chandigarh during the National Inter University Youth Festival 2022-23 at Jain University, Bangalore

